

॥ शुभ सन्देश ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः

अवश्य पढ़ें !

सहायता दें !!

ज्ञान दान का बड़ा लाभ लें !!!

श्वेताम्बर जैन समाज में ज्ञान प्रचारक अनेक संस्थाएँ हैं परन्तु उन्हेंको दूसरे प्रेमों में ग्रन्थों की छपाई करवाने में अधिक खर्च आदि कारणों से ग्रन्थोंका मूल्य अधिक रहता है, आर्य समाजी और ईसाई लोग निजी प्रेमोंमें छपाई कराकर अल्प मूल्य में अपने २ धर्म ग्रन्थों का प्रचार करते हैं, इमी तरहसे श्वेताम्बर जैन समाजभी निजी प्रेममें ग्रंथ छाप कर अल्प मूल्यमें धार्मिक ग्रंथोंका प्रचार करसके इसलिये महोपाध्यायजी श्रीसुमतिसागरजी महाराजके उपदेशमे कोटा-छत्रडा आदि के संघने यहां 'जैन प्रेस' खोला है, ज्ञान प्रचारके साथ २ प्रेसकी बचत परोपकार में खर्च करनेका उद्देश रखवा गया है, अभी हिंदी भाषा में सूत्रों के प्रकाशन का कार्य शुरु है, श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय की विनती स्वीकार रुके जिन २ महानुभावों ने सूत्रों के अनुवाद करने का मन्जूर किया है उन्हीं के शुभनाम इस प्रकार है:—श्रीमान् जिन चारित्रि सूरिजी महाराज ठाणांग, श्रीमज्जिन हरिसागरसूरिजी महाराज उववाई, वीरपुत्र श्रीआनन्द सागरजी म० विपाक व अनुत्तरोववाई, श्रीकवीन्द्रसागरजी म० रायप्रसेनीय, पं० प्र० श्रीसूर्यमलजी म० निरियावली, श्रीमती विनय श्रीजी उपासकदशा, श्रीमती प्रमोदश्रीजी प्रश्रव्याकरण, श्रीमती उमंगश्रीजी कल्याणश्रीजी जीवाभिगम, श्रीमती वह्नुमश्रीजी समवायांग, श्रीमती बुद्धि श्रीजी ज्ञाताजी और श्रीयुत-ताराचंद जैन ने उत्तराध्ययनजी का अनुवाद करने का मन्जूर किया है तथा आचारांग, सूर्यगढांग,



उपदेशिका

प्रातः स्मरणाय पूज्य विद्वद्भार्या साध्वीरत्न
❀ श्री प्रेमश्रीजी ❀

जन्म

विक्रमी संवत् १९३८
आश्विन शुक्ल पूर्णिमा,

दीक्षा

विक्रम संवत् १९४५
मार्गशीर्ष कृष्ण १०

जम्बूद्वीपभाषि, नंदीजी और अनुयोगद्वार आदि के लिये पत्र व्यवहार हो रहा है। इसमें कल्पसूत्र, दशवैकालिक, पर्वकथा संग्रह, विपाक, अनुत्तरोत्तरवादि और अंतगडदशा छप चुके हैं और उबवाई, उपासकदशा ज्ञाताजी आदि छप रहे हैं तथा अन्य सूत्रों को छपाने का व ५०० जगह अमूल्य भेट देने का प्रबन्ध हो रहा है।

अंतगड
दशा सूत्र

॥ ३ ॥

इस उद्देश्यकी पूर्ति के लिये १५०००) का महायता फण्डकी योजना की है उसमें उपदेश देकर महायता दिलवाने वाली के शुभनाम ये हैं— श्रीमज्जिन हरिसागरसूरिजी महाराज तथा श्रीकरीन्द्रसागरजी म० के उपदेशमें महायताफण्डमें १५००), उबवाईमें १०००) और इन्हीं महाराजों के उपदेश से भागलपुर निवासी श्रीमान् बाबूजी रायकुमारसिंह जी की तरफ से २००), श्रीमती जतनश्रीजी के २००) तथा नाथनगर निवासी श्रीमान् बाबूजी प्रमोदश्रीजी के २००) अंतगड दशा में, श्रीमती ११००) तथा विपाकमें, श्रीमती साध्वीजी चन्दन श्रीजीके २०० से १००), श्रीमती प्रमोदश्रीजी के २०० से १००), श्रीमती विनयश्रीजी म० के उपदेश से १००), श्रीमती दयाश्रीजीके २०० से १००) सहायताफंडमें, २००) विपाक सूत्र में व ४००) अंतगड दशा में, श्रीमती प्रतापश्रीजी के २०० से १००), श्रीमती प्रेमश्रीजी के उपदेशसे १००) श्रीमती कनकश्रीजी के २०० से ६०), श्रीमती विनयश्रीजी के २०० से १००), श्रीमती गेमुश्रीजी के २०० से १००), श्रीमती गुणश्रीजी के २०० से १००), श्रीमान् दीवान बहादुर मेट ज्ञानश्रीजी बहमश्रीजीके २०० से १००) महायता फंड में, १००) महायता फंड में, श्रीमती रत्नश्रीजी के २०० से १००) और सुंबई, कलकत्ता, के २०० से २००) उपामरु दशा में, १००) महायता फंड की कौशिक से इन्दौर से १००) इस प्रकार भग गये हैं और सुंबई, कलकत्ता, केशरी सिंहजी १००) और श्रीधृत-जुगराजजी सांड की कौशिक से इन्दौर से १००) इस प्रकार भग गये हैं और सुंबई, कलकत्ता, बीकानेर आदिमें भरानेका प्रयत्न शुरू है इसमें से बहुत की रकम मेट जी के यहाँ आकर जमा हो चुकी है और बाकी आने वाली है

इसका विशेष विवरण दूसरे सूत्र में छापा जायेगा । इन अनुवादक महाशयों को और सहायदाता उपदेशक महाशयों को हम बारम्बार धन्यवाद देते हुए बड़ा उपकार मानते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी सूत्रों के अनुवाद में तथा सहायता फण्डमें यथोचित सहायता देकर ज्ञान दान के लाभ के भागी बनें और हमारे उत्साह को बढ़ाते रहें ।

मिति चैत्र शुदी १ सम्वत् १९९३ }
तारीख २४ मार्च सन् १९३६ }

निवेदक—धन्दनमल रीखबदास लूणिया सेक्रेटरी

श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय जैन प्रेस, कोटा

❁ जाहिर खबर ❁



हिन्दी कल्पसूत्र अल्प मूल्य २), दशैकालिक मूल भावार्थ सहित १), पर्व कथा संग्रह साधु श्रावक आराधना सहित १) विपाक सूत्र मूल्य २) स्थाई ग्राहकों को १॥) और सहायता दाताओं को भेट, अंतगदशा सूत्र मूल-अर्थ सहित भेट, अनुत्तरोववाह मूल-भावार्थ सहित भेट तथा उववाह, ज्ञाताजी, उत्तराध्ययन, उपासक दशा आदि छप रहे हैं ।

मिलने का ठिकाना:—श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय
जैन प्रेस, कोटा (राजपूताना)

॥ ॐ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः ॥

श्रीअंतगडदसा (अंतकृदशा) सूत्र हिंदी अर्थ सहित.

टीकाकार श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजने 'अंतकृदशा' का ऐसा अर्थ किया है कि 'अंत' यानी चार गतिरूप संसारमें जन्म-मरणादि परिश्रमण करने रूप भवका अंत जिन्होंने किया है वे अंतकृत कोते जाते हैं अर्थात् इस दीकाकार श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजने 'अंतकृदशा' का ऐसा अर्थ किया है कि 'अंत' यानी चार गतिरूप संसारमें जन्म-मरणादि परिश्रमण करने रूप भवका अंत जिन्होंने किया है वे अंतकृत कोते जाते हैं अर्थात् इस भवमें उत्कृष्ट शुद्ध तप-संयमका आराधन करके अंतसमयमें क्षपकश्रेणिमें चढकर शुद्ध ध्यानसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ये चार घनघाति कर्मों का क्षय करके केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्तकर उसी समय नामकर्म, गौत्रकर्म, वेदनीयकर्म और आयुर्कर्म ये चार शेष अघातिये कर्मोंका सर्वथा क्षय करके मुक्तिमें पहुंचे. इस प्रकार जिन्होंने संसारका अंत करादिया है वे अंतकृत कोते गये हैं। इस सूत्रमें आठ वर्ग (विभाग) हैं, प्रथम वर्गमें दश अध्ययन कहे हैं, इसमें भवका अंत करने वाले अंतकृत केवलियों के दश अध्ययन होनेसे इस सूत्रका नाम अंतकृतदशा (अंतगड दसा) कहा है।

॥ प्रथम वर्गका पहला अध्ययन ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं चंपानामं नगरी होत्था, पुन्नभदे चेइए, वन्नओ ।
अर्थ—उसकाल में (चौथे आरे में), उससमय में (इस सूत्रकी प्रथम व्याख्या करते समय में) कंपा नामकी नगरी थी, उसके बाहर ईशान कौण में पूर्णभद्र नामका चैत्य था, उसका वर्णन 'शाताधर्मकथा' अथवा 'उववाइ', सूत्रानुसार समझ लेना ।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मसे समोसरिए, परिसा निग्गया जाव पडिग्गया ।
अर्थ—उसकाल उससमयमें आर्यश्रीसुधर्मस्वामी पूर्णभद्र चैत्यमें समवसरं (आकर विराजे), उन्हींको बंदना करने

के लिये नगरीमें से पर्वदा निकली (लोंगोंका समुदाय निकला), यावत् धर्मदेशना सुनकर लोग पीछे अपने २ घर पहुंचे।
मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासति, एवं वयासी—
जइ णं भंते ! समणेणं आदिकरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासग्गसाणं अयमहे पन्नत्ते, अट्टमस्स णं भंते अंगस्स अंतग्गड्ढसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अहे पणत्ते ? ।

अर्थ-उसकाल उससमय में आर्यश्रीसुधर्मास्वामी के अंतोवासी (पासमें रहने वाले शिष्य) आर्यश्रीजम्बूस्वामी यावत् गुरुकी सेवा करते हुए इस प्रकार बोले हे भगवान् ! श्रमण भगवान् बर्माकी आवि (अपने २ शासन की प्रवृत्ति) करने वाले यावत् सिद्धिपद (मुक्ति) को पाये हुए, श्रीमहावीरस्वामीने 'उपासकदशा' नामक आठवें अंगका श्रमण भगवान् यावत् आपने बतलाया वैसा कहा है. तो अब हे भगवान् ! 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगका श्रमण भगवान् यावत् मुक्तिको सिद्धिपद को पाए हुए श्रीमहावीरस्वामीने कैसा अर्थ कहा है उसका वर्णन करिये.

मूल-एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ट वग्गा पट्टत्ता,
अर्थ-सुधर्मास्वामी अपने शिष्यको कहते हैं कि हे जम्बू ! इस प्रकार निम्नयसे श्रमण भगवान् यावत् मुक्तिको पाये हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगके आठ वर्ग कहे हैं.

मूल-जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पट्टत्ता ? !
अर्थ-हे भगवान् ! यदि श्रमण भगवान् यावत् मुक्तिमें विराजे हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगके आठ वर्ग कहे हैं तो हे भगवान् ! 'अन्तगडदसा' के पहले वर्गके श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि प्राप्त

श्रीमहावीरस्वामीने कितने अध्ययन कहे हैं ?

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

गोयम १ समुद्द २ सागर ३, गंभीरे ४ चेव होइ थिमिते ६ य ।

अयले ६ कंपिह्ले ७ खलु, अब्खोभ ८ पसेणती ९ विण्हू १० ॥ १ ॥

अर्थ—हे जम्बू ! इसप्रकार निश्चयसे श्रमण भगवान् यावत् सिद्धगति पाये हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगड-दसा' नामक आठवें अंगके प्रथम वर्ग में दश अध्ययन कहे हैं, वे ये हैं:—१ गौतम, २ समुद्र, ३ सागर, ४ गंभीर, ५ स्तिमित, ६ अचल, ७ कांपित्य, ८ अक्षोभ, ९ प्रसेन और १० विष्णु. इन दश कुमारों के नामसे दश अध्ययन कहे हैं ।

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—हे भगवन् ! श्रमण भगवन् यावत् अष्टकर्म रहित होकर सिद्ध हुए ऐसे श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगड

दसा' नामक आठवें अंगके पहले वर्ग में दश अल्पपन को है, तो अक्ष दे अगबन् । 'अंगगद्वयसा' के पहले अल्पपन का अर्थ सिद्धिगति को पाये हुए श्रीमद्वाहीरस्वामीने किस प्रकार का अर्थ कहा है, वह प्रकाशित करिये। अक्ष अगबान् यावत् सिद्धिगति को पाये हुए श्रीमद्वाहीरस्वामीने किस प्रकार का अर्थ कहा है, वह प्रकाशित करिये।

मूल- एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीणामं नगरी होत्या, दुवासजोयणायामा नवजोअणविरिथण्णा धणवइमतिनिम्माया चामीकरपागारा नाणामणिपंचवन्नकविसीसगमंडिया सुरम्मा अलका पुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिक्खा ।

अर्थ—इस प्रकार निम्न है जम्बू ! उसकाल उस समय दारिका नामकी नगरी थी, वह बारह योजन लम्बी, नव योजन चौड़ी थी, जिसको कुबेर देवने अपनी बुद्धि से (देवशक्ति से) बनाई थी, वह स्वर्ण का प्रकार (किला) वाली और विविध प्रकार के पाँच रंग के मणिमय कांगरों से सुशोभित, मनोहर, अलका नामकी (देवलोक में) कुबेर की नगरी केजैसी सुंदर थी, वहाँ के निवासी मनुष्य हर्ष वाले तथा कीड़ा करने वाले होने से वह नगरी भी हर्ष वाली और मनोहर रूपवाली थी, वहाँ के निवासी मनुष्य हर्ष वाले तथा कीड़ा करने वाले होने से वह नगरी भी हर्ष वाली रूपवाली थी। प्रत्यक्ष स्वर्ण समान, दशकों को प्रसन्नता कारक, देखने योग्य, अभिरूप अर्थात् मनोहर स्मणीकृत्यगती थी। और प्रतिरूप अर्थात् देखने वालों को उसकी मनोहरता देखते हुए परिश्रम मालूम न हो ऐसी स्मणीकृत्यगती थी।

मूल- तित्से णं वारवतीनयरीए वहिया उत्तरपुरिच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं रेवतते नामं पव्वते होत्या,

तत्थ णं रेवतेते पव्वते नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, वन्नओ, सुरप्पिए, नामं जक्खायतणे होत्था, पोराणे, से णं एगेणं वणसंडेणं परिक्खित्ते, असोगवर पायवे.

अर्थ—उस द्वारिका नगरी के बाहर उत्तर और पूर्व दिशा के बीच की दिशा में अर्थात् ईशान कोण में रैवतक (गिरनार) नामक पर्वत है उस पर्वत के ऊपर नन्दनवन नामक उद्यान था, उसका वर्णन कहना. उस उद्यान में सुरप्रिय नामक यक्षायतन (चैत्य) था, वह प्राचीन अर्थात् बहुत वर्षों का बना हुआ था, उसके चारों तरफ एक बनखंड था, उसके मध्यभाग में अशोक नामक श्रेष्ठ वृक्ष था।

तत्थ णं वारवतीनयरीए कण्हे णामं वासुदेवे राया परिवसति, महता रायवन्नओ ।

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में श्रीकृष्ण नामक वासुदेव राजा राज्य करतेथे। वे हिमवंत पर्वत के समान बड़े, मलयाचल, मंदराचल और महेन्द्र के जैसे सारभूत थे इत्यादि राजाका वर्णन 'ज्ञाता' सूत्रके प्रथम अध्ययन में मेघकुमार के राज्याभिषेकके अधिकार में बतलाये सुजय समझ लेना।

मूल - से णं तत्थ समुद्धविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, वल्लदेवपामोक्खाणं पचण्हं महावीराणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अध्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्धंतसाहस्सीणं, महसेणपामोक्खाणं

छप्पणणाए बलवगसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खवाणं पगवीसाते वीरसाहस्सीणं, उगंगसेणपामोक्खवाणं सोलसणहं
रायसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खवाणं सोलसणहं देविसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खवाणं अणेगाणं गगियासा-
हस्सीणं, अन्नोसिं च बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बारवतीए नयरीए अद्धभरहस्स य समत्थस्स आहवच्चं
जाव विहरति ।

अर्थ— कृष्ण वासुदेव उस द्वारिका नगरी में समुद्रविलयजी बगैरह दश दशार्द्ध ॐ, बालदेव बगैरह पांच महा-
युद्धवीर, प्रद्युम्न बगैरह साढ़े तीन जोड़ कुमार, सांच बगैरह साठ हजार दुर्वांत (जीति न जांय ऐसे उद्धत) कुमार,
महासेन बगैरह छप्पन्न हजार बलवान् पुरुष, वीरसेन बगैरह इक्कीस हजार वीर पुरुष, उग्रसेन बगैरह सोलह हजार
मुकुन्दबद्ध राजा, दक्षुमणि बगैरह सोलह हजार राणियें, अणंगसेना बगैरह कई हजार गणिकायें, तथा दूसरे भी बहुतसे
सामान्य राजा, युवराज, श्रेष्ठी, इन्ध, यावत् सार्थवाह बगैरह सम्पूर्ण द्वारिका नगरी के तथा अर्थ भरतक्षेत्र के
अधिपतिपना स्वामीपना पालन करते हुए रहते थे ।

* समुद्र विलय १, अक्षोम २, स्तिमित ३, मागर ४, हिमपाल ५, सबल ६, धरज ७, पूरण ८, अम्बिबन्ध ९, भीर बसुदेव १०, ये दश
दशार्द्ध बड़े शूरवीर पूजा के योग्य उत्तम पुरुष थे ।

मूल—तत्थ णं बारवतीए अंधगवणही णामं राया परिवसति, महता हिमवंत, वअन्नो.

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में अंधकवृष्णि नामक बड़े यादवराज निवास करते थे, वे हिमवंत पर्वत वगैरह के जैसे सारभूत थे, उनका वर्णन करना ।

मूल—तस्स णं अंधकवण्हिस्स रत्तो धारिणी नामं देवी होत्था, वन्नओ ।

अर्थ—अंधकवृष्णि राजा के धारिणी नामक राणी थी, उनका वर्णन कहना ।

मूल—तते णं सा धारिणी देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसगांसि सयाणिज्जंसि एवं जहा महब्बले ।
“सुमिणंइंसणकहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य । जोव्वणपाणिगहणं, कंता पासायभेगा य ॥१॥”
नवरं गोयमो नामेणं अट्टण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, अट्टओ दाओ ।

अर्थ—वह धारिणी राणी एक समय श्रेष्ठ, सुन्दर और कोमल शय्या पर सोइ हुई थी, जिस प्रकार ‘भगवती’ सूत्र में ‘महाबल’ कुमार का अधिकार कहा है, उसी प्रकार यहाँ पर भी मूल गाथा में कहे अनुसार जानना, अर्थात् स्वप्न-दर्शन-स्वप्न में सिंह का देखना, कथन-राजा से स्वप्न का फल पृष्ठना, पुत्र का जन्म होना, उसकी बाल्यावस्था,

इणमेव णिगंथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ।

अर्थ—उस के बाद वह गौतम कुमार भगवान् का आगमन सुनकर, जाता सूत्रानुसार मेघ कुमार की तरह बड़ी धूमधाम से वंदना करने के लिये भगवान् के पास आया, विधि पूर्वक वंदना नमस्कार करके धर्म देशना श्रमण कर प्रतिबोध पाया, इस में विशेष यह है कि उन्होंने ने भगवान् से कहा “हे देवानुप्रिय । मैं अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर फिर आप देवानुप्रिय के पास दीक्षा अंगीकार करूं” इत्यादि मेघकुमार की तरह यावत् उनसे दीक्षा ग्रहण की; हरियासमिति आदि अष्ट प्रवचन माता सहित यावत् इस निर्ग्रन्थ प्रवचन को आगे कर विचरण करने लगे ।

मूल—तते णं से गोयसे अणगारे अन्नदा कयाइ अरहतो अरिठ्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, अहिज्जिता बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति ।

अर्थ—उस के बाद गौतम अणगारने एक समय अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के तथाप्रकार के स्थविर मुनिओं के पास सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया, अभ्यास कर उपवास, बेल वगैरह बहुत तप करते हुए यावत् अपनी आत्मा को तप-संयम में भावन करते हुए रहने लगे ।

मूल— ते अरिहा अरिठ्ठनेमी अन्नदा कदाइ वारवतीतो नंदणवणातो पडिनिक्खमति वहिया जणवयवि-

हारं विहरति ।

अर्थ—उसके बाद वे अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् एक समय द्वारिका नगरी के नंदनवन नामक उद्यान से विहार कर बाहर के देशों में विचरने लगे ।

मूल—तते णं से गोयमे अणगारे अन्नदा कदाई जेणेव अरहा अरिष्टनेमी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अरहं अरिष्टनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करोति, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्ताए । एवं जहा खंदओ तथा वारस भिक्खुपडिमाओ फासेति, फासित्ता गुणरयणं पि तवोकम्मं तहेव फासेति निरवसेसं, जहा खंदतो तथा चिंतेति, तथा आपुच्छति, तथा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुंजे दुरुहति, मासियाए संलेहणाए वारस वरिसाइं परियाए जाव सिद्धे । (सू०१)

अर्थ—इसके बाद जहां पर अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् विराजे हुए थे वहां पर एक समय गौतम अणगार आये, आकर अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् की तीन बार प्रदक्षिणा करके बंदना की नमस्कार किया,

बंदना नमस्कार करके हाथ जोडकर इस प्रकार बोले हे भगवन् ! मैं इच्छा करता हूँ यदि आप आज्ञा प्रदान करें तो एक मास की (एक महीना वगैरह की बारह) भिक्षु प्रतिमाओं को अंगीकार करके मैं विचरूँ । तब भगवान् ने वैसा करने की आज्ञा दी । इस प्रकार स्कंदक मुनि की तरह गौतम अणगारने बारह भिक्षु प्रतिमाओं को वहन किया, वहन करके गुणरत्न संवत्सर नामक तप भी उसी प्रकार संपूर्ण आराधन किया । फिर एक समय स्कंदक मुनिकी तरह गौतम अनगारने अनशन करने का विचार किया, उसी प्रकार भगवान् से पूछकर आज्ञा लेकर और उसी प्रकार स्थविर मुनियों के साथ शंभुजंय गिरि ऊपर चढ़े, एक मास की संलेखना (अनशन) कर, बारह वर्ष की चारित्र पर्याय पालन कर, यावत् सिद्धि पद को पाये । यहाँ पर गौतम अणगार का सब अधिकार 'भगवती' सूत्र में बतलाये हुए स्कंदक मुनि के चरित्र की तरह जान लेना चाहिये । विशेष यह है यहाँ पर जो भिक्षु प्रतिमाएँ कही हैं उनका स्वरूप इस प्रकार है:—पहली प्रतिमा से एक मास तक एकान्तरे उपवास, दूसरी प्रतिमामें दो मास तक दो दो उपवास, तीसरी प्रतिमामें तीन मास तक तीन २ उपवास, चौथी प्रतिमामें चार मास तक चार २ उपवास, पांचवीं प्रतिमामें पांच मास तक पांच २ उपवास, छठी में छः मास तक छ २ उपवास, सातवीं में सात मास तक सात २ उपवास, आठवीं प्रतिमामें सात अहोरात्रि की, नववीं सात अहोरात्रि की, दशमीं सात अहोरात्रि की, ग्यारहवीं एक अहोरात्रि की और बारहवीं एकरात्रि की । इन प्रतिमाओं का विशेष स्वरूप "दशाश्रुत स्कंध" सूत्र में से जान लेना ।

अब गुणरत्न संबत्सर तपका स्वरूप कहते हैं:- इसमें पहिले महीने में हमेशा एकांतरे उपवास करना (यानी पंद्रह उपवास और पंद्रह पारणे), दिन में उल्कटुक (गाय दुहने जैसा) आसन कर सूर्य की तरफ झूह करके रहना और रात्रि में खुले शरीर बिरासन से रहना और दूसरे महीने में छट्ट २ तप करना, तीसरे महीने में अट्टम २ तप करना, इस प्रकार एक २ मास में एक २ उपवास बढ़ाते २ सोलहें मास में चौतीस भक्त यानी सोलह सोलह उपवास करने, दूसरी सब विधि प्रथम मास की तरह जानना ॥ सू० १ ।

मूल-एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अब्झयणस्स अयमट्ठे पत्तते ॥ १ ॥

अर्थ-इस प्रकार निश्चय करके हे जंबू ! भ्रमण भगवान् यावत् सिद्धि गति को पाये हुये श्री महावीर स्वामी ने अंतगडदसा नामक आठवें अंग के प्रथम वर्ग के प्रथम अब्ध्ययन का यह (ऊपर कहा हुआ) भाव प्रकाशित किया है ।

॥ इति प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

मूल-एवं जहा गोयमो तहा सेसा, वण्ह पिया धारिणी माता समुहे २ सागरे ३ गंभीरे ४ थिमिये ५ अयले ६ कं पिह्हे ७ अक्खोसे ८ पसेणती ९ विण्हुए १० एए एगमा । पढमो वग्गो दस अब्झयणा पत्तता (सू२)

अर्थ—इसी तरह जिस प्रकार गौतम अनगर का अध्ययन कहा, उसी प्रकार शेष बाकी के नव अध्ययन भी कहने। अंधकवृष्णि पिता, धारिणी माता, पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं:—दूसरा ससुद्र, तीसरा सागर, चौथा गम्भीर पाँचवाँ स्तिमित, छठा अचल, सातवाँ कपिल, आठवाँ अक्षोभ, नववाँ प्रसेन और दसवाँ विष्णु, इन कुमारों के नाम के अध्ययन सर्व एक ही गमा वाले (समान अधिकार वाले) हैं। इस प्रकार पहले वर्ग में दस अध्ययन कहे गये हैं।

॥ इति प्रथम वर्ग के दस अध्ययन समाप्त ॥

॥ अथ दूसरा वर्ग ॥



मूल—जइ णं भंते । दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ ।

अर्थ—श्रीजम्बू स्वामी श्रीसुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! श्रीमहावीर भगवान् ने पहले वर्ग का अर्थ आपने कहा वैसा कहा है; अब दूसरे वर्ग का उत्क्षेप (प्रस्तावना) कही अर्थात् हे गुरु देव ! श्रमण भगवान्

श्रीमहावीरस्वामीने आठवें अंग के दूसरे बर्ग का कैसा अर्थ कहा है सो प्रकाशित करो ?

मूल—ते णं काले णं ते णं समाए णं चारवतीए णगरीए षण्ह पिया धारिणी माता—अम्बोम ? सागरे २ खलु. समुद्द ३ हिमवंत ४ अचलनामे ५ य । धरणे ६ य पूरणे ७ वि य, अभिचंदे ८ चेव अट्टमए ॥ १ ॥

अर्थ—सुधर्म स्वामी कहते हैं कि हे जन्तू ! उसकाल उससमय में द्वारिका नामक नगरी थी, उसमें पूर्वोक्त अंधकवृत्ति नामक पिता, धारिणी माता जिन के आठ पुत्रों के नामसे अष्टा २ आठ अध्ययन इस दूसरे बर्ग में ग्रमण भगवान् महावीरस्वामी ने कहे हैं। उन्हींके नाम इस प्रकार हैं:—पहला अशोम, दूसरा सागर, तीसरा समुद्र, चौथा हिमवंत, पांचवाँ अचल, छठा धरण, सातवाँ पूरण और आठवाँ अभिचन्द्र ।

मूल—जहा पढसो बगो तथा सब्जे अठ अज्झयणा, गुणरयणतमोक्कम्मं सोलसवासाइं परियाओ, सेतुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धि (सू० ३)

अर्थ—जिस तरह प्रथम बर्ग कहा, उमी तरह इस दूसरे बर्ग के सब आठों अध्ययन करने चाहिये। इन

आठों कुमारों ने बारह भिक्षु प्रतिमाओं को वहन की, गुण रत्न संवत्सर नामक तप भी किया और सालह २ वर्ष चारित्र्य पालन करके एक २ महीने की संलेखना (अनशन) कर शंजय तीर्थ के ऊपर सिद्धि पद पाया ।

॥ इति दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन समाप्त ॥

॥ अथ तीसरा वर्ग ॥

मूल-जइ णं भंते ! तच्चस्स उक्खेवओ ।

अर्थ—हे भगवन् ! श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंग के दूसरे वर्ग का आपने बतलाया वैसे अर्थ कहा । अब तीसरे वर्ग का भगवान् ने कैसा भाव प्ररूपण किया है वह बतलाइये ?

मूल-एवं खलु जंबू ! तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अब्झयणा पन्नत्ता, तं जहा-अणीयसे णे १, अणंतसेणे २, अणिहय ३, विऊ ४, देवेजसे ५, सत्तुसेणे ६, सारणे ७, गए ८, सुमुहे ९, दुम्मुहे १०, कूवए ११, दारुए १२, अणादिही १३ ।

अर्थ—श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं कि इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं, वे ये हैं:—पहला अनिकसेन, दूसरा अनंतसेन, तीसरा अनिहल, चौथा रिपु, पांचवाँ देवसेन, छठा शशुसेन, सातवाँ सारण, आठवाँ गजसुकुमाल, नववाँ सुखल, दसवाँ दुर्खल, ग्यारहवाँ कूपक, बारहवाँ दारुक और तेरहवाँ अनाष्टि, इन तेरह कुमारों के नाम से तेरह अध्ययन कहे हैं ।

मूल— जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—हे गुरु देव ! यदि श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्रीमहावीर स्वामी ने अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं तो अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ?

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं भद्विल्लपुरे नामं नगरे होत्था, वन्नओ । तस्स णं भद्विल्लपुरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिस्सीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था, वन्नओ । जितसत्तु राया ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! उस काल उस समय में भद्विल्लपुर नामक नगर था । उस नगरका वर्णन करना । उस भद्विल्लपुर नगर के बाहर उत्तर और पूर्व दिशा के बीच अर्थात् ईशान कोण में श्रीवन नामक उद्यान

था। उस उद्यान का वर्णन करना। उसे भदिलपुरं नगर में जितशत्रु नामक राजा राज्य करता था। उस का भी वर्णन कर देना।

मूल—तथ णं भदिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावइ होत्था अइहे।

अर्थ—उसी भदिलपुर नगर में समृद्धिवान और प्रसिद्ध नाग नामक गाथापति सेठ रहता था।

मूल—तस्स णं नागस्स गाहावत्तिस्स सुलसा नामं भारिया होत्था, सुमाला जाव सुरूवा।

अर्थ—उस नाग नामक गाथापति के सुकोर्मल, रूप-लावण्ययुक्त, अतिसुन्दर और पतिव्रता सुलसा नाम की स्त्री थी।

मूल—तस्स णं नागस्स गाहावत्तिस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसेणे नाम कुमार होत्था, सुमाले जाव सुरूवे पंच धाइपरिक्खत्ते, तं जहा—खीरधाइ जहा दढपइन्ने जाव गिरिकंदरमच्छीणेव चंपग—वरपायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढति।

अर्थ—उस नाग नामक गाथापति सेठ का पुत्र और सुलसा नामक पति का आत्मज अनिकसेन नामक कुमार था, वह सुकुमार, सुन्दर और पुण्यशाली था जिस का पालन पोषण पांचधात्रीमाताओं द्वारा होता था,

वह बतलाते हैं:-पहली क्षीर धात्री-दूध पिलाने वाली, दूसरी मंजन धात्री-स्नान कराने वाली, तीसरी मंडन धात्री-अलंकार पहनाने वाली, चौथी ऋद्धापन धात्री-फिड़ा कराने वाली और पांचवी अंक धात्री-गोद में बिठा कर खिलाने वाली । जिस प्रकार 'राय प्रशोनीय' सूत्र में बतलाये हुए 'इदं प्रतिज्ञा' की तरह यहां पर भी सब कहना चाहिए, यावत् पर्वत की गुफा में रहे हुए श्रेष्ठ चंपक के वृक्ष की तरह सुख से वह कुमार बढ़ने लगा ।

मूल-तते णं तं अणियसं कुमारं सातिरेगअट्टवासजायं अस्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाते यावि होत्था ।

अर्थ-इसके बाद वह अनिकसेन कुमार जब आठ वर्ष से अधिक आयु का हुआ तब उसके माता-पिता ने कलाचार्य के पास भेज कर कलाओं का अध्ययन कराया, अनुक्रम से यावत् वह भोग भोगने के लिये समर्थ हुआ ।

मूल-तते णं तं अणियसं कुमारं उम्मुक्कवालभावं जाणेत्ता अस्मापियरो सरिसियाणं जाव (सरि-सव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणणुणेत्तवेयाणं सरिसेहिंतो कुलेहिंतो आणिछियाणं) वत्तीसाए इन्भवकरन्न-गाणं एग्गदिवसे पाणिं गेण्हावेत्ति ।

अर्थ—उसके बाद अनिकसेन कुमार को बाराथावस्था से मुक्त जानकर उस के माता-पिता ने समान वय-वाली, लावण्य, रूप, यौवन और गुण में समान और समान कुलों में से प्राप्त की हुई बड़े धनाढ्य सेठियों की बत्तीस उत्तम कन्याओं के साथ एकही दिन में कुमार का पाणि ग्रहण करवाया।

मूल—तेते णं से नागे गाहावड् अणीयस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयति, तं जहा बत्तीसं हिरन्नकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—उस के बाद उस नाग गाथापति ने अनिकसेन कुमार को प्रीति दान दिया, वह इस प्रकार है :— बत्तीस स्वर्ण कोटि वगैरह जिस प्रकार 'भगवती सूत्र' में महाबल कुमार के अधिकार में कहा है, उसी प्रकार यहाँ पर भी सभ कहना। यावत् श्रेष्ठ महलपर रहकर मृदंग के मस्तक फूटते न हों? इस प्रकार संगीत वगैरह पूर्वक बत्तीस स्त्रियोंके साथ पाँचों इन्द्रियों के भोगों को भोगने लगा।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्टनेमी जाव समोसढे, सिरिवणे उज्जाणे जहा जाव विहरति, परिसा णिगया ।

अर्थ—उस काल उस समय में अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् यावत् श्रीवन नामक उद्यान में पथारे और ठहरने के लिये यथायोग्य अबग्रह ग्रहण करके वहाँ विराजे तब भगवान् को बंदना करने के लिये नगरमें से पर्यटा निकली ।

मूल— तते णं तस्स अणीयसेणस्स तं जहा गोयमे तथा नवरं समाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं अहिज्जाति, वीसं त्तासातिं परियाओ, सेसं तहेव जाव सेतुंजे पव्वते मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे ।

अर्थ:—उसके बाद अनिकसेन कुमार को भगवान् के आगमन की खबर होते ही वह भगवान् को बंदना करने के लिये गया, भगवान् की धर्म देशना सुनी बगैरह जिस प्रकार पहले गौतम कुमार का अधिकार कहा है, उमी प्रकार यहाँ पर भी सब कहना । विशेष यह कि इन्होंने दीक्षा लेकर सामायिक बगैरह चौदह पुर्वों का अभ्यास किया, बीस वर्ष चारित्र पर्याय का पालन किया । शेष जीवन वृत्तान्त उसी प्रकार कहना । यावत् शतुंजय तीर्थ ऊपर एक-महीने की संलेखना (अनशन) कर सिद्धि पद को पाया ।

मूल— एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगड्ढसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढम-उज्झणस्स अयमट्ठे पत्तते ।

अर्थ— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने

आठवें अंग अंतगढदसा के तीसरे वर्ग के पहले अध्ययन का यह अर्थ कहा है ।

मूल— एवं जहा अणीयसेणे, एवं सेसा वि अणंतसेणे जाव सत्तुसेणे छ अज्झयणा एक्कगमा, बत्तीसओ दाओ, वीसंवासा परियातो, चोदसपुब्बा, सेतुंजे सिद्धा ॥ छट्ठमज्झयणं सम्मत्तं ॥ (सू० ४)

अर्थ:—इस प्रकार जैसे अनिकसेन कुमार मुनि का अधिकार कहा, उसी प्रकार शेष अनंतसेन, अनिहत, रिपुसेन, देवसेन और शत्रुसेन तक के छः अध्ययन एक ही समान जान लेना । सबको बत्तीस २ कन्यायें, बत्तीस २ कोटि का देहेज दिया था तथा छठों मुनिओंने बीस वर्षका चारित्र पर्याय पालन किया, चौदह पूर्वोंका अभ्यास किया और शत्रुंजय गिरि ऊपर सिद्धि प्राप्त की, वगैरह सब अधिकार समान जान लेना । सूचना:— ये छठों कुमार वसुदेवजी तथा देवकी देवी के पुत्र थे परन्तु सुलसा ने इन का पालन पोषण किया था । इसका विशेष खुलासा ' गजसुकुमाल ' के आठवें अध्ययन में सूत्रकार ने बतलाया है, वहाँ से समझ लेना ।

॥ इति छ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

मूल—तेणं काले णं ते णं समए णं बारवतीए नयरीए जहा पढमे नवरं वसुदेवे राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, सारणे कुमारे, पद्मासतो दाओ, चोदसपुब्बा, वीसंवासा परियातो, सेसं जहा गोयमस्स जाव

सेतुंजे सिद्धे ॥ (सू० ५) सत्तमसञ्ज्ञयणं सम्मतं ॥ ७ ॥

अर्थ:—उस काल उस समय में द्वारिका नामक नगरी थी, बगैरह जिस प्रकार प्रथम अध्ययन में कहा, उसी प्रकार कहना, विशेष यह है कि - बसुदेव राजा, धारिणी देवी, स्वप्न में सिद्ध का दर्शन, सारण नामक कुमार का जन्म, पचास स्त्री, पचास क्रोड़ का दहेज, वीक्षा, शौचद्वैतोंका अभ्यास, वीस वर्ष का चारित्र्य पर्याय, शेष सब वृत्तान्त गौतम कुमार मुनि की तरह कहना यावत् शत्रुजय सिद्धि पद को प्राप्त हुए (सू० ५)

॥ इति सप्तम अ-ययन समाप्त ॥ ७ ॥

मूल—जइ णं भंते उक्खेवओ अट्टमस्स ।

अर्थ:—जन्म स्वामी, श्री सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे गुरु देव ! श्री महावीर स्वामीने सान्बंध अध्ययन का ऐसा अर्थ कहा तो अब आठवें गजसुकुमाल के अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है सो बतलाइये ?

मूल—एवं खलु जंघु ! ते णं काले णं ते णं समए णं चारवतीए नयरीए जहा पढसे जाव अरहा अरिद्धनेमी सामी समोसेढे ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके है जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारिका नामक नगरी थी, वंगरह जैसा प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन में कहा है, उसी प्रकार इस अध्ययन में भी जान लेना, परंतु विशेष यह है कि वसुदेव राजा, देवकी देवी इत्यादि यावत् अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् समोवसरे ।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतेवासि छ अणगारा भायरो सहोदरा होत्था, सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीळुप्पलगवल्लियअयसिकुमुमप्पगासा सिरिवच्छंकिवच्छा कुसुम-कुंडलभइलया नलकुव्वरसमाणा ।

अर्थ:—उस काल उस समय में अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के शिष्य छः अणगार बन्धु सहोदर एक ही माता से उत्पन्न हुए थे, वे देखने वालों को रूप में समान मालूम होते थे । उनकी चमड़ी का रंग समान था । अवस्था में भी समान दीखते थे । काला कमल, भेंस का सींग, गली का रंग और अलसी के पुष्प क समान शरीर की प्रभा वाले थे । उनका वक्षःस्थल श्री वत्स (श्री वच्छ) से अंकित था । धतूरे के पुष्प के समान आकृति वाले, कानोंके आभूषणों से सुशोभित थे । यह विशेषण उनकी बाल्यावस्था के आधार पर कहा है, ऐसा कई आचार्यों का कथन है और दूसरे आचार्य कहते हैं कि पुष्प के गर्भ के समान सुकोमल थे तथा कुबेर के

पुत्र नल और कृषर के समान थे यह विनोयण लोकस्त्री से दिया है, क्योंकि देवी के पुत्र होने ही नहीं।
मूल— तते णं ते छ अणगारा जं चैव दिवसं मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगरियं पव्वतिया तं चैव दिवसं अरहं अरिट्ठेनेमिं चंदंति णमंसंति, चंदित्ता णमंसित्ता णं चयासी—इच्छामो णं भंते! तुच्छेहि अच्चभणुप्राया समाणा जावजीवाण, छट्ठेच्छेणं अणिम्मित्तेणं तत्र कम्मसंजमेणं तत्रसा अणणं भावे माणे विहरित्तए ।

अर्थ—उसके बाद ये दलों मायु जिस दिन से गणपतिसप्त छोड़ कर मुंड शोक अणगार हुए, उसी दिन अरिहत अरिष्टनमि भगवान् को चंदना कर, नमस्कार किया। चंदना—नमस्कार करके इस प्रकार बोले, हे भगवान्! हम इच्छा करते हैं कि आपकी आज्ञा प्राप्त कर लीयन पर्यन्त निरंतर छट्ठे तप कर्म करके तप संगम से आत्मा को भावन करते हुए विनरते रहें।

मूलः—अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिचंथं करेह ।

अर्थ—भगवान् ने कर्ममाया, हे देवानुप्रियो! तुमको मुन हो गया करो, इस कार्य में शिथिल मत करो।

मूल— तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठेनेमिणा अच्चभणुण्णाया समाणा जावजीवाए छट्ठेच्छेणं जाव विहरंति

अर्थ:—उसके बाद छ अणगार अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त, छट्ठ २ की तपश्चर्या करते हुए विचरने लगे ।

मूल—तते णं ते छ अणगारा अन्नया कथाइं छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्जायं करोति, जह-
गोयमो जाव इच्छामो णं छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुत्ताया समाणा तिहिं संघाडएहिं वारवतीए
नगरीए जाव अडित्तए । अहासुहं देवानुप्पिया । ।

अर्थ—उसके बाद उन छठों अणगारोंने एक समय छट्ठ तप के पारणे के दिन पहली पौरसी में सज्जाय की, जिस प्रकार गौतम स्वामी के गौचरी जाने का अधिकार है, उसी माफिक सब कहना, यावत् हम इच्छा करते हैं कि छट्ठ तप के पारणे के लिये आपकी आज्ञा पाकर हम तीन सिंघाटक (दो २ के तीन समुदाय) करके द्वारिका नगरी में पर्यटन करें, तब भगवान् ने कहा, हे देवानुप्रियो ! तुम अपनी इच्छानुसार सुख उत्पन्न हो बैसा करो ।

मूल—तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिष्टनेमिणा अब्भणुणया समाणा अरह अरिष्टनेमिं वंदति
णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ पडिनिक्खामंति, पडिनि-
क्खमिन्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति ।

अर्थ:- उसके बाद उन छौं अणगारोंने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को बंदना की, नमस्कार किया। बंदना-नमस्कार करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से और महत्-स्वाम्रवन (हजारों आंबों के वृक्षों का बाग) से बाहर निकले। बाहर निकल कर द्यौ २ के तीन मिथाटे छोकर बपलता रहित शान्ति से द्वारिका नगरी में आहार के लिये पर्यटन करने लगे।

मूल—तथ्य णं एगे संघाडए वारवतीए नगरीण उच्चनियमाद्धिमाइं कुलाइं धरसमुदाणस्स भिम्भाय-
रियाए अडमाणे अडमाणे वसुदेवस्स रत्तो देवतीए देवीण गेहे अणुपविट्ठे।

अर्थ—इनमें से एक सिंघाड़ा ने द्वारिकानगरी में ऊँच, नीच और मध्यम कुलों में (बड़े, छोटे और साधारण गृहों में) आहार पानी के लिये पर्यटन करते २ वसुदेव राजा की देवकी नामक राणी के घर में प्रवेश किया।

मूल—तते णं सा देवती देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासति, पासत्ता हट्ट तुट्ट जाव हियया आस-
णाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ट पयाइं तिव्वुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसंति, व-
दिता णमंसित्ता जेणेव भत्तघए तेणेव उवागया, सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेति, भरित्ता ते अणगारे
पडिलाभेति पडिलाभित्ता वंदति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेति।

अर्थ—उस वक्त देवकीदेवी ने दो अणगारों (साधुओं) को आते हुए देखा। देखकर हृष्ट, तुष्ट अर्थात् हृदय में आनन्द पाती हुई आसन से खड़ी होगई। खड़ी होकर सात आठ पावंडे उनके सामने जाकर तीनवार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वंदना की, नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार कर जहाँ भोजनगृह था वहाँ आई, आकर सिंहेशरिया मोदकों का थाल भरा और दोनों साधुओं को वहोराये, वहोरा कर वंदना की, नमस्कार किया। तत्पश्चात् उन्हें वहाँ से विदा किया।

मूल—तदाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए वारवतीए उच्च जाव विसज्जेति ।

अर्थ:—उसके बाद दूसरा सिंघाड़ा द्वारिका नगरी में उच्च, नीच वगैरह के घरों में अमण-करता हुआ देवकी देवी के घर गया। उनको भी उसी प्रकार भक्ति से सिंहकेशरिया मोदक वहोरा कर विदा किया।

मूल—तदाणंतरं च णं तच्चे संघाडए वारवतीए नगरीए उच्च नीय जाव पडिलाभित्ता एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया । कण्हस्स त्वासुदेवस्स इमीसे वारवतीए नगरीए नवजोयणवित्थिण्णाए पच्चम्ब-देवलोगभूताए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति ? जन्नं ताइं चैव कुलाइं भत्त पाणाए भुज्जो भुज्जो अणुप्पविसंति ? ।

अपे—उसके बाद नीमरा गिणादाभी शक्ति का नगरीमें डंग, नीप और मण्यप गुप्तों में प्रमण करना हुआ देखी देवी के मण्य में आया। देवीने उनको भी मोंइक रहोगे दिये। यद्योरा कर इस मण्यो बोली, हे देवानुत्रिगो। क्या इस नव योजन के विचार यानी कया मण्यध देवानोंक के समान कृष्णबागुंदन की इस शक्ति का नगरी में प्रमण निर्वर्णों (मापुओं) को डंग, नीप रगों में प्रविष्टन करने पर भी आहार-पाणी भित्ता नहीं कि दियते एकके एक ही पर में भित्ता के लिये पुनः पुनः प्रयेज करते हैं ?।

मुल—तने णं ने अणगाग देवति देवीं णंंं रयामी-नो गनु देवाणुणिए ! कणहस्स वागुदेवस्स इमीसे वाखनीण् नगरणिए जाण देवल्लोगभूयाण् समणा विगंथा उयनीय जाण अउमाणा भजपाणं गो लभंनि, नो नेप णं ताडं ताडं व्हाडं दोचं पि तजं पि भत्तपाणाण् अणुपमिंसि ।

कर्म—गह मुन पर उन मापुओं ने देवीने देवी ने इस प्रकार कहा:—हे देवानुत्रिगो ! कृष्ण बागुंदन की वाखन कृत्योक के समान इस शक्ति का नगरीमें प्रमण निर्वर्णों (मापुओं) को डंग, नीप, मण्यप गुप्तों में पाखन अत्रुक्क में प्रविष्टन करते हुए भी, आहार पानी नहीं भित्ता पद पाख नहीं दे, भित्ता दे, इस यामने एक के एक ही पर में एक वाण, दो वाण और नीमरी वाण पाहेरार आहार के लिये नहीं प्राये दे ।

मूल—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे भदिलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया जाव नलकुब्बरसमाणा अरअहो अरिट्ठेनेमिस्स अंतिए धम्मं सोचा संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणणं मुंडा जाव पव्वइया ।

अर्थ:—परन्तु इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रिया ! भदिलपुर नगर में नाग नामक गाथापति सेठ के पुत्र तथा उनकी सुलसा नामक स्त्री के आत्मज हम छाँ सहीदर भाई एक जैसे यावत् नल-कूबर के समान हैं । अनुक्रम से हम छाँ ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास धर्म देशना सुन कर संसार के भय से उद्वेग पाया तथा जन्म मरण से भय उत्पन्न हुआ, इसलिये मुंड होकर यावत् दीक्षा अंगीकार की है ।

मूल— तते णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वतिया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठेनेमिं वंदामो नमंसासो, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिगहं अभिगेणहामो-इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया ।

अर्थ:—उसके बाद हमने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया । हे भगवन् ! हम इच्छा करते हैं कि

आपकी आज्ञा पाकर छट्ट २ की तपधर्या कर विहार करें, बगैरह याबत् भगवान् ने हम से कहा:- हे देवानुप्रियो ! जिसमें तुम्हें सुख उत्पन्न हो वह इच्छानुसार करो ।

मूल— तते णं अम्हे अरहतो अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छंछंटेणं जाव विहरामो, तं अम्हे अब्ज छट्ठस्समणपारणयंसि पढमाए पोरिसिए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविहा, तं नो खलु देवानुप्पिए ! ते चैव णं अम्हे, अम्हे णं अन्ने, देवतिं देविं एवं वदंति, वदिता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ:- उसके बाद हम अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर, जीवनपर्यन्त छट्ट २ (दो २ उपवास) की तपधर्या कर विहार करते हैं, इससे हमने आज छट्ट तप के पारणो के दिन पक्की पोगसी में सज्जाय की, याबत् सज्जाय करके भगवान् की आज्ञा प्राप्त कर आहार के लिये द्वारिका नगरी में भ्रमण करते हुए तुम्हारे घर में आये हैं । इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम्हारे घर में जो पहले आये थे, वो हम नहीं हैं, हम जो दूसरे हैं, इस प्रकार दोनों मायुओं ने देवकी देवी से कहा । कह कर जिम दिशा से आये थे, उसी दिशा में वापिस चले गये ।

मूल— तते णं तसिं देवतीए देवीए अयमेयारुत्वे अज्जत्थिए, जाव समुप्पन्ने- एवं खलु अहं पोला- सपुरे नगरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता-तुमं णं देवानुप्पिए अट्ट पुत्ते पयातिस्ससि सारि-

सए जाव नलकुब्जरसमाणे, नो चैव णं भरहे वासे अन्नाओवि अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति, तं नं मिच्छा, इमं नं पच्चक्खमेव दिस्सति भरहे वासे अन्नाओ वि अम्मताओ वि सरिसए जाव पुत्ते पयायाओ, तं गच्छामि णं अरहं अरिष्टेनेमिं, वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छस्सा - मीतिकट्टु, एवं संपेहेति, संपेहित्ता कोडुवियपुरिसा सद्दवेइ, सद्दवित्ता एवं वयासी-लहुकरणप्पवरं जाव उव-ट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासति ।

अर्थः—उसके बाद उस देवकी देवी को इस प्रकार का अध्यवसाय विचार उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके मेरे को पोलासपुर नामक नगर में अतिसुक्त नामक कुमार मुनिने बाल्यावस्था में कहा था कि हे देवानुप्रिया ! तू एकसरीखे यावत् नल-कूबर के समान आठ पुत्रों को जन्म देगी और इस भारतवर्ष में तेरे समान दूसरी कोई भी माता ऐसे पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकेगी । ऐसा उन मुनि का वचन मिथ्या हुआ, क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष ही दीख-रहा है कि इस भारतवर्ष में दूसरी माता ने भी एक समान यावत् ऐसे पुत्र उत्पन्न किये हैं । इसलिये मैं अरिहंत अरिष्टेनेमि भगवान् के पास जाकर वंदना नमस्कार करूं । वंदना नमस्कार करके इस प्रकार के प्रश्न को पूछूं । इस प्रकार उस देवकी देवी ने विचार किया, विचार करने के बाद कौंडुबिक (आज्ञाकारी) पुरुषों को बुलाये, बुला

कर इस प्रकार कहा:- शीघ्र चलने वाला, श्रेष्ठ बगैरक विशेषण युक्त धर्मवाहन (सवारी बैठने का रथ) लाओ।
तब वे पुरुष उसी प्रकार का वाहन लाये और जिस प्रकार ' भगवती ' मूत्र में भी महावीर स्वामी की प्रथम माना
' देवानंद' ब्राह्मणी भगवान् महावीर स्वामी के पास बंदना करने को गई थी, उसी प्रकार देवकी दूधी भी अरिष्टनेमि
भगवान् के पास जाकर तीन प्रदक्षिणा करके बंदना नमस्कार कर यावत् भगवान् की सेवा करने लगी।

मूल—तते णं ते अरहा अरिष्टनेमी देवतिं देविं एवं वयासी— से नूणं तव देवती ! इमे छ अपणारे
पासेत्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पजेत्था — एवं खल्ल अहं पोलासपुरे नगरे अहमुत्तेणं तं वेव जाव
णिग्गच्छसि, णिग्गच्छित्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया से नूणं देवती ! अत्थे समेट्ठे ? हंता अरिय ।

अर्थ—उसके बाद उन अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने देवकी देवी से इस प्रकार कहा:- हे देवकी ! तुमको
इन छत्रों साधुओं को देख कर इस प्रकार का विचार यावत् उत्पन्न हुआ कि- इस प्रकार मिश्रण करके मुझे ' पोलास
पुर ' नगर में ' अतिशुभक ' नामक साधु ने कहा था कि तुम्हारे एक समान स्थावले आठ पुत्र होंगे, यह सुनि का
वनन असत्य क्यों हुआ ? ऐसा मुझसे पूछने के लिये यावत् तुम घर से निकली हो, निकल कर शीघ्र तुम घरे पास आठ
हो तो मिश्रण से हे देवकी ! यह मैं कहता हूँ कि यह बान सभी है ? देवकी ने कहा:- हे प्रभु ! आपने कहा वैसा ही है ।

हिंदी अर्थ
सहित
३ वगे

मूल—एवं खलु देवाणुपिण् ! ते णं काले णं ते णं समए णं भदिलपुरे नगरे नागे नामं गाहावइ परिवसति अइडे, तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था, सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव निमित्तिण्णं वागरिता—एस णं दारिया णिंदू भविस्सति ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय से हे देवानुप्रिया ! उस काल उस समय में भदिलपुर नामक नगर था, उसमें नाग नामक गाथापति सेठ निवास करता था, वह समृद्धिवान् था, उस नाग नामक गाथापति की सुलसा नामक स्त्री थी । जब सुलसा गाथापतिनी बाल्यावस्था में थी, तब एक निमित्तिये (सामुद्रिक शास्त्र जानकार) ने उससे कहा था कि यह सुलसा कन्या निंदू (मृतवत्सा) यानी मृतक पुत्रों को उत्पन्न करने वाली होगी ।

मूल—तते णं सा सुलसा बालप्पभित्तं चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था, हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेत्ति, करित्ता कल्लकल्लिं पहाता जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडया महरिहं पुप्फच्चणं करेत्ति, करित्ता जा-
नुपायपडिया पणामं करेत्ति, ततो पच्छा आहारेत्ति वा नीहारेत्ति वा वरति वा ।

अर्थः—उसके बाद वह सुलसा बाल्यावस्था से ही लेकर हरिणेगमेषी नामक देवकी भक्ता होगई, जिससे उसने हरिणेगमेषी देवकी प्रतिमा करवाई, करवा कर हमेशा प्रातः काल में स्नान करती, यावत् प्रायश्चित्त करके

पीछे गीलीसाड़ी को पहन कर बड़ों के योग्य अथवा अधिक मूल्य वाली उनकी पुष्पों से पूजा करती, पूजा करने के बाद गोड़ों को पृथ्वी पर नमाकर प्रणाम करती उसके बाद खुद आहार - निहार करती थी और उसके कुछ समय व्यतीत होजाने के बाद उसने पाणिग्रहण किया ।

मूल—तते णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसीदेवे आरिहिते यावि होल्या
अर्थ:—उसके बाद उस सुलसा की भक्ति, बहुमान और सेवा से हरिणेगमेपी देव आराधन हुआ अर्थात् प्रसन्न हुआ और आकर बोला:—तेरा मृतवत्सा का निकाचित कर्म छुट नहीं सकता परन्तु देवकी देवी के जन्म ते हुए छ पुत्र लाकर तेरेको दूँगा उनका पालन-पोषण व पाणिग्रहण आदि करके पुत्र सुखका मनोर्ष पूरा करना ।

मूल—तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्टयाए सुलसं गाहावत्तिणिं तुमं च दो वि समउयाओ करेति, तते णं तुब्भे दो वि सममेव गब्भे गिण्हह, सममेव दारए पयायह ।

अर्थ:—उसके बाद उस हरिणेगमेपी देव ने सुलसा के ऊपर दया करने से बह और तू अर्थात् तुम दोनों एक ही समयमें रजस्वला हुई, उससे तुम दोनों ही साथ-३ गर्भ धारण करने लगी, साथ ही साथ गर्भ की रक्षा करने लगी और साथ ही साथ पुत्र को जन्म देने लगी ।

मूल—तते णं सा सुलसा गाहावतिणी विणिहायमावन्ने दारए पयाइति, तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्टाए विणिहायमावणए दारए करयलसंपुडेणं गेण्हति, गेण्हत्ता तव अंतियं साहरति, साहरित्ता तं समयं च णं तुमं पि णवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि, जे वि य णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्ता ते वि य तव अंतियाओ करयलसंपुडेणं गेण्हति, गेण्हत्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरति, तं तव चेव णं देवइ ! एए पुत्ता णो चेव सुलसाए गाहावइणीए ।

अर्थ:—इस तरह गर्भावस्था पूरी होने से वह सुलसा मृत पुत्रों को जन्म देती, उस समय सुलसा पर की दया के लिये वह हरिणेगमेसी देव यहाँ आकर उसके मृत पुत्रों को दोनों हाथों में ग्रहण करता, ग्रहण करके संहरण करके तेरे पास लाता । उसी समय तेरे भी गर्भावस्था के नौ मास पूर्ण होने पर तू भी सुकुमार पुत्रों को जन्म देती । तब हे देवानुश्रिया ! जो तेरे पुत्र थे उनको तेरे पास से दोनों हाथों में ग्रहण करके सुलसा के पास लेजाकर रख देता । इस कारण से हे देवकी ! यह तेरे पुत्र हैं, परंतु सुलसा के नहीं ।

मूल—तते णं सा देवइ देवी अरअहो अरिद्धनेमिस्स अंतिए एयमहं सोच्चा निसम्म हट्टतुड जाव हिथया अरहं अरिद्धनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति, उवा-

गच्छता ते छप्पि अणगारा वंदति णमंसति, वंदिता णमंसिता आंगतपणहुता पफुयलोयणा कंबुयपडिक्खि-
त्तया दरियवलयवाहा धाराहयकंदवुप्फांगपिव समूससियरोमभूवा ते छप्पि अणगारे अणमिसाए दिट्ठीए
पेहमाणी पेहमाणी सुचिरं निरिक्खति, निरिक्खत्ता, वंदति णमंसति, वंदिता णमंसिता जेणेव अरिहा अरिह-
नेमि तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अरहं अरिहनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करोति, करित्ता वंदनि
णमंसति, वंदिता णमंसिता तमेव धम्मियं जाणं दुरुहति, दुरुहिता जेणेव वारवतीणगरी तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छिता वारवतिं नगरिं अणुप्पविसति अणुप्पविसिता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहिरिया उवहाणसाला
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता धम्मियओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता जेणेव सए वासघरे जेणेव
सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सयंसि सयणिज्जांसि निसीयति ।

अर्थ—उसके बाद देवकी देवी ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से यह वृत्तान्त सुन कर हृदय में धारण कर
हृष्ट हुए यावत् हृदय में आनन्द पाती हुई, अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना कर नमस्कार किया; वंदना
नमस्कार करके जहाँ पर वे छओं साधु थे वहाँ आई, आकर उन छओं साधुओं को वंदना की, नमस्कार किया ।

बंदना नमस्कार करते समय अतीवहर्ष के कारण इसके स्तनों में से दूध की धारा बहने लगी, नेत्र प्रफुल्लित होकर आनन्द के आँसुओं से नेत्र भर गये। अधिक हर्ष होने से शरीर फूल गया, शरीर के अवयव फूल जाने से कंचुकी टूट गई, हर्ष से रोमांच खड़े होने से उसके हाथ में पहने हुए कड़े टूट गये, मेघ की जलधारा से सींचे हुए कदम्ब के पुष्प की तरह उसके शरीर पर रोमराजी विकस्वर होगये। इस प्रकार हर्षाती हुई वह देवकी देवी उन छत्रों साधुओं को अनिमेष (स्थिर) दृष्टि से देखती देखती बहुत समय तक देखती रही, देख कर उनको बंदना की, नमस्कार किया। बंदना नमस्कार करके जहाँ पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहाँ आई। आकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को तीन वक्त दक्षिण तरफ से शुरू कर भगवान् के चौतरफ घूम करके दक्षिण तरफ आनेरूप प्रदक्षिणा की। फिर बंदना की, नमस्कार किया। बंदना-नमस्कार करके उसी धार्मिक वाहन पर चढ़कर जहाँ द्वारिका नगरी थी वहाँ आई। आकर द्वारिका नगरीमें प्रवेश किया। प्रवेश करके जहाँ अपना घर था और उपस्थान शाला (सभा मंडप) था वहाँ आई। आकरके श्रेष्ठ धार्मिक वाहन (रथ) में से नीचे उतरी, नीचे उतर कर जहाँ अपना निवास गृह था तथा जहाँ अपनी शय्या थी। वहाँ आई, वहाँ आकर अपनी शय्या पर बैठ गई।

मूल—तते णं तीसे देवइए देवीए अयं (एयारूवे) अब्भत्थिए (चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे) समुप्पन्ने—एवं खलु अहं सरिसए जाव नलकुव्वरसमाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो च्चेव णं मए एगस्स वि बालत्त-

णए समुबभूए, एस वि य णं कणहे वासुदेवे छणहं छणहं मासाणं ममं अंतियं पायवंदते हव्वमागच्छति, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जासिं मणणे णियगकुच्चिसंभूतयाइं थणहुद्धलुड्डयाइं मद्दुरसमुल्लावयाइं संमण-पजंपियाइं थणमूलकख्वदेसभागं अभिसरमाणाइं सुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हउण उच्छंगि णिवेसियाइं देति समुल्लावए सुमद्दुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते, अहं नं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एक्कतरमपि न पत्ता ओहयमणसंकप्पा जाव दिययायति ।

अर्थ—उसके बाद उस देवकी देवी को इस प्रकार का अत्यात्मिक अर्थात् आत्माश्रित यानी चिन्तन किया हुआ, स्मरणरूप, प्रार्थित यानी अभिलाषा किया हुआ, मनमें संकल्प उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके मैंने एक सरीखे यावत् नल-कूबर जैसे सात पुत्रों को जन्म दिया परन्तु इनमें से मैंने एक ही भी बाल्यावस्था देखी नहीं अर्थात् इनमें से किसी एक का भी पालन पोषण करके बाल क्रीडा करने का सुव अनुभव नहीं किया और वे कृष्ण वासुदेव भी छः २ महीने मेरे पास मेरे चरणों को नमस्कार करने के लिये शीघ्रता से आते हैं । जिससे उन माताओं को धन्य है वे पवित्रआत्मा, पुण्यशालिनी, कृतार्थ, शुभ लक्षणा हैं । ऐसा मैं मानती हूँ कि जिनकी कृाक्षि से उत्पन्न हुए बालक माता के स्तन के दूध पीने में लुब्ध, मद्दुर २ वचन बोलने वाले, मन्मत् अर्थात् दूरे फूटे अस्पष्ट और

सखलना वाले शब्द बोलने वाले तथा थोड़े २ हैंसने वाले वचनों का उच्चारण करके स्तन को छोड़ काँख में रूढ़क जाने वाले, सुग्ध और अत्यंत अव्यक्त ज्ञान वाले ऐसे उन पुत्रों को जो माताएँ अपने कोमल कमल के समान हाथों में लेकर उत्संग (गोद) में बैठाती हैं जिससे वे पुत्र गोद में बैठे हुए पुनः पुनः अति मधुर उल्लाप x करते हैं और बार २ मधुर शब्दों का उच्चारण करते हैं। ऐसा अपने जन्म दिये हुए पुत्रों का सुख अनुभव करने वाली उन माताओं को धन्य है। परन्तु मैं तो अधन्य हूँ, अपवित्र हूँ, पुण्य रहित हूँ, अकृतार्थ और लक्षण रहित हूँ कि जिससे उपरोक्त गुण वाले पुत्रों में से ऐसे एक भी पुत्र को मैं प्राप्त कर सकी नहीं अर्थात् एक भी पुत्र का सुख मेरे को मिला नहीं। इस प्रकार विचार करते हुए उस देवकी देवी के मनका संकल्प नाश होगया और पृथ्वी पर नीची दृष्टि रख कर हथेली के अन्दर मुँह रखकर ध्यान करने लगी।

मूल—इमं च णं कण्हे वासुदेवे प्हाए जाव विभूसिए देवइए देवीए पायवंदते हवमागच्छति।

अर्थ—उस समय कृष्ण वासुदेव ने स्नान किया और अनुक्रम से विभूषित होकर देवकीदेवी के चरणों को बंदना करने के लिए आये।

x-यहा पर मधुर उल्लाप और मधुर वचन ये दो कहनें से पुनरुक्ति दोष आता है परन्तु देवकी ने भ्रम में आकर कहा है जिससे दोष रूप नहीं है।

करेनि, पायगाहणं करेनि,
पासति, पासिता देवइणं देवीणं
भवह ! क्किणं अम्मो !

तते णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासति, पासिता देवइणं देवीणं भवह ! कुब्भे ममं पासिता हइ जाव भवह ! क्किणं अम्मो !
मूल— तते णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासति, पासिता देवइणं देवीणं भवह ! कुब्भे ममं पासिता हइ जाव भवह ! क्किणं अम्मो !

अस्य तुब्भे ओहय जाव श्रियायह ?
अर्थ— तव कृष्ण वासुदेव ने देवकीदेवी को देवा, देव कर देवकी देवी के कारणों में नमस्कार किया। नम-
स्कार करने के बाद देवकी ने इस प्रकार कहा:- हे माता ! पहले तो जय २ तुम मुझको देवकी थी तब २ हइ, तुट
होकर आनन्द मग्न होती थी, परन्तु हे माता ! आज तुम मेरे को देवने पर की संकल्प विफल्य करती हुई गयी
बिचार कर रही हो ?

मूल— तप णं सा देवइ देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसणं जाव समाणे
सत्त पुत्ते पयाया, नो चंच णं मए एगस्स वि चालत्तणे अणुभुत्ते, तुमं पि य णं पुत्ता ! ममं छण्हं छण्हं
मासाणं ममं अंनियं पादवदंते हव्वमागच्छसि, तं धत्ताओ णं ताओ अम्मयाओ जाव श्रियासि ।
अर्थ— तव देवकी देवी ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि इसी तरह निश्चय करके हे पुत्र ! मैंने एक
सरीसृपे यानी नल-हृत्तर जैसे मात पुत्रों को उत्पन्न किया परन्तु उनमें से एक भी पुत्र का बाल सुग अनुभव नहीं

मूल— तप णं सा देवइ देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसणं जाव समाणे
सत्त पुत्ते पयाया, नो चंच णं मए एगस्स वि चालत्तणे अणुभुत्ते, तुमं पि य णं पुत्ता ! ममं छण्हं छण्हं
मासाणं ममं अंनियं पादवदंते हव्वमागच्छसि, तं धत्ताओ णं ताओ अम्मयाओ जाव श्रियासि ।

अर्थ— तव देवकी देवी ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि इसी तरह निश्चय करके हे पुत्र ! मैंने एक
सरीसृपे यानी नल-हृत्तर जैसे मात पुत्रों को उत्पन्न किया परन्तु उनमें से एक भी पुत्र का बाल सुग अनुभव नहीं

किया और हे पुत्र ! तू भी मेरा पुत्र होने पर भी छः छः महीने में मेरे चरण बंदन करने के लिये आता है । मुझसे तो वे माताएँ धन्य हैं जो अपने पुत्रों का अपने हाथों से पालन पोषण करती हैं । इसलिये मैं यही विचार कर रही हूँ ।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे देवतिं देविं एवं वयासी—सा णं तुभे अम्मो ! ओहय जाव झिया—यह, अहणं तथा वत्तिसामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सतीतिकट्टु देवइं देविं इट्ठाहिं वगूहिं समासासेति, समासासित्ता ततो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्टमभत्तं पगेणहति जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोदरं कणीयसं भाउयं विदिणं ।

अर्थ—उसके बाद कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी से इस प्रकार कहा—हे माता ! तुम चिन्तातुर होकर दुःख से ऐसा ध्यान मत करो, तुम्हारे मेरा सहोदर लघुबंधु उत्पन्न होगा वैसा मैं प्रयत्न करूंगा । इस प्रकार देवकी देवी को इष्ट-कान्त-मनोज्ञ बात कह कर आश्वासन दिया, आश्वासन देकर वहाँ से निकले । निकल कर जहाँ पौपथशाला थी वहाँ आये, आकर जिस प्रकार ' ज्ञाता सूत्र ' में अभय कुमार ने अट्टम तप करके अपने पूर्वभव के मित्रदेवकी आराधना की थी । उसी प्रकार कृष्ण वासुदेव ने भी हरिणेगमेपी देव की आराधना निमित्त अट्टम तप किया । जिससे

हरिणैगमेपीदेव प्रसन्न होकर प्रकट हुआ । तब उसके पास दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव ने इस प्रकार कहा:—
मैं इच्छा करता हूँ कि हे देवानुप्रिय ! मुझे सहोदर लघु भाई प्रदान करो ।

मूल—तएणं से हरिणैगमेसी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-होहिति णं देवाणुप्पिया ! तत्र देवलोयनुए
सहोदरे कणीयसे भाउए, से णं उम्मुक्कवालभावे जाव अणुप्पत्ते अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतियं मुंडे जाव
पव्वइस्सति, कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदति, वदिता जामेव दिसिं पाउवभूए तामेव दिसिं पडिगाए ।

अर्थ—उसके बाद उस हरिणैगमेपी देवने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा:— हे देवानुप्रिय ! देवलोक से
च्यवकर एक उत्तम जीव आपका सहोदर (छोटा) भाई होगा । वह बाल्यावस्था को पूर्ण कर यावत् गोचन अवस्था को
प्राप्त होगा, तब अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा भ्रंगीकार करेगा । इस प्रकार उसने
कृष्ण वासुदेव को दो बार, तीन बार कहा, कह कर वो देव जिस विद्या से प्रकट हुआ था उसी विद्या में वापिस
चला गया ।

मूल—तएणं से कण्हवासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिमखमइ २ ता जेणेव देवइं देविं तेणेव उवागच्छइ
२ ता देवइए देवीए पायगहणं करेइ २ ता एवं वयासी-होहितिणं अम्मो ! मम सहोदर कणीयसे भाउति-

कट्टु देवइदेवीए इट्टाहिं जाव आसासेति २ ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव पौषधशाला से बाहर निकले, निकल कर, जहाँ पर देवकी देवी थी, वहाँ पर आये, आकर देवकी देवी के पैरों में नमस्कार किया, नमस्कार करके इस प्रकार बोले— हे माता ! हरिणोगमेषी देव के कथनानुसार तेरे मेरा सहोदर लघुबंधु होगा, ऐसा कह कर देवकी देवी को इष्ट-कांत मनोज्ञ वचनों से संतोष देकर जिस दिशा से आये थे उसी दिशा में पीछे चले गये ।

मूल—तए णं सा देवइ देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसंगंसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव पाढया हट्टहियया परिवहति ।

अर्थः—उसके बाद जब देवकी देवी एक समय उसी प्रकार की श्रेष्ठ शय्या में सोई हुई थी तब स्वप्न में, सिंह को देख कर जागृत हुई । हृष्ट तुष्ट होकर स्वप्न का विचार किया । फिर शय्या से पाद पीठ द्वारा नीचे उतर कर राजा वासुदेव के पास जाकर स्वप्न का वर्णन किया, वासुदेवजी ने उत्तम पुत्र की प्राप्तिरूप उस स्वप्न का फल कहा और प्रातः काल में स्वप्न पाठको को बुलाया । उन्होंने भी उसी प्रकार स्वप्न का फल कहा, जब वासुदेवजी ने उनका कहा हुआ स्वप्न फल देवकी को सुनाया, तब वह हर्षित हृदय वाली देवकी देवी सुख पूर्वक गर्भ रक्षा करती हुई समय व्यतीत करने लगी ।

मूल— तते णं सा देवइ देवी नवण्हं मासाणं जासुमणारत्तवंधुजीवतलम्बहारससरसपरिजातकरुण-
द्विवाकरसमप्पभं सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गयतालुयसमाणं दारयं पयाया, जम्मणं जहा मेह-
कुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे तं होउ णं अम्ह एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसु-
कुमाले गयसुकुमाले ।

अर्थ:—उसके बाद उस देवकी देवी के नौ महीने पूर्ण हुए तब जासुके पुष्प, लाल बन्धु जीवक के पुष्प (बंधु-
जीवक के पुष्प पांच रंग के होते हैं; इसलिये यहाँ लाल शब्द दिया है), लाल का रस, विकस्वर परिजातक सुरद्रुम के
पुष्प समान और उदय होते हुए सूर्य के समान प्रभावाला, सब लोगों के नेत्रों को मनोहर, अत्यन्त कोमल शाय पर
वाला यावत् अधिक रूप लावण्य मय और हाथी के तालवे के समान सुकुमाल पुत्र को जन्म दिया। उसका जन्म महो-
त्सव मेघ कुमार के समान किया। यावत् जिस कारण से हमारा यह बालक हाथी के तालवे के समान सुकोमल है, इस
लिये हमारे इस बालक का नाम गजसुकुमाल गजसुकुमाल ही ।

मूल— तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करंति गयसुकुमालो ति सेसं जहा मेहं जाव अलं भोग-
समत्थे जाए थावि होत्था ।

अर्थ:— उसके बाद उस बालक के मात-पिता ने गजसुकुमाल नाम स्थापन किया । शेष सब अधिकार मेघ कुमार की तरह कहना यावत् योवनावस्था में भोग भोगने के लिये समर्थ हुआ ।
मूल—तत्थ णं वारवइए नगरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति अहे रिउव्वेद जाव सुपरिनिद्धिते यावि होत्था ।

अर्थ:— उस द्वारिका नगरी में सोमिल नामक ब्राह्मण रहता था । वह समृद्धिवान् तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, और अथर्ववेद इनचार घेदों को आंगोपांग सहित अभ्यास करने वाला और मनन करने में पारांगत विद्वान् तथा अत्यन्त श्रद्धा रखने वाला था ।

मूल—तस्स सोमिलमाहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था सुकुमाला जाव सुरूवा ।
अर्थ— उस सोमल नामक ब्राह्मण के सोमश्री नामक स्त्री थी, वह अत्यन्त सुकोमल और सुरूपा थी ।

मूल—तस्स णं सोमिलस्स धूआ सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया होत्था सुमाला जाव सुरूवा रूवेणं जाव लावणणेण उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ।
अर्थ:— उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री तथा सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मज सोमा नामक कन्या थी, वह अति

कोमल यावत् अत्यन्त रूप वाली, रूप द्वारा यावत् लावण्य द्वारा श्रेष्ठ और उत्कृष्ट शरीर श्री.शोभा वाली थी ।

मूल—तए णं सा सोमा दारिया अन्नया कदाइ पहाया जाव विभूसिया वहुहिं खुज्जाहिं जाव परि-
खिखत्ता सयाओ गिहाओ पडिनिख्लमति, पडिनिख्लमिता जेणेव रायमगे तेणेव उवागच्छति, उवगच्छत्ता
रायमंगसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी चिहति ।

अर्थः— उसके बाद वह सोमा कन्या एक समय स्नान कर बन्नादि से विभूयित होकर बहुत सी कुञ्जिका
और वामनिका वगैरह दासियों के परिवार से परियुक्त होकर अपने घर से बाहर निकली, निकल कर जहां पर राज-
मार्ग था वहां पर आई, आकर राज मार्ग में स्वर्ण की गेंद से क्रीड़ा कर रही थी ।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठेनेमि समोसडे परिसा निग्गया, तते णं से कणहे
वासुदेवे इमीसे कहाए लच्छडे समाणे पहाए जाव विमूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हस्थिलंधवरगए
सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेअवरचामरोहिं उधुव्वमाणीहिं वारवइए नयरीए मज्झंमज्जेणं अर-
हत्तो अरिट्ठेनेमिस्स पायवंदते णिग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासति, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्व-
णेण य लावणेण य जाव विम्हए ।

अर्थ—उस काल उस समय में अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् वहाँ सहस्रात्रवन में पधारे । उनको वंदना करने के लिये नगरी में से पर्षदा निकली उस समय कृष्ण वासुदेव ने भगवान् के आगमन की बात सुनी । सुन कर हर्षित हुए, स्नान किया यावत् विभूषित हुए और गजसुकुमाल कुमार के साथ श्रेष्ठ हाथी पर सवार हुए । उनके मस्तक पर कोरंट वृक्ष के पुष्पों की माला का छत्र धारण किया हुआ था । दोनों तरफ श्रेष्ठ श्वेत चँवर लुल रहे थे । इस प्रकार द्वारिका नगरी के मध्य में होकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना करने के लिये निकले । उस समय मार्ग में क्रीड़ा करती हुई सोमा नामक कन्या को देखा । देखकर उस सोमा बालिका के रूप यौवन और लावण्य को देखते २ आश्चर्यान्वित होगये ।

मूल—तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दोवेइ, सद्दोवित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवा-
णुप्पिया ! सोमिलं माहणं जायइत्ता सोमं दारियं गेणहह, गेणित्ता कन्नतेउरंसि पक्खिवह, तते णं एसा गय-
सुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सति । तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पक्खिवंति ।

अर्थ:—उसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौडुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुला कर इन्होंने इसप्रकार कहा कि:— हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और सोमिल नामक ब्राह्मण के पास याचना (मांग) करके सोमा नामक इस पुत्री को लाओ और लाकर कन्याओं के महल में उसको रखो । यह सोमा गजसुकुमालकुमार की स्त्री होगी । उसके बाद उन

कौटुम्बिक पुरुषों ने उनके कथनानुसार सोमा को लाकर कन्याओं के महल में रखवा ।

मूल— तते णं से कण्हे वासुदेवे वारवतीए नगरीए मञ्जमञ्जेणं णिगच्छति, णिगच्छिता जेणेव सहसंबवणे उजाणे जाव पज्जुवासति ।

अर्थ:— उसके बाद वे कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ भाग में होकर बाहर निकले बाहर निकल कर सह्याश्रवन नामक उद्यान में आये आकर यावत् भगवान् की सेवा करने लगे ।

मूल— तते णं अरहा अरिष्टनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहाए, कण्हे पडिगए ।

अर्थ— उसके बाद अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् ने उन कृष्ण वासुदेव और गजसुकुमाल कुमार को तथा बड़ी पर्षदा को धर्म देशना दी, उसको सुन कर कृष्ण वासुदेव आदि अपने २ घर गये ।

मूल:— तते णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहतो अरिष्टनेमिस्स अतियं धम्मं सोच्चा जं नवरं अम्मापियरं आपुच्छामि जहा मेहो मेहलियावज्जं जाव बुद्धियकुले ।

अर्थ—उसके बाद गजसुकुमाल कुमार अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास धर्मदेशना सुन कर हर्षित हुआ और वैराग्य पाया। यहाँ पर इतना विशेष यह है कि उसने भगवान् से कहा कि मैं अपने माता-पिता की आज्ञा लूँ। मेघ कुमार की तरह स्त्री का नाम छोड़ कर कहना यावत् कुल की वृद्धि कर। जिस प्रकार ज्ञाता सूत्र के पहले अध्यायन में मेघ कुमार ने अपने माता-पिता को दीक्षा की आज्ञा मांगने के लिये कहा था, उसी प्रकार इन्होंने भी कहा, माता-पिता को समझाया। विशेष यह है कि मेघकुमार से उसकी माता ने कहा था कि:—“ये तेरी स्त्रियें समान अवस्था वाली और समान राजकुल से आई हुई हैं। इनके साथ तू विषय सुख को भोग इत्यादिक कहा था वह यहाँ पर नहीं कहना चाहिये, क्योंकि मेघकुमार व्याह किया हुआ था और गजसुकुमाल कुंवारा था। तब क्या कहना चाहिये? वह कहते हैं कि:—“तू हमारा इष्ट पुत्र है, तेरा वियोग सहन करने के लिये हमारी इच्छा नहीं होती, इसलिये जब तक हम जीवित रहें, तब तक तू भोग को भोग इत्यादि यावत् हम स्वर्ग में जावें उस वक्त यौवनावस्था को प्राप्त हुआ तू कुल की वृद्धि करके फिर अपेक्षा रहित होकर दीक्षा ग्रहण करना” इत्यादि कहना।

मूल—तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धटे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवा-
गच्छति, उवागच्छिता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगति, आलिंगिता उच्छंगे निवेसेति, निवेसिता एवं वयासी-
तुमं ममं सहेदरे कणीयसे भाया, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया । इयाणिं अरहतो अरिद्धनेमिस्स अंतिए

मुंडे जाव पव्वयाहि । अहणं वारवतीए नगरीए महया महया रायाभिसेणं अभिसिंचिस्सामि ।

अर्थ:—उसके बाद कृष्ण वासुदेव गजसुकुमाल के दीक्षा लेने संबंधी बात को सुन कर जहाँ गजसुकुमाल कुमार था वहाँ आये । आकर गजसुकुमाल को आलिंगन किया, आलिंगन करके अपने गोद में उसे बैठाया, बैठा कर इस प्रकार कहा:— “ तू मेरा सहोदर छोटा भाई है, इसलिये तू हे देवानुप्रिय ! अभी अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत कर । मैं तुझे द्वारिका नगरी में बड़े २ राज्याभियुक्त करूंगा ” ।

मूल—तते णं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेणं एवं बुत्ते समाणे तुसिणीए संचिठ्ठति ।

अर्थ:—उसके बाद जब तक कृष्ण वासुदेव ने इस प्रकार कहा तब तक गजसुकुमाल कुमार मौन रहा ।

मूल—तए णं से गयसुकुमाले कुम्हारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी-
एवं खलु देवाणुप्पिया । माणुस्सया कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति, तं इच्छामि णं देवाणु-
प्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थ:—उसके बाद उस गजसुकुमाल कुमार ने कृष्ण वासुदेव तथा माता-पिता को दो बार तीन बार इस

प्रकार कहा:—“इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! मनुष्य सम्बन्धी काम भोग खेल के आश्रव जैसे हैं यावत् वीर्य के आश्रव तथा रक्त के आश्रव हैं। इससे वे त्याग करने योग्य हैं। इसलिये हे देवानुप्रियो ! मैं तुम्हारी आज्ञा से अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास यावत् दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करता हूँ।

मूल—तते णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएति बहुयाहिं अणुलो-
माहिं जाव आधवित्तए ताहे अकामाई चेव एवं वयासी-तं इच्छामो णं ते जाया। एगदिवसमविरज्जासरिं पासि-
त्तए, निक्खमणं जहा महाबलस्स जात्र तमाणाए तथा जाव संजमित्ते, से गयसुकुमाले अणगारे जाए
इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

अर्थ:—उसके बाद उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण वासुदेव तथा उसके माता-पिता जब बहुतसे अनु-
कूल यावत् प्रेम वाले वचनों द्वारा भी गजसुकुमाल को घर में रखने में असमर्थ हुए, तब इच्छा नहीं होते हुए भी
इस प्रकार कहा कि— जो तू न मानता हो तो हे पुत्र ! तेरी एक दिन की भी मात्र राज्य लक्ष्मी देखने के लिये हम
इच्छा करते हैं, इस प्रकार कह कर उसका राज्याभिषेक किया और महाबल कुमार की तरह उसका दीक्षा महोत्सव
किया, उसने दीक्षा ली, यावत् प्रभु की आज्ञा से उस प्रकार यावत् संयम मार्ग में उद्यम करने लगा। इस प्रकार गज-

सुकुमाल अणगार हुआ इर्गासमिति वाले यावत् गुप्त प्राणधर्म्य को पालन करने वाले हुए । जिस प्रकार भगवतीसूत्र में महाबल कुमार का राज्याभियेक किया उसके बाद पालकी में बितला कर दीक्षा महीनमव किया था । उसी प्रकार यहाँ पर भी सब कहना बहू कर्ता तक ? सो कहते हैं:—दीक्षा लेने के बाद भगवान् ने उनको इस प्रकार उपदेश दिया कि हे देवानुमिय । इस प्रकार यथा से चलना, इस प्रकार आहार करना, इस प्रकार बोलना, इस प्रकार रखना, इस प्रकार बैठना, इस प्रकार करवें बदलना, इस प्रकार आहार करना, इस प्रकार बोलना, इस प्रकार रखना, इस प्रकार बैठना, इस प्रकार सब की रक्षा करने में प्रयत्न करना चाहिये । इस विषय में कुछ भी प्रमाद नहीं करना । इसके बाद गजसुकुमाल अणगार ने अरिष्टोमि भगवान् के पास से इस प्रकार के धार्मिक उपदेश को अच्छी तरह से ग्रहण किया और भगवान् की आज्ञानुसार चलने लगे, तथा उसी प्रकार उद्यम प्रीति होकर प्राण, मृत, जीव और सम्यं सि जेणव अरहा अरिष्टोमि तेणव उवागच्छति, उवागच्छिता अरहं अरिष्टोमि तिग्युतो. आयाहिगंपया-के लिये संयम मार्ग में प्रयत्न करने लगे, तथा उसी प्रकार उद्यम प्रीति होकर प्राण, मृत, जीव और सब की रक्षा मूल—तते णं से गयसुकुमारे अणगारे जं जेव दिवसं पच्चतिगु तस्सेव दिवसस्स पुञ्जावरणहकाल-

समयं सि जेणव अरहा अरिष्टोमि तेणव उवागच्छति, उवागच्छिता अरहं अरिष्टोमि तिग्युतो. आयाहिगंपया-
हिणं करोति, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी - इच्छामि णं भंने ! तुब्भेहिं अबभणुण्णाए

समाणे माहकालंसि सुसाणांसि एगाराइयं महापडिमं उवसंपञ्जिता णं विहरंत्तार । अत्तासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ।

अर्थ:—उसके बाद गजसुकुमाल अणगारने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन पहलू आर पिछले समय के मध्य में अर्थात् दो पहर को जहां पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् विराजे थे वहां पर आये । आरू अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को तीन वरक प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके बंडना की, नमस्कार किया, बंडना नमस्कार करके इस प्रकार कहा:— 'हे भगवन् ! आपकी आज्ञा ही तो मैं महाकाल नामक इमवान में एकरात्रि की महाप्रतिमा को अंगीकार करके विचरूं, ऐसी मेरी इच्छा है । तब भगवान् ने कहा ' हे देवानुप्रिय ! तुमको जिस प्रकार सुव उत्पन्न हो वैसे तेरी इच्छानुसार कर' इसमें विलंब नहीं करना चाहिये । (यहाँ पर गजसुकुमाल ने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन प्रतिमा अंगीकार करने का जो कल है, वह सर्वज्ञ तीर्थर अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञानुसार होने से विरूढ नहीं, अन्यथा प्रतिमा अंगीकार करने में यह नियम है " पडिवज्जई ण्याओ, संवयणाधिइओ मयासत्तो । पडिमाओ भावियप्पा, सम्मं गुरुणा अणुत्ताओ ॥ १ ॥ गच्छे चिय निम्माओ, जा पुब्बा दसभवे अंसंज्जा । नवमस्स तइयवत्थु, होई जहत्तो सुयाभिगमो ॥ २ ॥ अर्थात् पहिले संवयण और धैर्य युक्त, महा मरयवान् और भावितात्मा साधु गुरु की आज्ञा से इस प्रतिमा को अंगीकार कर सकता है । वह साधु गच्छ में बहुत समय तक रहा हुआ हो यावत् कुछ

न्यून दश पूर्व के ज्ञान वाला अथवा जघन्य से नवम पूर्व की तीसरी वस्तु तक का श्रुत ज्ञान वाला होना चाहिये)।
 मूल—तते णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहता अरिष्टनेमिणा अब्भणुत्ताए समाणे अरहं अरिष्टनेमिं
 वंदति णमसति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतिआओ सहसंववणाओ उच्चाणाओ पडिणि—
 क्वमसति, पडिणिक्खमसित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवगते, उवागच्छित्ता थंडिल्ले पडिल्लेहेति, पडिल्लेहिता
 उच्चारपासवणभूमिं पडिल्लेहेति पडिल्लेहिता, ईसिंपव्भारगएणं काएणं जाव दो वि पाए साहट्टु एगराडं
 महापडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरति ।

अर्थ:— उसके बाढ गजसुकुमाल अणगार ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा प्राप्त कर अरिहंत
 अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास
 से और सहस्रात्रवन नामक उद्यान से बाहर निकले, निकल कर जहाँ पर महाकाल नामक उद्यान था वहाँ पर
 आये। आकरके स्थंडिल (निर्जीव पृथ्वी) की पडिल्लेहणा की (इष्टि से देखा), पडिल्लेहणा करके वल्ले मात्रे की भूमि
 रहित एक टुक लगा कर तथा एक श्वेत पुद्गल पर इष्टि रख कर दोनों पावों को मिला कर इस प्रकार खड़े रहकर

हिंदी अर्थ
सहित.
३ वर्ग

एक रात्रि की महाप्रतिमा को अंगीकार करके रहे ।

मूल—इसं च णं सोमिले माहणे समिधेयस्स अट्टाए वारवतीओ नगरीओ बहिया पुव्वणिग्गते समिहातो य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेणहति गेण्हत्ता ततो पडिनियत्तइ, पडिनियत्तिता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे वीईवयमाणे संज्ञाकालसमर्थसि पविरलमणुस्संसि गयसुकुमालं अणगारं पासति, पासित्ता तं वेरं सरति, सरित्ता आसुरुत्ते एवं वयासी—एस णं भो ! से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थिय जाव परिवज्जिते, जे णं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणि विप्पजहेत्ता मुंडे जाव पव्वतिए ।

अर्थः—इसवक्त वह सोमिल नामक ब्राह्मण समिध (होम) की सामग्री इकट्ठी करने के लिये द्वारिका नगरीके बाहर पहिले से ही निकला हुआ था उसने समिध की लकड़ी, डाम, कुश तथा वृक्ष की शाखा के अग्र भाग के पत्ते ग्रहण किये, ग्रहण करके वहाँ से पीछा फिरा, तब महाकाल नामक दमज्ञान के निकट आते २ सायंकाल का समय होगया । मनुष्यों का आवागमन बहुत कम होगया इतने में उस स्थान पर गजसुकुमाल अणगार को देखे, देख कर उसको वह

वर याद आया । याद आते ही वह शीघ्र ही क्रोधधुर होगया और क्रोध पूर्वक इस प्रकार बोला:—अहो यही तू गज-सुकुमाल कुमार मृत्यु की प्रार्थना करने वाला यावत् निर्लिप्त है कि जिसने मेरी पुत्री और सोमश्री नामक स्त्री की नहीं अर्थात् चोरी वगैरह दोगों का कुछ भी चोरी वगैरह दोष देखे बिना ही वह पतित और जाति वगैरह से अलग बिना कारण त्याग कर तू मुंड हो यावत् सायु हुआ है ।

मूल—तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिजायणं करेत्तए, एवं संपेहेत्ति, संपेहिता दिसापडिलेहणं करोत्ति, करित्ता सरसं मद्धियं गेण्हत्ति, गेण्हत्ता जेणव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवाग-च्छत्ति, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स कुमारस्स मत्थाए मद्धियाए पालि वंधइ, वंधित्ता जलंतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खयरंगारे कहल्लेणं गेण्हइ, गेण्हत्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थाए पक्खिवत्ति पक्खिवित्ता भीए, तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दित्ति पाउब्भूए तामेव दित्ति पडिगाए ।

अर्थ:—इससे मुझे गजसुकुमाल कुमार से उस धैरका बदला लेना श्रेयस्कर है । इस प्रकार उम ब्राह्मण ने विचार किया, विचार करके सब दिगाओं में देवा । देवकर पानी से गीली की हुई मिट्टी को ग्रहण की । ग्रहण

करके जहाँ गजसुकुमाल अणगार थे वहाँ आया । आकर गजसुकुमाल कुमार के मस्तक पर मिट्टी की पाल बौधी, बाँधकर चितामें से जाज्वल्यमान खाँखरे के पुरुष अर्थात् केसूडे के सामान लाल खैरकी लकड़ी के अंगारे एक ठीबरे में ग्रहण किये । ग्रहण करके गजसुकुमाल अणगार के मस्तक पर रखे । रखकर भयातुर होकर (त्रासित होकर) वहाँ से शीघ्रता से भगा । भागकर जिस दिशा में से आया था उसी दिशा में वापस चला गया ।

मूलः—तते णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पावभूआ उज्जला जाव दुरहियासा ।

अर्थः—उसके बाद उन गजसुकुमाल अणगार के शरीर के अन्दर अत्यन्त देदीप्यमान् यावत् विपुल, तीव्र, प्रचंड, गाढ, कटुक, कर्कश और दुःख से भी सहन नहीं हो सके ऐसी वेदना उत्पन्न हुई ।

मूलः—तते णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेति ।

अर्थः—उसके बाद वे गजसुकुमाल अणगार सोमिल नामक ब्राह्मण पर मनसेभी द्वेष नहीं करते हुए, अत्यंत देदीप्यमान आग्नि की वेदना को (दुःखको) सहन करने लगे ।

मूलः—तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं

पसत्यञ्जवसाणेणं तदावरणिजाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अणुवक्करणं अणुपविट्टस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पणे, ततो पब्बा सिद्धे जाव प्पहीणे ।

अर्थः—उसके बाद उस उच्चल (प्रबल) वेदना को सहन करते हुए ऐसे तथा कर्मरूपीरज को शिखर डालने वाले अपूर्वकरण नामक गुणस्थान में पहुँचे हुए, ऐसे अर्थात् क्षपकश्रेणि में चढ़े हुए, गजसुकुमाल अणगार ने आत्मा कर्मोंका क्षय कर डालने तथा प्रशस्त अध्यवसाय द्वारा जानावर्गीय, दर्शनावर्गीय, मोक्षनीय और अंतराय इन चार केवल ज्ञान और केवल दर्शन उत्पन्न किया । उसके बाद वे सिद्ध हुए, यावत् बुद्ध हुए, समग्र और परिपूर्ण श्रेष्ठ निवृत्त हुए और सब दुःखों से रहित हुए ।

मूलः—तस्य णं अहासंनिहितोहिं देवोहिं सम्मं आराहितं तिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए, बुटे, दसद्धवन्ने

कुसुमे निवाडिते, चेलुमखेवे कए, दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाय कए यावि होत्था ।

अर्थः—उसके बाद पास में रहने वाले देवोंने “इन मुनि ने सम्यक् प्रकार से चारित्र्य की आराधना की” इस प्रकार कहकर दिव्य सुगन्धिन गंधोदक की वृष्टि की । पांच प्रकार के गुणों की वर्षा की । वक्त्रोंका उत्क्षेप

किया तथा दिव्यगायन गंधर्व अर्थात् मृदंगादिक शब्द सहित गायन किया ।

मूलः—तते णं कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते प्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेयवरचामरोहिं उधुव्वमाणीहिं महया भडचडगरपहकरवंदपरिबिखत्ते वारवतिं णगारिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिंठेनेमी तेणेव पहारेत्थगमणाए ।

अर्थः—उसके बाद वह कृष्णवासुदेव दूसरे दिन प्रातःकाल प्रगट हुआ, यावत् सूर्य देदीप्पमान हुआ । उस समय स्नान कर यावत् विभूषित होकर श्रेष्ठ हाथी के स्कंध पर बैठे, उनके मस्तक पर कोरंट वृक्ष के पुष्पों की माला से शोभित छत्र धारण किया हुआ था, उनकी दोनों तर्फ श्वेत और श्रेष्ठ चैवर डुल रहे थे, सुभटों के समूह सहित इसप्रकार द्वारिका नगरीके मध्य २ भागमें होकर जहां अरिहन्त अरिंठेनेमि भगवान् थे वहां जानेको निकले ।

मूलः—तते णं से कण्हे वासुदेवे वारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासति जुन्नं जराजजरियेदहं जाव किलंतं महतिमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहियारत्थापहातो अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासति ।

अर्थः—उसके बाद कृष्णवासुदेव द्वारिका नगरी के मुख्य २ बाजारों से निकले तब उन्होंने ने एक पुरुष को

देखा । वह पुरुष बृद्ध था, उसका शरीर बृद्धावस्थाके कारण जीर्ण होगया था यावत् आतुर, कुसुक्षित, तृपातुर और ग्लानी पाया हुआ था । वह एक अत्यन्त बड़े ईंटों के ढेर में से एक २ ईंट बाहर की गली के रास्ते से लेकर घर के अन्दर प्रवेश करता था । ऐसे पुरुष को देखा ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्टाए हत्थिखंधवरगते चैव एगं इट्ठं भेण्हति, गेण्हत्ता वाहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेति ।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने उस बृद्ध पुरुष के ऊपर दया आने से श्रेष्ठ हाथी के स्कंध पर रहे हुए ही एक ईंट लेकर बाहर की गली के रास्ते से उसके घर के अन्दर प्रवेश किया अर्थात् हाथी पर बैठे हुए ही सेवक द्वारा एक ईंट मँगवाकर अपने हाथ में लेकर उसके घर में डाल दी ।

मूलः—तए णं कण्हेणं वासुदेवणं एगाए इट्ठगाए गहिताए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्ठगस्स रासी वाहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए ।

अर्थ— उसके बाद जब कृष्ण वासुदेव ने एक ईंट ग्रहण की तब उनके साथके अनेक-सैकड़ों पुरुषों ने भी एक २ ईंट ग्रहण कर वह बड़ा ईंटों का ढेर बाहरके मार्ग से लेकर उसके घर में रख दिया ।

मूलः—तए णं से कणहे वासुदेवे वारवतीए नगरीए मज्झमज्जेणं णिगच्छति, णिगच्छत्ता जेणेव अरहा अरिष्टनेमि तेणेव उवागते, उवागच्छत्ता जाव वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिष्टनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे जाणं अहं वंदामि नमंसामि ? ।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ होकर निकले । निकल कर जहाँ पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहाँ आये । आकर भगवान् को यावत् वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर गजसुकुमाल अणगार को न देखने से अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोलेः— हे भगवन् ! वह मेरा सहोदर छोटा भाई गजसुकुमाल अणगार कहों है, उसको मैं वंदना करूँ, नमस्कार करूँ ? ।

मूलः—तए णं अरहा अरिष्टनेमी कणहं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कणहा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहाः—हे कृष्ण वासुदेव ! गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ साधन कर लिया है ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं एवं वयासी—कहणं भंते ! गजसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अहे ?

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेवने अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् से इस प्रकार पूछाः—हे भगवान् ! गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ किस प्रकार साधन किया ?

मूलः—तेते णं अरहा अरिष्टनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खल्लु कण्हा ? गजसुकुमालेणं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहाः—इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण वासुदेव ! गजसुकुमाल अणगारने मेरे को कल दिन के पूर्व भाग पिचले भाग के बीच अर्थात् दोपहर के समय वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार कहाः—हे भगवान् ! आपकी आज्ञा से एकरात्रि की महाप्रार्थना को वहन करने की मैं इच्छा करता हूँ । यावत् भजे उसे आज्ञा दी, उससे वह उस महा प्रार्थना को धारण कर महाकाल इमशान में जाकर कायोत्सर्ग ध्यान में खड़ा रहा ।

मूलः—तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासति, पासित्ता आसुरुत्ते जाव सिद्धे । तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्टे साहिते अप्पणो अट्टे ।

अर्थः—उसके बाद उस गजसुकुमाल अणगार को एक पुरुष ने देखा । देख कर वह तत्काल क्रोधानुर हो गया यावत् उसने गजसुकुमाल के साथ पूर्व कथनानुसार उपसर्ग किया और उसके परिणाम से अंत में वह गजसुकुमाल अणगार केवल ज्ञान प्राप्त कर सिद्धि पद को प्राप्त हो गया । इस कारण से इस प्रकार निश्चय करके है कृष्ण ! उस गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ साधन किया है २ ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिठ्ठनेमिं एवं वयासी—केस णं भंते ! से पुरिसे अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिते जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियातो ववरोविते ? ।

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेवने अरिहन्त अरिष्ठनेमि भगवान् से इस प्रकार पूछा कि—हे भगवान् ! मृत्यु की चाह करने वाला यावत् लज्जाहीन वह ऐसा कौन पुरुष है कि जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल अणगार का अकाल मृत्यु की है ? ।

मूल—तए णं अरहा अरिट्ठेनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं कणहा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावजाहि, एवं खलु कणहा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिजे दिन्ने ।

अर्थ—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष पर द्वेष धारण मत करना; क्योंकि इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार को कर्म क्षय करने के लिये सहायता दी है ।

मूल—कहणं भंते ! ते णं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहिजे दिन्ने ? ।

अर्थ—कृष्ण वासुदेव ने पूछा कि हे भगवन् ! किस प्रकार उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार को सहायता दी ।

मूल—तए णं अरहा अरिट्ठेनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कणहा ! तुमं ममं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे वारवतीए नयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुपविसिते । जहा णं कणहा ! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिजे दिन्ने, एवमेव कणहा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्ससंचियं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरत्थं साहिजे दिन्ने ।

अर्थ:—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा:—हे कृष्ण ! अभी तुम निश्चय करके मेरे चरण में वंदना करने के लिये शीघ्रता से आरहे थे, उस वक्त द्वारिका नगरी के बीच तुमने एक वृद्ध पुरुष को ईंट उठाता देखा था यावत् उसकी सब ईंटों का ढेर तुमने उसके घर में रख दिया, तो हे कृष्ण ! जिस प्रकार तुमने उस पुरुष की सहायता की, उसी प्रकार हे कृष्ण ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार के अनेक लाखों भवों के संचय किये हुए (एकत्रित किये हुए) कर्म बंधकी उद्दीरणा करके बहुत कर्मोंका नाश करने में सहायता दी है।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं एवं वयासी—से णं भंते ! पुरिसे मए कंहं जाणियव्वे ?
अर्थ:—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् से पूछा—कि हे भगवन् ! उस पुरुष को मैं किस प्रकार जानूँ अर्थात् पहचानूँ ? ।

मूल—तए णं अरहा अरिष्टनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जे णं कण्हा ! तुमं वारवतीए नयरीए अणुपविसमाणे पासेत्ता ठितए चेव ठितिभेएणं कालं करिस्सति, तणं तुमं जाणेज्जासि एस णं से पुरिसे ? ।

अर्थ:—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि—हे कृष्ण ! तुम द्वारिका नगरी में प्रवेश करते समय तुम को देख कर उसी जगह दरवाजे में खड़ा हुआ ही भयके कारण अध्यव-

सायरूप उपक्रमण द्वारा आयुष्य पूरा होने से मृत्यु प्राप्त करेगा, उस वक्त तुम जानना कि वह यही पुरुष है।
मूल— तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्वनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं
हृथिरयणं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हृथिं दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव वारवती णयरी जेणेव सए
गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ:—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना
नमस्कार कर जहाँ पद्माभिषेक हाथी रत्न था वहाँ आये। आकर हाथी के उपर चढ़े। चढ़ कर जहाँ द्वारिका नगरी
थी और जहाँ अपना घर था, उसी तरफ चलने की तैयारी की।

मूल—तएणं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पन्ने—एवं खलु
कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्वनेमिं पायवंदए निगते, तं नायमेयं अरहता विणायमेयं अरहता सुतमेयं अरहता
सिद्धमेयं अरहता भविस्सइ कणहस्स वासुदेवस्स, तं न नज्जति णं कण्हे वासुदेवे ममं केण वि कुमारणेणं
मारिस्सति ति कट्ठु भीते सयातो गिहातो पडिनिक्खमति, कणहस्स वासुदेवस्स वारवतिं नगरिं अणुपवि-
समाणस्स पुरतो सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागते ।

अर्थ:—उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मण के मनमें दूसरे दिन प्रातःकाल यावत् सूर्य देदीप्यमान हुआ तब उसको इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके कृष्ण वासुदेव आज अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् के चरण बंदन करने के लिये निकले हैं। इस से अरिहंत तो यह बात जानते हैं, अरिहंत तो विज्ञानी हैं, अरिहंत ने यह बात सुनी है और सिद्धही हैं तो अरिहंत ने यह बात कृष्ण वासुदेव से कही होगी इससे मैं नहीं जानता कि कृष्ण वासुदेव सुझे किस कुमरण द्वारा मारेंगे? इस प्रकार विचार करके भयभीत हुआ, धरता हुआ अपने घर से बाहर निकला और द्वारिका नगरी में प्रवेश करते हुए कृष्ण वासुदेव के सामने यानी बराबरी पर शीघ्रता से आया।

मूल—तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीते य चेव ठिते भेयं कालं करेति धरणितलंसि सब्वंगेहिं धसन्ति संनिवाडिते ।

अर्थ—उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को एक दम देख कर भय भीत हुआ और खड़े ही अपना आयु पूर्ण होने से कराल काल के सुख में कवलित होकर धड़ाक से पृथ्वी तल पर गिरगया।

मूल:—तए णं से कणहे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासति, पासित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिय जाव परिवज्जिते जेण ममं सहोयरे कनीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले

चेव जीवियाओ ववरोविए सि कट्टु सोमिले माहणं पाणेहिं कड्डावेत्ति, कड्डावित्ता नं भूमिं पाणिगणं अट्ठमो-
क्खावेत्ति अट्ठमोक्खावित्ता, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते संयं गिहं अणुपविट्ठे ।

अर्थ:— उसके बाद उन कृष्णवामुद्वय ने सोमिल ब्राह्मण को देया। देय कर उस प्रकार कहा:— अट्ठो देवानु-
प्रियो (लोगों)! यह सोमिल नामक ब्राह्मण मृत्यु की चाह करने वाला यमी निर्दिष्ट है कि लिम्बे मेरे सहोदर चंडे
भाई गजसुकुमाल की अकाल में ही मृत्यु की है। इस प्रकार कहकर उस सोमिल ब्राह्मण के शरीर (लाश) को बाण्डा-
लों के द्वारा बाहर निकलवाया। निकलवा कर उस भूमि पर पानी छिड़कवा कर जहाँ अपना
घर था वहाँ आँव और अपने घर में प्रवेश किया।

मूल:— एवं खट्टु जंत्रं ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगट्टसाणं नचस्स
वगस्स अट्ठमत्तयणस्स अयमट्ठे पट्ठत्ते (सू० ६)

अर्थ:— इस प्रकार निश्चय करके हे जन्तु ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पट्ठ को पाये हुए श्री महावीर व्यापी
ने आठवें अंग अंतगट्टमा के तीसरे वर्ग के आठवें अध्ययन का यह अर्थ कहा है। (सू० ६)

॥ इति अष्टम अध्ययन संपूर्णं ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम अध्ययन ॥

मूलः—नवमस्स उ उक्खेवओ ।

अर्थः—जम्बू स्वामीने सुधर्मस्वामी से पूछा कि हे भगवन् ! आठवें अध्ययन का श्रीमहावीर स्वामीने यह अर्थ कहा है तो अब नववें अध्ययन का कौनसा अर्थ कहा है उसे वर्णन करिये ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू । ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीए नयरीए जहा पढमए जाव विहरति । तत्थ णं वारवतीए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, वन्नओ ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिसकाल तिससमय में द्वारिका नामक नगरी थी वगैरह सर्व वृत्तान्त प्रथम अध्ययन की तरह कहना । यावत् नेमिनाथ भगवान् पधारे । उस द्वारिका नगरी में बलदेव नामक राजेन्द्र थे, उनका वर्णन करना ।

मूलः—तस्स णं बलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था, वन्नओ । तते णं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे, नवरं सुमुहे नामं कुमारे, पन्नासं कन्नाओ, पन्नासदाओ, चोद्दस पुब्बाइं अहिज्जति वीसं

वासाइं परियातो, सेसं तं चैव, सेत्तुजे सिद्धे, निक्खेवओ । एवं दुम्भुहे वि कूवदारए वि, तिमि वि बलदेव-
धारिणीसुया । दारुए वि एवं चैव, नवरं वसुदेवधारिणीसुते । एवं अणाधिदी वि वसुदेवधारिणीसुते ।

अर्थ:—उन बलदेव राजेन्द्र के धारणी देवी नामक राणी थी, उसका वर्णन कहना । उसके बाद उस धारिणी राणी ने एक समय स्वप्न में सिंह देखा वगैरह सब गौतम कुमार की तरह कहना । विशेष यह है कि मुमुव नामक कुमार हुआ, उस का पचास कन्याओं के साथ लग्न किया । पचास २ कोटि द्रव्य का दहेज दिया । फिर उमने दीक्षा ग्रहण की । चौदह पूर्वों का अभ्यास किया । बीस वर्ष धारिण्यवस्था का पालन किया । शेष सब पहले अध्ययन की तरह कहना । अन्त में शंभुजयगिरिराज पर सिद्ध हुए । यह नवंबर अध्ययन का स्वरूप कहा । इसी प्रकार दुर्मुखकुमार का ढसवाँ और कूपटारककुमार का ग्यारहवाँ जानना । ये तीनों बलदेव और धारिणी के पुत्र थे । ठारुककुमार का बारहवाँ अधिकार भी इसी प्रकार कहना । विशेष यह है कि यह वसुदेव और धारिणी के पुत्र थे । इस प्रकार अनाष्टि तेरहवाँ भी वसुदेव और धारिणी का पुत्र था । सबों का अधिकार एक ममान कहना । यावत् ये सब शंभुजय तीर्थपर मुक्ति पाये हैं ।

मूल:—एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगट्टसाणं तच्चस्स त्रगस्स

तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते (सूत्र ७) ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! अमण भगवान् यावत् सिद्धिपद को पाये हुए श्री महावीर स्वामीने आठवें अंग अंतगडसा के तीसरे वर्ग के तेरहवें अध्ययन का यह अर्थ कहा है । (सू० ७)

॥ इति त्रयोदश अध्ययनरूप तीसरा वर्ग समाप्तः ॥

॥ अथ चतुर्थ वर्ग ॥

मूलः—तइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स वगस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ:—जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! अमण भगवान् यावत् सिद्ध पदको पाये हुए श्रीमहावीर स्वामीने तीसरे वर्गका यह अर्थ कहा है, तो अब चौथे वर्ग का महावीर स्वामीने कौनसा अर्थ कहा है । वह बतलाइये ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू ! समणेणं जात्र संपत्तेणं चउत्थस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा
'जालि १ मयालि २ उवयाली ३ पुरिससेणे ४ य वारिसेणे ५ य । पज्जुन्न ६ संबं ७ अनिरुद्धे ८ सच्चनेमी
९ य दढेनेमी १० ॥ १ ॥

अर्थः—इस प्रकार निश्रय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्रीमहावीर,
स्वामी ने चौथे वर्ग के दश अध्ययन इस प्रकार कहे हैंः—पहला जालि, दूसरा मयालि, तीसरा उवयालि, चौथा
पुरुषसेन, पाँचवाँ वारिसेण, छठा प्रजुम्न, सातवाँ शांभ, आठवाँ अनिरुद्ध, नववाँ सत्यनेमि और दशवाँ दढेनेमि
इन दश कुमारों के नाम से दश अध्ययन हैं ।

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जात्र संपत्तेणं चउत्थस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं
भंते अज्झयणस्स के अठे पन्नते ? ।

अर्थः—हे भगवन् ! जो श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुये श्री महावीर स्वामी ने चौथे वर्ग के
दश अध्ययन कहे हैं तो हे भगवन् ! चौथे वर्ग के पहले अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चारवती णगरी तीसे जहा पढमे कण्हे

वासुदेवे आहेवचं जाव विहरति ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्भू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उस में पहले अध्ययन में करे अनुसार कृष्ण वासुदेव अधिपतिपना भोगते हुए यावत् रहते थे ।

मूल—तत्थ णं वारवतीए णगरीए वसुदेवे राया, धारिणी देवी, वन्नओ । जहा गोयसो नवरं जालिकुमारो, पद्मासओ दाओ, वारसंगी, सोलस वासा परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुजे सिद्धे ।

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में वसुदेव नामक राजा थे, उनके धारिणीदेवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना । उस राणी के गौतम कुमार के समान पुत्र हुआ । विशेष यह है, कि उसका नाम जालिकुमार रखा, पचास कन्याओं से लग्न कराया और उसको पचास ऋद्ध का दहेज दिया । फिर उसने दीक्षा ग्रहण की, बारह अंगों का अभ्यास किया । सोलह वर्ष तक धारिणी को पालन किया । शेष सब वर्णन गौतम कुमार की तरह कहना यावत् शत्रुंजयगिरि तीर्थराज पर सिद्ध हुआ ॥ १ ॥

मूल—एवं मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य, एवं पज्जुन्ने वि त्ति, नवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माता । एवं संवे वि, नवरं जंबवती माता । एवं अनिरुद्धे वि, नवरं पज्जुन्ने पिया वेदव्भी माया ।

एवं सच्चनेमी, नवरं ससुहृद्विजये पिता सिवा माता । एवं दृढनेमी वि । सञ्चे पृगगमा । चउदथवगगस्स
निक्खेवओ (सू०८)

अर्थ—इसी प्रकार २ मयाहि, ३ उबयाहि, ४ पुरयसेन, ५ वारिसेण और ६ प्रमुन्न इन पाँचों कुमारों का
आधिकार समान जानना, विशेष है कि इनके पिता कृष्ण बासुदेव और माता रुक्मिणी भी । इसी प्रकार ७ मांभ
कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनका पिता कृष्ण और माता जांबुवती भी । इसी प्रकार ८ अनिरुद्ध
कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनका पिता प्रमुन्न कुमार और माता वैदर्भी भी । इसी प्रकार ९
सत्यनेसि कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनके पिता समुद्रविजय जी और माता त्रिवांश्री भी ।
इसी प्रकार १० दृढनेमिका अध्ययन कहना । सबों का एक समान ही अधिकार है । ये भी सब शत्रुनाय पर मुक्ति
गये हैं । इस प्रकार चौथे वर्ग के दशों अध्ययनों का स्वरूप कहा ।

॥ इति चौथे वर्ग के दश सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पंचम वर्ग ॥

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स, वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगढदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थः—जम्बू स्वामी सुधर्मस्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! भ्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने चौथे वर्ग का यह अर्थ कहा है तो अय हे भगवन् ! अंतगढदसा के पांचवें वर्ग का भ्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने किस प्रकार का अर्थ कहकर समझाया है ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—
‘पउमावती १ य गोरी २ गंधारी ३ लम्बवणा ४ सुसीमा ५ य । जंबवई ६ सच्चभामा ७ रुप्पिणि ८ मूलसिरि ९ मूलदत्ता १० वि ॥ १ ॥’

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! भ्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पांचवें वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, उनके नाम इस प्रकार हैंः— पद्मावती १, गौरी २, गांधारी ३,

लक्ष्मणा ४, सुसीमा ५, जाम्बवती ६, सत्यभामा ७, रुक्मिणी ८, मूलश्री ९ और मूलदत्ता १० इन दश राणियों के नाम से दश अध्ययन कहे हैं ।

मूलः—जइ णं भंते ! पंचमस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थः—हे भगवन् पांचवें वर्ग के दश अध्ययन श्री महावीर स्वामी ने कहे हैं तो हे भगवन् ! पांचवें वर्ग के पहले अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवती नगरी, जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेत्तच्चं जाव विहरति । तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावइ नाम देवी होत्था, वन्नओ ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी श्री वंशरह पहले अध्ययन की तरह कहना । यावत् उस नगरी में कृष्ण वासुदेव अधिपति बनकर रहते थे । उन कृष्ण वासुदेव की पद्मावती देवी नामक राणी थी उसका वर्णन करना ।

मूलः— ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठेनेमि समोसेढे जाव विहरति । कण्हे वासुदेवे

णिग्गते जाव पज्जुवासति ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् वहाँ पधारे, यावत् योग्य स्थान लेकर रहे । उस वक्त उनको बंदना करने के लिये कृष्णवासुदेव नगरी से निकले, यावत् भगवान् की सेवा करने लगे ।
मूलः—तए णं सा पउमावती देवी इमीसे कहाए लच्छडा समाणी हट्ट तुट्ट जहा देवती जाव पज्जु-
वासति ।

अर्थः— उसके बाद वह पद्मावती देवी इस यृतान्त का अर्थ जान कर यानी भगवान् के पधारने की बात सुन कर देवकी देवी की तरह हट्ट तुट्ट होकर भगवान् के पास जाकर यावत् भगवान् की सेवा करने लगी ।
मूलः—तए णं अरिहा अरिष्टनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावतीए य धम्मकहा, परिसा पडिगया ।

अर्थः— उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव तथा पद्मावती देवी वीरह पर्यदा को धर्म कथा कही । जिसको सुन कर पर्यदा अपने २ स्थान पर गई ।
मूलः—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

इमीसे णं भंते ! वारवतीए नगरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए किंमूलाते विणासे भविस्सति ? ।

मूलः—कण्हाति अरहं वासुदेवमि कण्हं वासुदेवं एव वयासौ—एवं खलु कण्हा ! इमीस वारवततं

नयरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए सुरगिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सति ।

अर्थः— हे कृष्ण ! ऐसा संबोधन करके अरिहंत अरिप्रनेमि भगवान् ने इस प्रकार कहा इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण ! यह द्वारिका नगरी नव योजन विस्तार वाली यावत् देवलोक के समान है इसके विनाश होने में मद्य (शराब), अग्नि और द्वीपायन ये तीन कारण होंगे, क्योंकि कुमारी को उन्मत्त करवाली मदिरा; अग्नि कुमार देव ने प्रज्वलित की हुई अग्नि और द्वीपायन यानी मदिरा पान से उन्मत्त हुए तुम्हें कुमारी के दुःख देने से द्वारिका विनाश करने का नियाना करने वाला उक्त नाम का बालतपस्वी कि जो आग्नि कुमार देव अग्नि कुमार देव अग्नि लगाने वाला द्वीपायन नामानि तपस्वी ही द्वारिका का नाश करने के लिये कारण भूत होगा ।

मूलः—तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहतो अरिट्ठेभिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

अवभथिए समुपपन्ने - धन्ना णं ते जालि-मयालि-उवयाली-पुरिससेण वारिसेण-पब्जुन्न-सांव-अनिरुद्ध-दढनेमि सच्चनेमिप्पभियातो कुमारो जे णं चइत्ता हिरन्नं जाव परिमाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वतिया। अहणं अथन्ने अकयपुन्ने रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु सुच्छित्ते नो संचाएमि अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वतित्तए।

अर्थ:— इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास से इस प्रकार की बात सुनकर हृदय में धारण करने से इस प्रकार विचार किया कि वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरुपसेन, वारिणेण प्रपुम्न, शांघ, अनिरुद्ध, दढनेमि और सत्यनेमि वगैरह कुमारों धन्य है कि जिन्होंने राज, स्वर्ण वगैरह का त्याग कर यावत् अपने हिस्से को दान देकर अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की है। मैं ही सिर्फ अप्रशंसित एवं अधन्य पुण्य हीन हूं, तथा राज के लिये यावत् अंत:पुर (रणवास) के लिये और मनुष्य सम्बन्धी काम भोग के लिये अनुरागी मुर्छित हूं, जिससे मैं अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास यावत् दीक्षा लेने को असमर्थ हूं।

मूल:—कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेव एवं वयासी- से नूणं कण्हा ! तव अयमवभथिए समुपपन्ने-धन्ना णं ते जाव पव्वतित्तए से नूणं कण्हा ! अयमंटे समंटे ? हंता अत्थि ।

अर्थ:—हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण ! तुमको यह विचार उत्पन्न हुआ है कि वे कुमार धन्य हैं कि जिन्होंने दीक्षा ग्रहण की है और मैं दीक्षा ले नहीं सकता । तो निश्चय करके हे कृष्ण ! यह बात सच्ची है ? कृष्ण वासुदेवने ने कहा— हां भगवान् यह सच्ची है ।

मूल:—तं नो खलु कण्हा ! तं एवं भूअं वा भव्वं वा भविस्सति वा जअं वासुदेवा चइअं वासुदेवो ने जाव पव्वइस्संति ।

अर्थ:—तो निश्चय करके हे कृष्ण ! ऐसा हुआ नहीं, हो सकता नहीं और होगा भी नहीं कि जो वासुदेवों ने राज्य का त्याग कर स्वर्ण छोड़ यावत् दीक्षा ग्रहण की हो, ग्रहण करते हो या ग्रहण करेंगे ।

मूल:—से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ— न एयं वा जाव पव्वइस्संति ? ।

अर्थ:—हे भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहते हो कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवोंने दीक्षा ग्रहण की नहीं ? ।
मूल:—कण्हाति ! अरहा अरिष्टनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी — एवं खलु कण्हा सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा, से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं बुच्चति — न एयं भूयं जाव पव्वइस्संति ।

अर्थ:—हे कृष्ण ! ऐसा सम्योधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण ! सब वासुदेवों ने पूर्वभ्रम में नियाणा किया हुआ होता है, नियाणे करने वाले को चारित्र्य उदय आता नहीं इसलिये इस कारण से हे कृष्ण ! मैं ऐसा कहता हूं कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवों ने दीक्षा ली नहीं ।

मूल—तए णं से कणहे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं एवं वयासी-अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किञ्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ? ।

अर्थ:—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से इस प्रकार कहा कि- हे भगवन् ! मैं यहाँ से आयुष्य को पूरा कर कहाँ जाऊँगा ? कहाँ उत्पन्न होऊँगा ? ।

मूल—तए णं अरिहा अरिष्टनेमि कणहं वासुदेवं एवं वयासी- एवं खलु कणहा ! वारवतीए नयरीए सुरदीवायणकोवनिद्दुडाए अस्मापिइनियगविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणेत्रेयालिं अभिसुहे जोहिट्टि- ह्यपामोक्खणं पंचणहं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिते कोसंबवणकाणणे नगोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीतवत्थपच्छाइयसरिरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पादे विद्धे

समाणे कालमासे कालं किञ्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके दे कृष्ण ! द्वारिका नगरी अग्निकुमार में देव उत्पन्न होने वाले द्वीपायन के कोप से जल कर भस्म हो जायगी तब माता पिता और स्वजन रहित होने से तुम अकेले ही बलदेव के साथ दक्षिण दिशा के समुद्र के किनारे बसी हुई पांडु मथुरा नामक नगरी की तरफ युधिष्ठिर वगैरह पांडु राजा के पुत्र पांचों पाण्डवों के पास जाने के लिये चलोगे । उस वक्त रास्ते में कौशांबी नगरी के जंगल में श्रेष्ठ बड़ वृक्ष के नीचे पृथ्वीशीला पट्टक पर पीले वस्त्र से गरिर को ढक कर सोओगे । उस वक्त जरा कुमार के धनुष में से छोड़ा हुआ तीक्ष्ण बाण द्वारा दाहिना पैर विंध जाने से आयु समय आयुष्य पुरा कर उज्वल वेदना वाली बालुकप्रभा नामक तीसरी नरक पृथ्वी में नर्कावस्था में उत्पन्न होओगे ।

मूल—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओह्य जाव

क्षियाति ।

अर्थ—इस के बाद कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से यह अर्थ सुन कर तथा हृदय में धारण कर शून्य चित्त से संकल्प विकल्प करते हुए विचार करने लगे ।

मूलः—कण्हाति ! अरहा अरिष्टनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे आगमेसीए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे वारसमे अमसे नामं अरहा भविस्ससि, तत्थ तुमं वहुइं वासाइं केवल्लिपरियागं पाउणेत्ता सिञ्जिहिसि ।

अर्थः— इसके बाद हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से कहा कि हे देवानुप्रिय ! तुम आर्तध्यान (दुःखी मत होओ) मत करो; क्योंकि तुम प्रबल वेदना वाली तीसरी नरक पृथ्वी से अंतरा रहित बाहर निकल कर इसी जम्बु द्वीप नामक द्वीप के भारत वर्ष में आती उत्सर्पिणी काल में पुंड्र देशान्तर्गत शतद्वार नामक नगर में वारहवे अमम नामक अरिहंत होओगे । वहां तुम बहुत वर्षों तक केवली पर्याय को पालकर सिद्ध पद को प्राप्त करोगे । बुद्ध होओगे और कर्म रहित होकर सब दुःखों का अन्त करोगे ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिष्टनमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ठ अप्फोडेति, अप्फोडित्ता वग्गति, वग्गित्ता तिवतिं छिंदति, छिंदित्ता सीहनायं करेति करित्ता, अरहं अरिष्टनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थि दुरुहत्ति, दुरुहित्ता जेणेव वारवती णगरी जेणेव

सए गिहे तेणेव उवागते, अभिसेयहत्थिरयणातो पच्चोसहति, पच्चोसहिता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुविय पुरिसे सदावेति, सदाविता एवं वयासी—

अर्थ:— इसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पाससे यह अर्थ कान द्वारा सुन कर हृदय में धारण कर छुटतुष्ट होकर भुजाओं का आस्फालन किया, करके उछाल मारी, उछाल मारकर त्रिपदी यानी रंगभूमि ऊपर रहे हुए योद्धा के समान तीन डगले स्थापन क्रिये अर्थात् तीन फलांग कुदकर सिंहनाद किया। सिंहनाद करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके अपने पट्टाभियेक हाथी पर चढ़े। चढ़कर जहाँ द्वारिका नगरी थी और जहाँ अपना घर था वहाँ आये। आकर पट्टाभियेक हस्ती रत्न से नीचे उतरे, उतर कर जहाँ अपना सभा मण्डप था और जहाँ अपना सिंहासन था वहाँ आये। आकर उस श्रेष्ठ सिंहासन पर पूर्व दिशा तरफ मुंह करके बैठे, बैठ कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाये, बुला कर इस प्रकार उनसे कहा कि:—

मूल:—गच्छह णं तुव्भे देवाणुष्पिया ! वारवतीए नयरीए सिंवाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह—

एवं खलु देवानुष्पिष्या ! वारवतीए नयरीए नवजोयण जाव भूयाए सुरगिदीवाणमूलाए विणासे भविस्सति, तं जो णं देवानुष्पिष्या ! इच्छति वारवतीए नयरीए राथा वा जुवराया वा ईसरे तलवरे मांडविय कोडुंविय इब्भ सेट्टी वा देवी वा कुमारी वा अरहतो अरिष्टेनेमिस्स अंतिए मुडे जाव पव्वइत्तए, तं नं कण्हे वासुदेवे विसज्जेति, पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणति, महता इड्ढीसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेति दोच्चं पि तच्चं पि घोसयणं घोसेह, घोसइत्ता मम एयं आणत्तियं पच्चपिणह । तए णं ते कोडुंवियपुरिस्ता जाव पच्चपिणंति ।

अर्थः— हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारिका नगरी के तीनकोन वाले (तीन रास्ते जहाँ मिले हों) वगैरह सब मार्गों से यावत् उद्घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो कि निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! यह द्वारिका नव योजन के विस्तार वाली यावत् स्वर्ग के समान है, इसका मदिरा, अग्नि और द्वीपायन तपस्वी के निमित्त से नाग होने वाला है इसलिये हे देवानुप्रियो ! इस द्वारिका नगरी में जो कोई राजा, युवराज, राज कुमार, ईश्वर, प्रधान, तलवर (राजा का प्रिय), मांडविक (पेटल), कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी (सेठ), राणी, कुमार अथवा कुमारी अरिहंत अरिष्टेनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करते हो, उन सबों को कृष्ण वासुदेव

आज्ञा देते हैं तथा दीक्षा लेने वालों ने अपने शेष कुटुम्ब को छोड़ दिया हो और उनका निर्वाह करने में जिसका मन दुःखी होता हो उनकी जिस प्रकार पहले बंधी हुई आजीविका होगी उसी प्रकार हम देंगे; परन्तु आजीविका को उत्पन्न करने वालों ने दीक्षा लेने से पछि निर्वाह करने लायक मनुष्यों की आजीविका हम बंद करेंगे नहीं और यड़ी समृद्धि तथा सत्कार समुदाय से उनका दीक्षा महोत्सव भी हम ही करेंगे। इस प्रकार दो बार, तीन बार उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके यह भरी आज्ञा वापस लाओ। तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी प्रकार करके यावत् उनको आज्ञा को वापिस कर दिया।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी अरहतो अरिद्वेनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जाव हियया अरहं अरिद्वेनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी - सद्दहामि णं भंते ! णिगगंथं पावयणं से जहेतं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिये ! मा पडिवंथं करेहि ।

अर्थः—उसके बाद उस पद्मावती देवी ने भी अरिहंत अरिद्वेनेमि भगवान् के पास से धर्म दर्शना को सुन कर हृदय में धारण कर हट्ट तुट्ट होती हुई यावत् हृदय में आनन्द मनाती हुई अरिहंत अरिद्वेनेमि भगवान्

को बंदना की, नमस्कार किया। बंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन (साधुधर्म) की श्रद्धा करती हूं कि जो आप ने अभी बतलाया है, विशेषयह कि हे देवानुप्रिय ! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर उसके बाद आप महानुभाव देवानुप्रिय के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा। प्रभु ने कहा-हे देवानुप्रिया ! जिस प्रकार तुम्हें सुख उत्पन्न हो वैसा करो। धर्म कार्य में विलंब नहीं करना चाहिये।

मूलः— तए णं सा पउमावती देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति, दुरूहिता जेणेव वारवती नगरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवगच्छति, उवागच्छिता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता करयल जाव कट्टु एवं वयासी - इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णया समाणी अरहतो अरिट्ठेनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिए।

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी श्रेष्ठ धार्मिक वाहन के ऊपर चढ़ी। चढ़ कर जहाँ द्वारिका नगरी थी और जहाँ अपना घर था वहाँ आई। आकर धार्मिक वाहन से नीचे उतरी। नीचे उतर कर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आई। आकर दोनों हाथ जोड़ कर यावत् मस्तक पर अंजली लगा कर इस प्रकार कहने लगी- हे देवानुप्रिय ! मैं इच्छा करती हूं कि आपकी आज्ञा पाकर मैं अरिहंत अरिट्ठेनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूं। यह

सुनकर कृष्ण वासुदेव ने कहा है देवानुप्रिया ! जिस प्रकार तुमको सुख उत्पन्न हो वैसा कार्य शीघ्र करो ।

मूलः— तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुविय पुरिसे सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! पउमावतीए देवीए महत्थं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक मनुष्यों को बुलाये । बुला कर इस प्रकार कहा— हे देवानुप्रियो ! पद्मावती देवी के लिये अधिक मूल्य वाली दीक्षा महोत्सव के अभियेक की सामग्री शीघ्रातिशीघ्र तैयार करो । तैयार करके यह मेरी आज्ञा मुझे वापस करो । इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी प्रकार सामग्री तैयार करके यावत उनकी आज्ञा वापस की ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावतीं देवीं पट्ठयं दुरुहति, अट्टसएणं सोवन्नकलसं जाव महानि—
इल्लमणाभिसएणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता सब्वालंकारविभूसियं करेति करित्ता पुरिससहससवाहिणं सिवियं
रदावेति, रदावित्ता तं सिवियं दुरुहति, दुरुहित्ता वारवतीणगरीमज्झमज्जेणं निगच्छति, निगच्छित्ता

जेणेव रेवतए पववए जेणेव सहसंबवण उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता सीयं ठवेति, ठवित्ता पउमावती देवी सीयाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिहनेमि तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिहनेमीं तिवखत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी-

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती देवी को पाट के ऊपर बैठाया । बैठा करके गरुसौ आठ स्वर्ण के कलसों स यावत् अपनी राज्य समृद्धि के अनुसार उसका यज्ञमारी दीक्षा संबंधी अभिषेक किया । अभिषेक करके सब प्रकार के अलंकारों से सुशोभित की । सुशोभित करके हजार मनुष्यों से उठे ऐसी शिथिका तैयार करा कर उस शिथिका में बिठलाई । बिठला कर द्वारिका नगरी के मध्य २ होकर निकले । निकल कर जहाँ रैवतरु पर्वत था और जहाँ सहस्राश्रवन नामन उद्यान (बाग) था वहाँ आये । आकर शिथिका स्थापन किया । स्थापन करके पद्मावती देवी शिथिका से नीचे उतरी, उतर कर जहाँ अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहाँ मय आये आकर भगवान् को तीन वक्त प्रदक्षिणा की । करके वंदना की, नमस्कार कर कृष्णवासुदेव ने इस प्रकार कहा—

मूलः—एस णं भंते ! मम अगमहिंसी पउमावइ नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुत्ता मणामा अभिरामा जाव किमंग पुण पासणयाए ? तन्नं अहं देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिवखं दलयामि, पडिच्छंतु णं

देवाणुष्पिया ! सिस्सिणिभिव्खं । अहासुहं ।

अर्थः— हे भगवान् ! यह मेरी पटरानी पद्मावती नामक देवी इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम, अभिराम यावत् (गूढर के पुष्प के समान सुनने में दुर्लभ है) वैसी देखने में दुर्लभ हो इससे क्या कहना ? ऐसी उसको मैं हे देवानुप्रिय ! आपको शिष्या रूप भिक्षा देता हूं । इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप इस शिष्यारूप भिक्षा को ग्रहण करो । तब भगवान् ने कहा— जिसमें तुमको सुख पैदा हो वैसा करो ।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी उत्तपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति, ओमइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लायं करेति, कारित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेभिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी— आलित्ते जाव धम्ममसाइविसवतं ।

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी उत्तर और पूर्य दिशा के बीच इज्ञान कौन में गई । जाकर स्वतः अपने हाथ से आभूषण (अलंकार) निकाले, स्वतः ही पांच मुट्टे द्वारा लोच किया, लोच करके जहाँ अरिष्टं अरिट्ठनेभि भगवान् थे वहाँ आई । आकर भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—हे भगवान् ! यह संसार आदीप्त जलरहा है यावत् प्रदीप्त अतीव जलरहा है अर्थात् यद् संसार राग-

द्वेष-विषय-रूपाय-मोहमाया आदि से जन्म जरा मरण आदि दुःखों से व्याप्त है इसलिये इन दुःखों से छुटने के लिये मैं आपके शरणे आई हूँ, इससे मैं इच्छा करती हूँ कि आप मुझे दीक्षा दो, यावत् आचार, गौचरी, विनय, वैनियक, करण-सीतरी, चरण सीतरी और प्राणयात्रा (धारण) के लिये जिसमें निर्दोष आजीविता हो ऐसा धर्म मुझसे रह्यो ।
मूलः—तते णं अरहा अरिद्धनेमि पउमावतीं देवीं सयमेव पव्वावेति, पव्वाविता सयमेय मुंडावेति, सयमेव जक्खिणीते अजाते सिस्सिणिं दलयति ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने पद्मावती देवी को दीक्षा दी । दीक्षा देकर मुंड ॐ ती और आपने ही यक्षिणी नामक साध्वी को शिष्या रूप में दी ।

मूलः—तते णं सा जक्खिणी अजा पउमावइं देवीं सयं पव्वावेइ जाव संजमियव्वं ।

अर्थः—उसके बाद यावत् उम यक्षिणी साध्वी ने पद्मावती देवी को स्वतः दीक्षा दी यावत् धर्मोपदेन दिया कि चारित्र पालन करने के लिये तुमको इस प्रकार यत्न करना चाहिये इत्यादि ।

मूलः—तए णं सा पउमावती जाव संजमइ । तते णं सा पउमावती अजा जाता ईरियासमिया जाव
* मुख्य शिष्या यक्षिणी साध्वी के हाथ से केश लेने पर रूप लोच किया सशमना चाहिये ।

गुप्तवंभयारिणी ।

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती देवी यावत् संयम में यत्न करने लगी । जिससे वह पद्मावती साध्वी इर्यासमिति, भाषासमितियुक्त यावत् मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, गुप्त इन्द्रिय अर्थात् गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने में तत्पर हुई ।

मूल:—तए णं सा पउमावइं अज्जा जक्खिणीते अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कास्स अंगाइं अहिज्जा ति, बहूहिं चउत्थछट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्ममेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरति.

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी यक्षिणी साध्वी के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यास करने लगी । तथा बहुत से उपवास, घेले (दो उपवास), तेले (तीन उपवास), चौला (चार उपवास), द्वादश (पांच उपवास), अर्धमास (पन्द्रह उपवास) और मास क्षमण (एक महीने के उपवास) वगैरह विविध प्रकार की तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को तप-संयम में भावती हुई विहार करने लगी ।

मूल:—तए णं सा पउमावइ अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेति, झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छंदति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइन्गभावे जाव तमटं आराहेति चरिसुस्सासेहिं सिद्धा (सू०९) । पंचम वग्गस्स पढममज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥१॥

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी बहुत परिपूर्ण थीस वर्ष चारित्र्यावस्था को पालन कर एक मास का अनशन करके अपने शरीर को सुखा दिया । सुखा कर अनशन के साठ भक्त का छेदन किया अर्थात् एक महीने का अनशन पूर्ण किया । अनशन पूर्ण कर जिसके लिये चारित्र्य ग्रहण किया था यावत् उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोश्वाससे सिद्धि पद को प्राप्त किया ।

यहां यावत् शब्द से यह जानने का है कि जिसने मोक्ष के लिये चारित्र्य अंगीकार किया, मुंड हुई, केशों का लोच किया । ब्रह्मचर्य का पालन किया, स्नानादि छोड़े, छत्री वगैरह रखना नहीं, नंगे पैर चलना, पृथ्वी पर शयन, आहार पानी वगैरह के लिये दूसरे घरों में जाना, आहारादि का लाभ तथा अलाभ हो होतो भी हर्ष शोक करना नहीं, मान या अपमान होने पर भी समभाव रखना, दूसरों की की हुई हिलना (आदर न करना), निन्दा (अपने मन में निन्दा करनी) खिसना (लोगों के सामने जाति वगैरह प्रकट करनी), तर्जना—हे लुच्चा ! तू क्या जानता है ? वगैरह बचन द्वारा बकना, ताड़ना (लात वगैरह मारना), घृणा (समक्ष में निन्दा करनी), उच्चावच अर्थात् अयोग्य बचन बोलना (विविधि प्रकारके अनुचित शब्द बोलना), बाईस परिपह उपसर्ग, इन्द्रियों रूपी कांटा वगैरह इन कष्टों को सहन किये और अंतमें उसने अनशन कर कर्म क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया ।

॥ इति पंचम वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं चारवई रेवतए उज्जाणे नंदणवणे, तत्थ णं चारतीए णगरीए कण्हे वासुदेवे राया । तस्स णं कण्हवासुदेवस्स गोरी देवी वन्नओ, अरहा अरिष्टनेमि समोसडे, कण्हे णिग्गाए, गोरी जहा पउमावती तथा णिग्गाया, धम्म कहा, परिसा पडिगया, कण्हे वि गये । तए णं सा गोरी जहा पउमावती तथा णिम्भवंता, जाव सिद्धा ।

अर्थ:—तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उसमें रेवतक नामक पर्वत और नंदनवन था । उस द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा राज्य करते थे, उन कृष्ण वासुदेव के गोरी देवी नामक राणी थी । उसका वर्णन करना । अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् प्यारे और कृष्णवासुदेव उनको बंदना करने के लिये गये । पद्मावती देवी की तरह गोरी देवी ने भी दीक्षा ग्रहण की यावत् सिद्धि पाई ।

इति पंचम वर्ग का दूसरा अध्यायन सम्पूर्ण ॥५॥ २॥

मूल:—एवं गंधारी, लम्बवणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुप्पिणी अट्ट वि पउमावती सरिसाओ अट्ट अज्झयणा (सू० १०)

अर्थ:—इसी प्रकार तीसरी गांधारी, चौथी लक्ष्मणा, पांचवीं सुसीमा, छठी जंबुवती, सातवीं सत्यभामा और आठवीं रुक्मिणी इन सब ही राणियों का दीक्षा लेना और तपश्चर्या करके अंतमें अनशन करके कर्म क्षय कर मोक्ष जाना आदि सब अधिकार पद्मावती के समान कहना, क्योंकि ये सब कृष्ण वासुदेव की राणियों थीं इन आठों के आठ अध्ययन कहने । अन्तिम दो अध्ययन कृष्ण वासुदेव के पुत्र की स्त्रियों के नामकें हैं । सू । १० ।

मूल:—ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीए नगरीए रेवतए नंदणवणे कण्हे वासुदेवे । तत्थ णं वारवतीए नयरीए कणस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबुवतीए देवीए अत्तए संवे नामं कुमारे होत्था, अहीण० ।

अर्थ:— तिस काल तिस समय में द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, वंदन वन उद्यान, कृष्ण वासुदेव राजेन्द्र राज्य करते थे । उस नगरी में कृष्ण वासुदेव का पुत्र जाम्बुवती देवी का आत्मज शास्व नामक कुमार था । उसके हाथ पैर वगैरह अवयव परिपूर्ण थे ।

मूल:—तस्सणं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था, वन्नओ । अरहा अरिद्धनेमी समोसेढे, कण्हे निगए, मूलसिरी वि णिगया जहा पउमावती, नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, जाव सिद्धा । एत्तं मूलदत्ता वि ॥ (सू० ११)

अर्थ:—उस शाम्ब कुमार की मूलश्री नामक स्त्री थी। उसका वर्णन करना। एक समय अरिहंत मरिचनेमि भगवान् पधारे। उनको बंदना करने के लिये कृष्ण वासुदेव गये और मूलश्री भी गई, पद्मावती की तरह सब कहना। विशेष यह है कि उसने प्रभु से कहा कि—हे देवानुप्रिय! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा प्राप्त कर इत्यादि पावत् वह आज्ञा प्राप्त कर दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसी प्रकार मूलदत्ता भी दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसका अध्ययन भी इसी प्रकार कहना ॥ सूत्र ० ११ ॥

॥ इति पंचम वर्ग समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ वर्ग ॥

—३४५३४२४६—

मूलः—जइ छट्स उक्खेवओ, नवरं सोलह अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—“ मंकाती १ किंकमे २ चेत्र मोगगराणी ३ य कासवे ४ खेमते ५ धित्तिधरे ६ चेत्र केलासे ७ हरिचंदणे ८ ॥ १ ॥ वीरत्त ९ सुदंसणे १० पुन्नभदे ११ सुमणभदे १२ सुपइटे १३ मेहे १४ । अइमुत्ते १५ अ अलम्बे १६ अज्झय-

णाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥ ”

अर्थ:—जम्बूस्वामीने सुधर्मस्वामी से पूछा कि—हे भगवन् ! पांचवे वर्ग का आपने यह अर्थ कहा है तो अब भगवान् महावीर स्वामी ने कथन किया हुआ छठे वर्ग का अर्थ कहो ? तब सुधर्मस्वामी ने कहा कि छठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं, वे इस प्रकार हैं:—पहला मंकाति, दूसरा किंकम, तीसरा सुद्गरपाणि, चौथा काश्यप, पांचवा क्षेमक, छठा धृतिधर, सातवाँ कैलाश, आठवाँ हरिचन्दन, नववाँ विरक्त, दशवाँ सुदर्शन, ग्यारहवाँ पूर्णभद्र, बारहवाँ स्वप्नभद्र, तेरहवाँ सुप्रतिष्ठ, चौदहवाँ मेघ, पन्द्रहवाँ अतिसुक्त और सोलहवाँ अलक्ष. इन सोलह नामों के सोलह अध्ययन कहे हैं ।

मूल:—जइ सोलस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अडे पन्नत्ते ? ।

अर्थ:—हे भगवन् ! जो छठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं; तो छठ वर्ग के पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ? ।

मूल:—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, मंकाती नामं गाहावइ परिवसति अइडे जाव अपरिभूए ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बु ! तिस काल तिस समय में राजगृह नामक नगर था । उसकी ईसाण कोण में गुणशील नामक चैत्य था । उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था । उस नगर में मंकाति नामक गाथापति रहता था । वह ऋद्धिवान् यावत् कोई भी उससे विजय प्राप्त न कर सके ऐसा समृद्धिशाली और पराक्रमी था ।

मूल:—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव विहरति, परिसा निगया ।

अर्थ:—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले गुणशील नामक चैत्य में यावत् पधारे । उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्यदा निकली ।

मूल:—तए णं से मंकाती गाहावइ इमीसे कहाए लद्धे जहा पन्नतीए गंगदत्ते तहेव, इमो वि जेदपुत्तं कुंडुवे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिव्वंते जाव अणगारे जाए इरियासमिए ।

अर्थ:—उसके बाद वह मंकाति नामक गाथापति भगवान् के आगमन की बात सुन कर प्रसन्न हुआ । जैसे भगवती सूत्र में गंगदत्त भगवान् को वंदना करने को गया था उसका अधिकार है; उसी प्रकार सब यहाँ

पर भी वर्णन करना । फिर यह मंकाति भी अपने बड़े पुत्र को कुटुम्ब पालन का भार सौंप कर हजार पुरुष उठावे ऐसी पालकी में बैठ कर निकला । यावत् वह अणगार हुआ हर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हुआ ।

मूलः— तए णं से मंकाती अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, से सं जहा खंदगस्स । गुणरयणं तवोकम्मं, सोलसवासाइं परियाओ, तेहव विपुले सिद्धे । किंकमे वि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे । (सू० १२)

अर्थः—उसके बाद उस मंकाति अणगार ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के तथाप्रकार के स्थविर मुनियों के पास सामायिक वर्गैरह ग्यारह अंगों का अभ्यास किया । शेष सब अधिकार स्कंदरु मुनि की तरह जान लेना । गुणरल संवत्सर नामक तपश्चर्या की, सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया । उसी प्रकार विपुलगिरि पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । किंकम नामक दूसरा अध्ययन भी इसी प्रकार कहना वे किंकम अणगार भी यावत् विपुलपर्वत पर सिद्ध हुए । (सू० १२)

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिय राया, चेछणा देवी ।
अर्थः—तिस काल तिस समय में राजगृह नगरी थी । उसकी बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य

था । उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था और उसके चेलणा देवी नामक राणी थी ।
मूल—तस्य णं रायगिहे अञ्जुणए नामं मालागारे परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूए ।
अर्थः—उस राजगृह नगर में अर्जुन नामक माली रहता था वह कद्धिमान् यावत् कोई उसमें न जीत सके इस प्रकार का था ।

मूल—तस्स णं अञ्जुणयस्स मालायारस्स वंथुमती णामं भारिया होत्था, सुमाला ।
अर्थः—उस अर्जुन माली के वन्धुमती नामक स्त्री थी । वह अत्यन्त कोमल सुकुमाल थी ।
मूल—तस्य णं अजुणयस्स मालयारस्स रायगिहस्स नगरस्स वहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था, कण्हे जाव निउरंवभूते

अर्थः—उस अर्जुन माली के राजगृह नगर के बाहर फूलों का एक बड़ा बगीचा था । वह कृष्ण (काला) और कृष्ण कांति वाला, नीला अर्थात् नीली कांति वाला वगैरह विशेषण युक्त यावत् मेघ के समूह के समान था । पांच प्रकार के पुष्पो से प्रकृष्टित और शोभायमान था तथा रमणीय आदि विशेषण वाला था ।

मूल— तस्स णं पुप्फारामस्स अट्टरसामंते तस्य णं अञ्जुणयस्स मालायारस्स अज्जतपज्जतपिति—

पञ्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खस्स जक्खस्स जक्खस्स जक्खे सच्चे जहा पुण्णभंदे ।

अर्थ:— उस पुष्पों के बाग के निकट उस अर्जुन माली के बाप, दादा और पड़ दादा आदि वंशके अनेक मनुष्यों की परंपरा से चला आता हुआ सुदुगरपाणि नामक यक्ष का चैत्य था । वह पूर्ण भद्र नामक चैत्य के समान पुराणा, दिव्य और सत्य वैररह प्रभाव युक्त था ।

मूल—तथ णं मोगगरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फणं अयोमयं मोगगरं गहाय चिद्धति ।
अर्थ:— उस चैत्य में सुदुगरपाणि यक्ष की प्रतिमा के हाथ में एक हजार पल लोहे का बना हुआ बड़ा सुदुगर था ।

मूल—तए णं से अज्जुणए सालागारे बालप्पभित्तिं चेव मोगगरपाणिजक्खभत्ते यावि होत्था, कल्ला-
कल्लिं पच्छियपिडगाइं गेणहति, गेणहत्ता रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमत्ति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुप्फा-
रामे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेति, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ, गहित्ता जेणेव
मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खस्स जक्खस्स जक्खस्स मुगरपाणिस्स उवागच्छति, उवागच्छित्ता मुगरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणयं

करेति करित्ता जानुपायवडिण् पणामं करेति, ततो पच्छा रायमगंगंसे वित्तिं कल्पेमाणे विहरति ।

अर्थ:—उस समय वह अर्जुन माली बाल्यावस्था से ही मुद्गरपाणि यक्ष का भक्त था जिससे वह हमेशा बांस की छाबड़ी लेता था, लेकर राजगृह नगरी से बाहर निकलता, बाहर निकल कर जहाँ अपना बगीचा था वहाँ आता, आकर पुष्पों को तोड़ता, तोड़ कर पहले ताजे और श्रेष्ठ पुष्पों को ग्रहण करता । ग्रहण करके जहाँ मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आता । आकर मुद्गरपाणि यक्ष को अधिक मूल्य वाली तथा बड़ों के योग्य हो वैसी पुष्प पूजा करता था । पुष्प पूजा करके दोनों पाँव पृथ्वी पर झुका कर उस यक्ष को प्रणाम करता था उसके बाद नगर में जाकर राज्य मार्ग में अपने पुष्प बेच कर अपनी आजिविका का करता हुआ रहता था ।

मूल:—तत्थ णं रायगिहे नगरे ललित्था नामं गोद्धी परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूता जंकयसुकया यावि होत्था ।

अर्थ:—उस राजगृही नगर में ललित नामक अर्थात् उद्वत्त मनुष्यों की एक टोली रहती थी । वह काट्टिमान् यावत् देदीप्यमान् और अधिक मनुष्यों से भी जिससे विजय न पा सके ऐसी यत्कृत सुकृता थी अर्थात् वे मित्रों की टोली जो कोई कार्य अच्छा अथवा बुरा करे तो भी उनके माता-पिता और अन्य लोग अच्छा कार्य किया ऐसा कहा करते थे ।

मूल—तए णं रायगिहे नगरे अन्नदा कदाद पमोदे धुठे यावि होत्या ।

अर्थ:— उसके बाद राजगृह नगर में एक समय कदाचित् महोत्सव होने के लिये उद्घोषणा हुई ।

मूल—तए णं से अज्जुणाए सालागारे कछं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु पच्चूसकाल-
समयंसि बंधुमतीए भारियाए सच्चिं पच्छियपिडयातिं गणहति, गेणहत्ता, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति,
पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झमज्जेणं णिगच्छति, णिगच्छिता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छिता बंधुमतीए भारियाए सच्चिं पुप्फुच्चयं करेति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अर्जुन माली कल बहुत फूलों की जरूरत होगी, ऐसा विचार कर प्रातःकाल में बन्धुमती स्त्री के साथ बांस की छावडी लेकर अपने घर से निकला । निकल कर राजगृह नगर के बीचोंबीच होकर बाहर जहाँ अपना बगीचा था वहाँ आया । आकर बन्धुमती स्त्री के साथ फूल तोड़ने लगा ।

मूल—तए णं तीसे ललियाए गोटीए छ गोट्टिहा पुरिसा जेणेव मोगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाय-
यणे तेणेव उवागता अभिरममाणा चिद्धंति ।

अर्थ:—उस समय उस ललित नामक डोली के छ मित्र मनुष्य जहाँ सुदुगरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ

आये और खेलने लगे ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेति, करित्ता अग्गातिं वरातिं पुप्फातिं गहाए जेणेव भोगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति ।

अर्थ—उसके बाद उस अर्जुन माली ने बन्धुमती स्त्री के साथ पुष्पों को एकत्रित किये । एकत्रित करके पहले श्रेष्ठ पुष्पों को लेकर जहाँ सुदुर्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आया ।

मूलः— तए णं ते छ गोट्टिला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमतीए भारियाए सद्धि एज्जमाणं पासं- ति, पासित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी - एस णं देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धि इहं हव्वमागच्छति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडियबंधणयं करेत्ता बधु- मतिए भारियाए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणणं विहरित्तएत्ति कट्टु एयमहं अन्नमन्नस्स पडिसुणे- ति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति निच्चला निष्फंदा तुसिणीया पच्छणा चिद्धंति ।

अर्थः—उस समय उन छठों मित्र पुष्पों ने उस अर्जुन माली को उसकी बन्धुमती स्त्री के साथ आता

हुआ देखा । देख कर परस्पर इस प्रकार कहने लगे— हे देवानुप्रियो ! यह अर्जुन माली इसकी बन्धुमती स्त्री के साथ यहाँ शीघ्र आ रहा है । इससे हे देवानुप्रियो ! अपने इन अर्जुन माली को उल्टी सुदिक्रियों से बांध कर उसके सामन उसकी स्त्री बन्धुमती के साथ विपुल काम भोग भोगना श्रेष्ठ है । इस प्रकार संकेत करके यह यात परस्पर एक दूसरे ने अंगीकार की । अंगीकार करके चैत्य के धारने की ओट लेकर छिप गये और निश्चल, निस्पंद (धिना हिले) तूष्णी, गुरे की तरह छुपे रहे ।

मूल—तए णं से अज्जुणए सालागारे बंधुमतिमारियाए सद्धिं जेणेव सोगारपाणिजवखायचणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति, करित्ता महरिहं पुण्फच्चणं करेति. करित्ता जानुपायपडिए पणामं करेति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अर्जुन माली अपनी बन्धुमती स्त्री के साथ जहाँ सुदुर्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आया । आकर यक्ष की मूर्ति को देखते ही उसने प्रणाम किया । प्रणाम करके अधिक मूल्य वाली यानी यक्षों के योग्य पुष्पों से पूजा की । पूजा करके पृथ्वी पर बुटने नमस्कार उस यक्ष को प्रणाम किया ।

मूल—तए णं ते छ गोडिछा पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहितो णिगच्छति, णिगच्छित्ता अज्जुणयं

मालागारं गेण्हंति, गेण्हत्ता अवओडगबंधणं करेति, करित्ता बंधुमतिए मालागारिए सच्चिं विपुलाइं भोग-
भोगाइं भुजमाणा विहरंति ।

अर्थः—उसके बाद वे छठों मित्र शीघ्र २ बारने की ओड से निकले । निकल कर अर्जुनमाली को पकड़ा ।
पकड़ कर उल्टी सुदिकर्यों से बांध दिया । बांध कर बन्धुमती मालन के साथ विपुल काम भोग करने लगे ।

मूल—तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अथमज्झरिथिए समुप्पन्ने—एवं खलु अहं बालप्पभिति
चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लकल्लिं जाव कप्पेमाणे विहरामि, तं जइ णं मोग्गरपाणिजम्बे इह संनिहिते
होते से णं किं समं एयारूवं आवइं पविज्जमाणं पासते ? तं नित्थ णं मोग्गरपाणि जम्बे इह संनिहिते,
सुव्वत्तं तं एस कट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद उस अर्जुन माली को इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि—इस प्रकार निश्चय करके मैं
बाल्यावस्था से ही इन पूज्य सुदुर्गरपाणि यक्ष की हमेशा पूजा करता हूँ । यावत् आजीविका चलता हुआ रहता
हूँ अगर जो यह सुदुर्गरपाणि यक्ष इस प्रतिमा में प्रत्यक्षावस्था में होता तो मुझे इस आपत्ति दशा में कैसे देखता ।
इससे तो यह प्रतीत होता है कि यह सुदुर्गरपाणि यक्ष प्रत्यक्ष नहीं । यह तो काष्ठ रूप ही इष्टिगोचर होता है ।

मूल—तएणं से मोगरपाणि जक्खे अज्जुणयस्स माणागरस्स अयमेयारूवं अब्भत्थियं जाव त्रियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सररीय अणुपविसति, अणुपविसित्ता नडतडतडस्स वंधाई छिंदति तं पलसहस्सणि-
प्फणं अयोमयं मोगरं गेण्हति, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेति ।

अर्थः—उसके बाढ उस सुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन माली के इस प्रकार के विचार यावत् जान कर अर्जुन माली के शरीर में प्रवेश किया । प्रवेश करके तडा तड उसके बन्धनों को तोड डाले और हजार पल के बने हुए लोहे के सुद्गर को लेकर स्त्री सहित सातों को काल के कराल मुख में कवलित कर दिये ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे मोगरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइहे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेत्तेणं कल्लकल्लिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेमाणे विहरति ।

अर्थः—उसके बाद वह अर्जुन माली सुद्गरपाणि यक्ष द्वारा अधिष्ठित होकर राजगृह नगरी के बाहर निकट भूमि पर हमेशा छ पुरूप और एक सानकी स्त्री को मारता हुआ फिरने लगा ।

मूल—रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोगरपाणिणा अण्णाइहे समाणे रायागिहे णगरे वहिया छ इत्थिसत्तमे

पुरिसे धायेमाणे विहरति ।

अर्थः— इसके बाद राजगृह नगर में श्रीकोण रास्ते पर तथा चौपट रास्ते पर बहुत से लोग इकठ्ठित हुए, होकर परस्पर इस प्रकार कहने लगे । इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली के शरीर में सुदुर्ग पाणि नामक यक्ष अधिष्ठित हुआ है । उससे वह राजगृह नगर के बाहर छः पुरूप और सातवीं स्त्री को प्रतिदिन मारता हुआ फिरता है ।

मूल—तए णं से सेणिए राया इमिसे कहाए लद्धटे समाने कोडुंवियपुरिसे सद्वेति, सद्वावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अञ्जुणए मालागारे जाव धातेमाणे विहरति, तं मा णं तुब्भे केइ कट्टस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सतिरं निग्गच्छतु, मा णं तस्स सरीरस्सं वावत्ती भविस्सति ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि धोसणयं वोसेह, घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह तए णं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणांति ।

अर्थः— इसके बाद उस श्रेणिक राजा ने इस वार्ता के विषय को जान कर कौटुम्भिक पुरूपों को बुलाये । बुला कर इस प्रकार कहाः— निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन नामक माली हमेशा छः पुरूप और एक स्त्री को मारता

हुआ फिरता है। जिससे नगरी में से कोई भी मनुष्य लकड़ी, घास, जल और पुष्प या फल यौगिक लेने के लिये अपनी इच्छानुसार गाँव के बाहर जाना नहीं क्योंकि ऐसा करने से उनके शरीर का नाश होना संभव है। इस प्रकार दो बार तीन बार में उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके मेरी इस आज्ञा को सुझे गापिस दे दो। इस सुन कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने यावत् उसी प्रकार उद्घोषणा की और राजा की आज्ञा वापिस कर दी।

मूल—तथ्य णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेठी परिवसति, अइहे । तए णं से सुदंसणे समणो—
वासए यावि होत्था अभिगयजीवाजिन्ने जाव विहरति ।

अर्थ:—अथ उस राजगृह नगर में समृद्धियान् सुदर्शन नामक एक सेठ रहता है। यह सुदर्शन श्रावक धर्म का आराधन करने वाला है इससे जीवाजीव यौगिक तत्व को जानने वाला यावत् रहता है।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं जाव समोसहे विहरति ।

अर्थ:— तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् वहाँ पधारे और साधु के योग्य अवग्रह याच कर रहे हैं।

मूल—तए ण रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति—

जाव किमंग पुण विपुलस्स अट्टस्स गहणयाए ? एवं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अब्भत्थिए जाव समुप्पन्ने - एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरति, तं गच्छामि णं वंदामि नमंसांमि, एवं संपेहेति, संपेहिता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ ! समणे जाव विहरति, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसांमि जाव पज्जुवासांमि ।

अर्थ:—उस समय राजगृह में तीन रास्ते वाले मार्ग में यावत् राज मार्ग में बहुत से मनुष्य इकट्ठे होकर परस्पर एक दूसरे को इस प्रकार कहने लगे:— निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहां गुणशील चैत्य में पधारे हैं उनका नाम गोत्र सुनने में भी बहुत फल है तो यावत् उनके पास जाकर शास्त्रों के बड़े २ अर्थों को अंगीकार करने में मद्दफल हो इसमें तो क्या ही कहना ? इस प्रकार बहुत से मनुष्यों से यह बात सुन हृदय में धारण कर सुदर्शन सेठ को यह विचार उत्पन्न हुआ कि:—निश्चय करके श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस नगर में पधारे हैं । नगर के समीप में आये हों तो भी ऐसा कहा जा सकता है । इसलिये कहते हैं कि यहां पधारे हैं, यहां समवसरे हैं और यहां समवतर कर धर्म देशना देने के लिये यहां विराजे हैं । अथवा इस नगर में पधारे हैं, यानी इस नगर के इशान

कौण में गुणशील चैत्य में पधारे हैं और साधुओं के योग्य ऐसे अवग्रह में रहे हैं। इसलिये मैं उनके पास जाऊं और उनको वंदना करूं, नमस्कार करूं। इस प्रकार विचार करके जहाँ अपने मात-पिता थे वहाँ गया। जाकर हाथ जोड़ यावत् इस प्रकार कहने लगा:- निश्चय करके हे मात-पिता ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहाँ पधारे हैं जिससे मैं उनके पास जाऊं और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना - नमस्कार करूं यावत् जाकर उनकी सेवा करूं।

मूल—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अस्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणे मालागारे जाव घाते माणे विहरति, त मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महीवीरं वंदए णिगच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सति, । तुमणं इह गते चेव समणं भगवं महावीर वंदहि णमंसाहि ।

अर्थ:—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ से उसके मात-पिता ने इस प्रकार कहा निश्चय करके हे पुत्र ! उस ओर अर्जुन नामक माली सात मनुष्यों को मारता हुआ रहता है। इसलिये हे पुत्र ! तू श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहाँ मत जा। जाने से तेरे शरीर को दुःख न हो ऐसा हम चाहते हैं। इसलिये तू यहाँ पर रह कर के ही श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना-नमस्कार कर।

मूल—तए णं सुदंसणे सेट्ठी अस्मापियरं एवं वयासी-किण्णं अहं अस्मयातो ! समणं भगवं महा-

वीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं इह गते चैव वंदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ तुव्भेहिं
अव्भणुन्नाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदते !

अर्थः—तब उस सुदर्शन सेठ ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा किः— हे पूज्य मात-पिता ! यहाँ आये
हुए, यहाँ प्राप्त हुए और यहाँ पधारे हुए अमण भगवान् महावीर स्वामी को मैं यहाँ रह कर किस प्रकार वंदना करूँ ?
इसलिये हे मात-पिता ! आपकी आज्ञा लेकर मैं अमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहाँ जाऊँ।

मूलः—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचायति वहुहिं आघवणाहिं जाव परूवेत्तए
ताहे एवं—वयासी अहा सुहं देवाणुप्पिया !

अर्थः—उसके याद सुदर्शन सेठ को उसके मात-पिता जब बहुत प्रकार से समझाने पर भी नहीं रोक सके
तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जिसमें तेरे को सुख उत्पन्न हो बैसा तेरी इच्छानुसार कर।

मूल—तए णं से सुदंसणे अम्मापितीहिं अब्भणुण्णाए समाणे पहाए सुद्धप्पोवेसाइं जाव सरिरे
तथाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिच्चा पायविहारचारेणं रायगिहं णगरं मज्झमज्जेणं णिगच्छति
णिगच्छिच्चा मोगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे

भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ ने मात-पिता की आज्ञा लेकर स्नान किया और शुद्ध शरीर वाला हुआ, उत्तम वस्त्र धारण किये यावत् बहुत मूल्य वाले अंलकारों से शरीर को सुशोभित किया । फिर अपने घर से बाहर निकला । निकल कर पैदल चलता हुआ राजगृह नगर के बीच होता हुआ नगर के बाहर निकला । निकल कर सुद्वार पाणि यक्ष के चैत्य से बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसा बीच में गुणशील नामक चैत्य का मार्ग था और जहाँ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी विराजे थे उस रास्ते प्रयान करने लगा ।

मूल—तए णं से मोगगरपाणी जक्खे सुदसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं वीतीवय-
माणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ते तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगगरं उच्छालेमाणे उच्छालेमाणे जेणेव सुदंसणे
समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस सुद्वारपाणि यक्ष ने सुदर्शन आवक को बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसे मार्ग में जाते हुए देखा । देख कर तत्काल क्रोधायमान होकर वह हजार पल लोहे का बना हुआ सुद्वार को हाथ में लेकर उछालता हुआ उछालता हुआ जिधर सुदर्शन आवक था उधर चला ।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोगरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासति, पासित्ता अभीते अतत्थे अणुव्विगगे अब्बुभित्ते अचल्लिए असंभंते वरथंतेणं भूमिं पमज्जति, पमज्जित्ता करतल एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो त्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्वि च णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलते पाणातिवाते पच्चक्खाते जावज्जीवाए, थूलते मुसावाते, थूलते अदिन्नादाणे, सदार-सतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छा परिमाणे कए जावज्जीवाए, तं इदाणिं पि णं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणा-इवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहूणं परिगहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसह्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जइ णं एत्तो उवसगाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेइ पारेत्तए अह णो एत्तो उवसगातो मुच्चिस्सामि ततो मे तहा पच्चक्खाते चेव ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जति ।

अर्थ:—उसके याद उस सुदर्शन श्रावक ने सुदुगरपाणि यक्ष को आते हुए देखा । देख कर भय रहित होकर, त्रास रहित, उद्वेगरहित और क्षोभ का त्याग कर, अचलायमान होकर संप्रांत रहित उसने वस्त्र के छेड़े से श्रूमिका

प्रमार्जन किया । प्रमार्जन करके दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक पर तीन चार आवृत्त कर दर्शों नख इकट्ठे हों ऐसे अंजली बांध कर इस प्रकार बोला कि:—अरिहंतों को यावत् मुक्ति पद को पाये हुए भगवानों को मेरा नमस्कार हो । अमरण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाने की इच्छा करने वाले ऐसे श्री महावीर स्वामी को मेरा नमस्कार हो । पहिले मैंने श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास स्थूल प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान किया है । इसी प्रकार स्थूल मृषावाद का और स्थूल अदत्तादान का प्रत्याख्यान किया है । स्वदार सन्तोष व्रत जीवन पर्यन्त ग्रहण किया है तथा जीवन पर्यन्त इच्छानुसार परिग्रह का त्याग किया है तो भी अभी उन्हीं भगवान् की पास मैं उन्हीं की साक्षी से हमेशा के लिये सर्वथा प्राणातिपात का जीवन पर्यन्त त्याग करता हूँ । इसी प्रकार जीवन पर्यन्त मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह का सर्वथा प्रत्याख्यान करता हूँ अर्थात् छोड़ता हूँ । इसी प्रकार सर्वथा क्रोध का यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान करता हूँ । इसी प्रकार सब प्रकार के अशन, पान, खादिम और स्वादिम ये चार प्रकार के आहार को भी जीवन पर्यन्त त्याग करता हूँ यदि कदाचित् मैं इस उपसर्ग से मुक्त हो जाऊं तो मैं यह प्रत्याख्यान पार करता हूँ और इस उपसर्ग से मुक्त न होऊं तो प्रत्याख्यान धारे हैं उसी प्रकार निश्चित हैं । इस प्रकार कह कर उसने सागार प्रतिमा अंगीकार की अर्थात् अभिग्रह सहित काउसग किया ।

मूल—तए णं से मोगरपाणीजक्खे तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगरं उच्छालेमाणे उच्छालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता नो चेव णं संचाएति सुदंसणे समणोवासए तेयसा समभिपडित्तए ।

अर्थः—उसके बाद सुद्गरपाणी यक्ष हजार पल लोह का बना हुआ सुद्गर को उछालता ? जहाँ सुदर्शन श्रावक था वहाँ आया, परन्तु सुदर्शन श्रावक के तेज प्रभाव को सहन नहीं कर सका इसलिये उसको उपसर्ग करने को सामर्थवान् हुआ नहीं ।

मूल—तए णं से मोगरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासतं सब्बओ समंताओ परिघोल्लेमाणे परिघोल्लेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए द्दहीए सुचिरं निरिक्खति, निरिक्खिता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहाइ, विप्पजहिता तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगरं गहाय जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

अर्थ:—उसके बाद वह सुदुर्गरपाणी यक्ष उस सुदर्शन श्रावक की चो तरफ फिरने लगा । फिरता २ जय उस सुदर्शन श्रावक के धर्म प्रभाव के तेज से उसको मारने की समर्थ न हो सका, तब उस सुदर्शन श्रावक के सन्मुख आवे जीमणे पासे अर्थात् दायें बायें समान आवे ऐसे और सप्रतिदिशा अर्थात् विदिशा भी समान आवे इस प्रकार खडा होकर सुदर्शन श्रावक को अनिमेष दृष्टि से एक टक लगा कर बहुत समय तक देखता रहा । देख कर बभरा कर अर्जुन माली के शरीर का उसने त्याग किया । त्याग करके वह हजार पल लोहे का बना हुआ सुदुर्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में पीछा अपने स्थान को चला गया ।

मूल— तए णं से अब्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण विप्पमुक्कके समाणे धसत्ति धरणि—
यलंसि सब्वगेहिं निवडित्तए ।

अर्थ:—उसके बाद उस अर्जुन माली को सुदुर्गर पाणी यक्ष ने छोड़ दिया तब वह धडाक से पृथ्वी पर सब अंगों को बिना सम्हाले गिर गया ।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुत्तसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेति ।

अर्थ:—उसके बाद उस सुदर्शन श्रावक ने उपसर्ग दूर हुआ जान कर प्रतिमा का पालन किया अर्थात् काउसग्ग को पार दिया ।

श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को बंदना करने यावत् उनकी सेवा करने के लिये आने की इच्छा करता हूं। तब सुदर्शन श्रावक ने कहा कि:— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझे सुख उत्पन्न हो वैसे तेरी इच्छानुसार कर ।

मूल:—तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिवसुत्तो जाव पज्जुवासति ।

अर्थ:—उसके बाद वह सुदर्शन श्रावक अर्जुन माली के साथ जहां गुणशील नामक चैत्य था और जहां श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे वहां आये । आकर अर्जुन माली के साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को तीन वक्त प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके बंदना की - नमस्कार विधिया यावत् सेवा करने लगे ।

मूल:—तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासयस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा । सुदंसणे पडिगए ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने सुदर्शन श्रावक, अर्जुन माली और उस बृहत् सभा को धर्मोपदेश दिया । उपदेश सुन कर सुदर्शन श्रावक अपने घर गया ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट सद्वहामि णं भंते ! गिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्टेमि ; अहासुहं देवाणुप्पिया । ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास धर्म सुन कर हृदय में धारण कर हट्ट तुट्ट होकर कहने लगा कि—हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर (साधुधर्मपर) अद्भुत करता हूँ यावत् दीक्षा लेने का मेरा प्रयत्न (विचार है) तब भगवान् ने कहा कि— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझ को सुख उत्पन्न हो वैसे कार्य कर ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरथिमं दिसिभाणं अवक्कमइ २ ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव अणगारे जाए जाव विहरति ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली उत्तर और पूर्वके बीच में ईशान कोण में गया, जाकर पाँच मुट्टि से केशों का लोच किया । यावत् वह चारित्र ग्रहण कर अणगार हुआ । फिर चारित्र पालने में प्रयत्नवान् होकर इर्यासमिति सुक्त और गुप्त ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होकर विहार करने लगा ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं

महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिगह उग्निपहति-कप्पइ मे जावजीवाए छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मणेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तिए त्ति कट्ठु अयमेयारूवं अभिगहं ओगे-पहति, ओगिण्हत्ता जावजीवाए जाव विहरति ।

अर्थः— उसके बाद उन अर्जुन अणगार ने जिस दिन मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना की नमस्कार किया । वंदना-नमस्कार कर के इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया । मुझे आज से लेकर जीवन पर्यन्त निरंतर (अंतर रहित) छट्ठे तप से पारण करके तप-संयम में आत्मा को भावन करते हुए विहार करना कल्पता है । इस प्रकार जीवन पर्यन्त के लिये अभिग्रह ग्रहण किया, अभिग्रह ग्रहण करके विहार करने लगा ।

मूल—तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्जायं करेति, जहा गोयमसामी जाव अडति ।

अर्थः— उसके बाद वे अर्जुन माली अणगार छट्ठे तप के पारणे के दिन पहली पोरसी में स्वाध्याय करते । स्वाध्याय करके गौतम स्वामी की तरह आहार पानी के लिये यावत् पर्यटन करते थे ।

मूल—तए णं तं अञ्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च जाव अडमाणं वहवे इत्थिओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमे णं मे पितामारिए भायामारिए भगिणीमारिए भज्जामारिए पुत्तमारिए धूयामारिए सुण्हामारिए, इमेणं मे अन्नयरे सयणसंबंधिपरिपणे मारिए ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पेगाइया हीलंति निंदंति खिसंति गरिहति तज्जेति तालंति ।

अर्थ:—उसक बाद राजगृह नगर में छोटे, बड़े और मध्यम घरों में यावत् पर्यटन करते हुए उन अर्जुन माली अणगार को देख कर बहुनसी खिये, पुरुष, वृद्ध, बालक और नौ जवान इस प्रकार कहने लगे कि:— इस साधु ने पहले मेरे पिता को मारा है, कोई कहता मेरे भाई को मारा है, कोई कहता मेरी बहन को मारी है। कोई कहता मेरी स्त्री को मारी है। कोई कहता मेरे पुत्र को मारा है। कोई कहता मेरी पुत्री को मारी है। कोई कहता मेरी पुत्र वधु को मारी है। इस साधु ने मेरे अमुक स्वजन को, सम्वन्धी को और मित्र को मारा है। उस प्रकार कह कर कितने ही लोग उन मुनि पर क्रोध करने लगते, कितने ही हिलना करने लगते, कितने ही निंदा करने लगते, कितने ही चिड़ने लगते, कितने ही नाराज कर अनुचित शब्द बोलने लगते, कितने ही तर्जना करने लगते और कितने मारने भी लग जाते थे ।

मूलः—तए णं से अब्जुणए अणगारे तेहिं वहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महह्छेहि य जुवाणएहि य आकोसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अप्पउस्समाणे सम्मं सहति सम्मं खमति तित्तिक्खति अहियासेति, सम्मं सहमाणे खममाणे तित्तिक्खमाणे अहियासेमाणे रायगिहे णगरे उच्चणीय-मज्झिमकुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभति तो पाणं ण लभति, जइ पाणं तो भत्तं न लभति, तते णं से अब्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसाइए अपरित्तजोगी अडति, अडित्ता रायगि-हाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव गुणासिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेति पडिदंसित्ता समणेणं भगवथा महावीरेणं अब्भणुण्णाए अमुच्छिइए विलमिव पणणगभूएणं अप्पण्णं तमाहारं आहारेति ।

अर्थः—उसके बाद उन अर्जुन अणगार पर बहुतसे स्त्री, पुरुष, शूद्र, बालक और नवयुवक क्रोध करने लगे, यावत् ताड़ना (मारने) करने लगे, तो भी वह उन पर मन से भी द्वेष किये बिना, भयरहित होकर समता भाव से से उनको सहन करने लगे । क्रोध नहीं करके क्षमा करते थे । दीनता छोड़ कर सहन शीलता धारण की तथा उनकी अत्यन्त बुरी बातें भी सहन की । इस प्रकार क्षमा पूर्वक समभाव से सहन करते हुए राजगृह नगर में छोटे, बड़े और

मध्यम घरों में पर्यटन करते थे। उस समय जो कभी भक्त (आहार) मिलता तो पानी नहीं मिलता और कभी पानी मिलता तो आहार नहीं मिलता तो भी अर्जुन अणगार को शोक नहीं होने से दीन और शून्य चित्त नहीं होने से शान्त, द्वेष नहीं होने से प्रसन्न, क्षोभ रहित होने से अनाविल अथवा जीने की चिन्ता को छोड़कर दुःखी नहीं होते थे, इसी कारण उनकी समाधी में मन, वचन और काया के योग में कोई भी दोष दिखाई नहीं देता था। इस प्रकार वे साधु पर्यटन करते थे। पर्यटन करके राजगृह नगर से बाहर निकले। निकल कर जहाँ गुणशील चैत्य था और जहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी थे वहाँ आये, आकर गौतम स्वामी की तरह भगवान् को भक्त पानी दिखलाते। दिखा कर श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर मुर्छा को छोड़ कर यानी स्वाद को छोड़ कर जैसे बिल में प्रवेश करता हुआ सर्प पृथ्वी के ऊपर नीचे के भाग को स्पर्श नहीं करता है उसी प्रकार मुँह में स्पर्श किये बिना ही निगल जाते अर्थात् राग रहित होकर आहार करते थे।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनि-क्खमिन्ता वहिं जणवयविहारं विहरति ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी एक समय कदाचित् राजगृह नगर में से बाहर निकले। बाहर निकल कर बाहर के देशों में विहार करने लगे।

मूल—तए णं से अञ्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभावेणं तवोकम्ममेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामणपरियागं पाउणति, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदित्ता जस्सट्टाए कीरइ जाव सिद्धे (सू० १३) ॥ ३ ॥

अर्थ:—उसके बाद वे अर्जुन अणगार उस उदार प्रयत्न से ग्रहण किये हुए और विस्तीर्ण ऐसी तपश्चर्या में समता पूर्वक अपनी आत्मा को भावन करते हुए पूर्णरूप से छः महीने तक चारित्र का पालन किया। फिर अर्थ मास (पंद्रह दिन का) अनशन करके शरीर को सुखा दिया और तीस भक्त अनशन पूरा किया। अनशन पूरा करके जिस के लिये चारित्र अंगीकार किया था उस अर्थ को साधन कर याचत सिद्धि पद प्राप्त किया (सूत्र० १३)

॥ इति तीसरा अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, तत्थ णं सेणिए राया, कासेत्वे णासं गाहावइ परिवसति जहा मंकाति, सोलस वासा परियाओ, जाव त्रिपुले सिद्धे ॥ ४ ॥

अर्थ—तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था, उसकी ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था, उस नगर में श्रेणिक राजा था। काठ्यप नामक गाथापति निवास करता था वगैरह मंकाति की तरह सब वर्णन

करना । काश्यप गाथापति ने सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया, यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए।

॥ इति चौथा अध्ययन संपूर्ण ॥ ४ ॥

मूलः—एवं खेमते वि गाहावइ, नवरं कांकंदी नगरी, सोलस परियाओ, विपुले पव्वए सिद्धे ॥ ५ ॥
अर्थ—इसी प्रकार क्षेमरु गाथापति का अध्ययन कहना, विशेष यह है कि वह कांकंदी नगरी में निवास करता था । सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को प्राप्त हुए ।

॥ इति पाँचवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ५ ॥

मूलः—एवं धितिहरे वि गाहावइ, नवरं कांकंदीए णगरीए, सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ॥ ६ ॥
अर्थ—इसी प्रकार धृतिधर गाथापति का वर्णन करना । विशेष यह है कि वह कांकंदी नगरी का निवासी था । सोलह वर्ष तक चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्ध हुए ॥ इति छटा अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ ॥

मूलः—एवं केलासे वि गाहावइ, नवरं सागेए णगरे, चारस वासाइं परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ ७ ॥
अर्थ—इसी प्रकार कैलाश गाथापति का वर्णन कहना । विशेष यह है कि—यह साकेत नगरी के निवासी थे । बारह वर्ष चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त किया ।

॥ इति सातवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ७ ॥

मूल—एवं हरिचंद्रणे वि गाहावइ साएए, बारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ॥ ८ ॥

अर्थ—इसी प्रकार हरिचन्दन गाथापति का वर्णन करना । ये साकेत नगर के निवासी थे । बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । ॥ इति आठवौं अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥

मूल—एवं वारत्तए वि गाहावइ, नवरं रायगिहे नगरे, बारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ ९ ॥

अर्थ—इसी प्रकार वारत्तक गाथापति का वर्णन करना विशेष यह है कि ये राजगृह नगर के निवासी थे बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । ॥ इति नववौ अध्ययन ॥ ९ ॥

मूल—एवं सुदंसणे वि गाहावइ, नवरं वाणियगामे नगरे दूइपलासए चेइए, पंचवासा परियाओ विपुले सिद्धे । १०

अर्थ— इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति का वर्णन करना । विशेष यह है कि ये वाणिज्य ग्राम के निवासी थे । वहां दूतिपलाश नामक चैत्य था । पांच वर्ष चारित्र पालन कर विपुलगिरी पर सिद्ध हुए । इति दशवौं अध्ययन ॥

मूल—एवं पुन्नभदे वि गाहावइ, वाणियगामे नगरे पंचवासा विपुले सिद्धे ॥ ११ ॥

अर्थ—इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति का वर्णन करना । ये भी वाणिज्य ग्राम में निवास करने वाले थे

बहुत वर्षों तक चारित्र्य पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति ग्यारहवौ अध्ययन संपूर्ण ॥ ११ ॥

मूल—एवं सुमणभेदे वि सावर्धीए नगरीए बहुवासपरियातो सिद्धे । १२

अर्थ:—इसी प्रकार सुमनोभद्र सार्धवाह का वर्णन करना ये भी श्रावस्ति नगरी के रहने वाले थे । बहुत वर्षों तक चारित्र्य पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति बारहवौ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १२ ॥

मूल—एवं सुपइठे वि गाहावइ, सावर्धीए नगरीए, सत्तावीसं वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे । १३ ॥

अर्थ:—इसी प्रकार सुमतिष्ठ गाथापति का वर्णन करना । ये भी श्रावस्ति नगरी में निवास करते थे । सत्ताईस वर्ष तक चारित्र्य पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को पाये । ॥ इति तेरहवौ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १३

मूल—एवं मेहे, रायगिहे नगरे, बहूइं वासाइं परियाओ जाव विपुल सिद्धे ॥ १४ ॥

अर्थ:—इसी प्रकार मेघ गाथापति का वर्णन करना । ये राजग्रह नगर के रहने वाले । बहुत वर्षों तक चारित्र्य पालन करके यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए (सू० १४) ॥ इति चौदहवौ अध्ययन संपूर्ण १४ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं पोलासपुरे नगरे, सिखिणे उज्जाणे, तत्थ णं पोलासपुरे नगरे विजये नामं राया होत्था । तस्स णं विजयस्स रत्तो सिरि नाम देवी होत्था, वन्नओ । तस्स णं विजयस्स रत्तो

पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था, सुमाले ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में पोलासपुर नामक नगर था । उसके बाहर इशान कोण में श्रीवन नामक उद्यान था । उस पोलासपुर नगर में विजय नामक राजा राज्य करता था । उस विजय राजा के श्रीदेवी नाम रानी थी, उसका वर्णन करना । उस विजय राजा का पुत्र तथा श्रीदेवी का आत्मज अतिसुत्तक नामक कुमार था वह यावत् सुकोमल था ।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीर जाव सिरिवणे । विहरति ।
अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् श्रीवन नामक उद्यान में आकर विराजे ।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूइ जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे नगरे उच्च जाव अडइ ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के बड़े शिष्य गौतम स्वामी भगवती सूत्र में कहे अनुसार यावत् पोलासपुर नगर में छोटे बड़े, और मध्यम घरों में यावत् आशर पानी के लिये पर्यटन करते थे ।

मूल— इमं च णं अइमुत्ते कुमारे णहाए जाव विभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि

पडिनिक्खमिता
य कुमारएहि य कुमारियाहि य सच्चि संपखिडे सओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता
य डिभियाहि य दारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य कुमारएहि य
तेहि बहूहि दारएहि य दारियाहि य दारियाहि य दारिका, डिम,
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।

अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।

अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।

अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।

मूल—तए णे से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयसं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासति, पासिता जेणेव भगवं गोयसे तेणेव उवागते, उवागच्छिता भगवं गोयसं एवं वयासी—के णं भंते ! तुब्भे ? किं वा अडह ? !

अर्थ—उसके थाट वह अतिमुक्तक कुमार भगवान् गौतम स्वामी को अपने पास भी नहीं और दूर भी नहीं ऐसे मार्ग से जाते हुए देखे । देव कर जहाँ भगवान् गौतम स्वामी थे वहाँ आया । आकर उसने भगवान् गौतम स्वामी से पूछा कि हे भगवन् ! आप कौन हैं ? और किस कारण पर्यटन करते हैं ? !

मूल—तए णं भगवं गोयसे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिगंगथा इरियासामिया जाव वंभयारी उच्चनीय जाव अडामो ।

अर्थ—तय भगवान् गौतम स्वामी ने अतिमुक्तक कुमार से इस प्रकार कहा है देवानुप्रिय ! हम श्रमण निर्ग्रथ दर्यासमिति वाले यान्त्र गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाले और बड़े, छोटे एवं मध्यम घरों में भिक्षा के लिये पर्यटन करते हैं ।

मूल— तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयसे एवं वयासी— एह णं भंते ! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमीति कट्टुड भगवं गोयसं अंगुलीए गेण्हति, गेण्हिता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते ।

अर्थ:—उसके बाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा:—हे भगवान् ! आप मेरे घर पर पधारे तो मैं आपको मिक्षा दूँ। ऐसा कह कर भगवान् गौतम स्वामी की अंगुली पकड़ी *, पकड़ कर अपना घर था वहाँ गौतम स्वामी को ले आया।

* ऊपर के अधिकार में अहमत्ता कुमार गौतम स्वामी की अंगुली पकड़ कर अपने राज महल में ले आया, ऐसा खुलासा मूल पाठ में है परन्तु रास्ते में बातें करते चले थे ऐसा नहीं लिखा जिस पर भी स्थानकवासी महाशय रास्ते में बातें करते चलने का बहाना लेकर गौतम स्वामी के मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखने का ठहराते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। साधु को रास्ते में चलते हुए बातें करना कल्पता नहीं। इस शास्त्रज्ञा का उल्लंघन करके गौतम स्वामी रास्ते में चलते हुए कभी बातें नहीं कर सकते। और स्थानकवासियों के मतव्य मुज्व तथा आचारांगादि द्वारा ज्ञानुसार जब साधु को छीक-उवासी आदि होने लगे तब हाथों से नाक मुंह दोनों की यत्ना करके पीछे छीक वगैरह करना कल्पता है। अब स्थानकवासियों के कथनानुसार यहाँ पर विचार करने का अवसर है कि गौतम स्वामी के एक हाथ में पात्रों और दूसरे हाथ की अंगुली अडमत्ताकुमार ने पकड़ रखी है उस समय गौतम स्वामी को छीक वगैर होने लगे तब हाथों से नाक और मुंह दोनों की यत्ना करके छीकादि किस तरह कर सकते थे। ऐसे अवसर पर मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखना बेकार ठहरा। यह विषय खास विचार करने योग्य है। और जिस प्रकार छीक वगैरह करते समय नाक तथा मुंह दोनों की यत्ना करके किये जाते हैं। उसी प्रकार रास्ते में चलते समय कभी खास कारण वश वार्तालिप करने का काम पड जावे तो खड़े रह

मूल—तए ण सा सिरीदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ट तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया, भगवं गोयमं तिव्वुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करोति, करित्ता वंदति नमंससति. वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखादिससादिसेणं पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ:—उसके बाद उस श्रीदेवी ने भगवान् गौतम स्वामी को आते हुवे देखे । देख कर हट्ट-तुट्ट होकर आसन से खड़ी होगई । खड़ी होकर जहाँ भगवान् गौतम स्वामी थे वहाँ आई । आकर भगवान् गौतम स्वामी को तीन बार प्रदक्षिणा करके वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके बहुत विस्तार वाले अशन, पान, खादिस और स्वादिस पदार्थ बहोराये । बहोरा कर यावत् उनको चिदा किये ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी- कहि णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?

कर मुंहपत्ति से या साधु के खंधे पर कंवल होती है उसको मुंह के आगे आडी डाल कर मुंह की यता करके चाँते कर सकते है । इस में मुंहपत्ति हमेशा मुंहपर बांधी रखने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस बात का विशेष खुलासा सब तरह से शंका समाधान सहित हमारा बनाया “ आगामानुसार मुंहपत्ति का निर्णय ” और जाहिर उद्घोषणा नंबर १-२-३ में विस्तार से लिखा गया है, पाठक गण उसको मंगवा कर अवश्य पढ़ें अमूल्य भेट मिलता है जैन ग्रेस, कोटा में ।

अर्थ:—उसके बाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार पूछा— हे भगवन् ! आप कहां रहते हो ? ।

मूल:—तए णं भगवंं गोयमे अइमुत्तें कुमारं एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्ममायरिए धम्मोवएसए भगवंं महावीरे आदिकरे जाव संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स वहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिग्गहं उग्गहं उग्गिण्हत्ता संजमेणं जाव भावेमाणे विहरति, तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।

अर्थ:—तब भगवान् गौतम स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार से इस प्रकार कहा:— निश्चय करके हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य धर्म का उपदेश करने वाले भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले यावत् मोक्ष पद पाने की इच्छा वाले हैं । वे यह! पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन नामक उद्यान में यथायोग्य अवग्रह को ग्रहण करके संयम और तप में अपनी आत्मा को भावन करते हुए रहे हैं, वहां पर हम रहते हैं ।

मूल:—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवंं गोयमं एवं वयासी— गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणे भगवंं महावीरं पायवंदते । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थ:—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा — हे भगवान् !

मैं आपके साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के चरणों को नमस्कार करने की इच्छा करता हूँ। तब गौतम स्वामी ने कहा:— हे देवानुप्रिय ! तेरे को सुख उत्पन्न हो बैसा कर ।

मूल:—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोतमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा-
गच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिव्बुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति जाव
पज्जुवासति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार भगवान् गौतम स्वामी के साथ जहाँ श्रमण भगवान् श्री महा-
वीर स्वामी थे वहाँ आया । आकर श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को तीन वार प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा
करके वंदना की । यावत् भगवान् की सेवा करने लगा ।

मूल:— तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागते जाव पडिंदसेति पडिंदसित्ता
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।

अर्थ:—उसके बाद भगवान् गौतम स्वामी जहाँ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे, वहाँ आये । यावत्
इरियावही पडिक्कमी, भक्तवान की आलोचना की यावत् भगवान् को आहार दिखलाया । दिखा कर यावत् संमय

तप में आत्मा भावन करते हुए रहे ।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार को तथा उन बड़ी जन समुदाय को धर्म देशना दी ।

मूल— तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हह
तुट्ट जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास से धर्म देशना सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होकर इस प्रकार बोला कि हे देवानुप्रिय ! भगवान् ! मैं मेरे मात-पिता की आज्ञा प्राप्त कर लेजं, उसके बाद मैं देवानुप्रिय ! आपके पास यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा । तव भगवान् ने कहा कि:—हे देवानुप्रिय ! तुझको सुख उत्पन्न हो बैसा कर, धर्म कार्य में विलम्ब मत कर ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वतित्तए, अइमुत्तं कुमारं

अम्मापियरो एवं वयासी- बालेसि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धेसि तुमं पुत्ता ! किं नं तुमं जाणसि धम्मं ? ।

अर्थ—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार जहाँ अपने मात - पिता रहते थे वहाँ आया । यावत् मैं आप की आज्ञा से दीक्षा लेने की इच्छा करता हूँ ऐसा कहा । तव अतिमुक्त कुमार को उसके मात-पिता ने कहा:- हे पुत्र ! पहिले तो तू बालक है, हे पुत्र ! तू अज्ञानी है, इसलिये तू संयम धर्म को क्या जानता है ? ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि, जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि ।

अर्थ— उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा— इस प्रकार निश्चय करके हे मात-पिता ! मैं जिसको जानता हूँ उसको ही नहीं जानता और जिसको नहीं जानता उसको जानता हूँ ।

मूल—तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-कहं नं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि जाव तं चेव जाणसि ? ।

अर्थ—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार से उसके मात-पिता ने कहा:- हे पुत्र ! तू जो जानता है उस को ही तू नहीं जानता और जो तू नहीं जानता है उसको जानता है, यह बात किस प्रकार है ? ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मपियरो एवं वयासी- जाणामि अह अम्मयाआ जहा जायणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहं वा कहिं वा कहे वा केचिरेण वा ? , न जाणामि अहं अम्मयाओ ! केहिं कम्माययणेहिं जीवा नरइयातिरिखलजेणिमणुस्सेदेवेषु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चैव जाणामि, तं चैव न याणामि जं चैव न याणामि, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भ-
णुणाए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थ:—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा:- हे मात-पिता ! मैं जानता हूँ कि जन्म धारण किये हुए जीव अवश्य मरने वाले हैं परन्तु हे मात-पिता ! मैं नहीं जान सकता कि कब, किस समय (प्रातः काल, मध्यान, शाम, या रात्रि) में, किस क्षेत्र में, किस प्रकार रोगादि से और कितने अल्प या दीर्घ समय को पूरा करके मरना होगा ? और हे मात-पिता ! कौन से कर्मों के आदान से यानी ज्ञानावरणीयादि कर्मों को ग्रहणकरके (ज्ञानावरणी आदि कर्मों के आयतन अथवा आदान यानी बंधन के हेतुओं से और पाठांतर में कर्मापत्तन यानी जिसके द्वारा आत्मा में कर्म आकर पड़े-संभवे-मिलें ऐसा प्रत्यंतर में पाठ है) अर्थात् कौन २

कमा ग जाए नरक, निराश, मनुष्य और देव योनी में उत्पन्न होते हैं ब्रह्म में जान सकता नहीं, परन्तु हे मात-पिता ! यह तो मैं जानता हूं कि प्रपने २ कर्मनुसार सब जीव नरक योगरह में यावत् उत्पन्न होते हैं। उस कारण से निश्चय करते हे मात-पिता ! मैं जो जानता हूं यह मैं नहीं जान सकता और जो मैं नहीं जानता उसको जानता हूं ऐसा मैं आप से कहता हूं इस कारण से हे मात-पिता ! तुम्हारी आज्ञा लेकर मैं यावत् दीक्षा लेने की इच्छा करता हूं।

मूल—तए णं नं अउसुत्तं कुमारं अस्मापियरो जाहे नो संचाणंति बहूहिं आघवणंहिं तं उच्छामो ते जाया ! गगद्वियन्ममनि राज्ञिनिंरिं पसेत्तए ।

अर्थ—उसके बाद उस अतिशुक्र कुमार को उसके मान-पिता जब बहुत प्रकार से समझाने पर भी वर में शर्तों में असमर्थ हो गये। तब वे बोले कि हे पुत्र ! एक दिन भी तेरी राज्य लक्ष्मी देखने के लिये हम उच्छा करते हैं अर्थात् एक दिन के लिये ही तू गणेश्वर बन कर राज्य सुख का उपभोग कर ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे अस्मापिउ वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीण, संचिट्ठति, अभिसेओ जहा महावलन्न्, निग्गमणं जाय अणगारे जाए जाव सामाडयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति बहूइं वासाइं सामणणपरियाग गृणारवण संवन्धरं तवोकमं जाव विपुले सिद्धे । (१५)

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार अपने मात-पिता के बचन को मान करके मीन रहा तब भगवता सूत्र में कहे हुवे महाबल की तरह उसका बड़ा भारी राज्याभियेक किया उसके बाद यावत् उसने दीक्षा अंगीकार की यावत् सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया। बहुत वर्षों तक चारित्र्यावस्था को पालन कर गुण रत्न संवत्सर वगैरह तप करके यावत् विपुलाचल पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए (१५) ॥ इति पंद्रहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १५ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए, तत्थ णं वाणारसीइ अलम्बे णामं राया होत्था ।

अर्थ:—तिसकाल तिस समय में बनारसी नामक नगरी भी उसके बाद ईशान कोण में महाकामवन नामक चैत्य था। उस बनारसी नगरी में अलक्ष नामक राजेन्द्र राज करता था।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे जाव विहरति, परिस्ता निगया तए णं अलम्बे राया इमीसे कहाए लद्धेडे समाणे हट्ट लुट्ट जहा कूणिए जाव पज्जुवासति, धम्मकहा !

अर्थ:—तिस काल तिस समय में भ्रमण भगवान् श्रीमहर्षीर स्वामी यावत् उस चैत्य में आकर विराजे, उनको बंदना करने के लिये नगरी में से पर्यदा निकली। उस वक्त अलक्ष राजेन्द्र भी भगवान् का आगमन सुनकर हृष्ट तुष्ट

होकर कौणिक राजेन्द्र की तरह राज कद्वि सक्ति येड़े आडम्बर पूर्वक बंदना करने के लिये आया यावत् भगवान् की सेवा करने लगा। तर भगवान् ने धर्म देखना दी, उसको सुन कर लोग वापस अपने २ घर गये।

मूल—तए णं से अलम्बे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तथा णिम्वंते, णवरं जेट्ठपुनं रजे अभिसिंचति, एक्कारस्स अंगा, बहु वासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ (१६)

अर्थ—उसके बाद उस अलक्ष राजेन्द्र ने श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी के पास उदायन राजा की तरह शिशा अंगीकार की। विशेष यह है कि-उसने अपने नडेपुत्र को राज गादी पर स्थापन किया, फिर ग्यारह अंगों का अन्वयण कर बहुत गणों तक चारित्र्यावस्था को पालन की यावत् विपुलचल पर्वत पर ॐ सिद्धि पद को प्राप्त हुए ॥१६॥

ॐ- इस रूप में अंगद २ पर गांगार शमुजय और विपुलाचल पर सिद्ध होने का अधिकार आया है, पाठक गण यह अपने अनुभव गित और शास्त्रानुसार धन्यता का है कि- स्वामी प्राणियों के जैसे २ निमित्त कारण मिलते हैं वेसे ही मन के परिणाम होते हैं। उन्को के आगार गुन या अगुन रनों का तथा होता है। जैसे किस्मी शत्रु का नाम, स्थान, मूर्ति आदि देखने से करण उपपन्न होकर तब से भयुर कां बंधते हैं। सात-पिपा, पिपा मुक, उ ग में प्राथय शाना आदि उपकारी के नाम, स्थान, मूर्ति देखने से स्नेह भाव उत्पन्न होते से मोहताय कर्म रंधते हैं। उन्की तरह तीर्थकर गणपर महाभुनि प्राणि क नाम, गोत्र सुनने से तथा केवल उन्गय और मुंके समन स्थान पर जाने से उन महाप पुत्रों ने राजसिद्धि संग्रह और सुन्दर स्मरणों आदि उत्पन्न कर तप समय में रमणता करके उन्कोरुद उन्को गहन करने हुए र्थे हय करके मुक्ति गये जन्म मरणानि २४ लक्ष औंशयोनिरूप संसार से मुंटे और जगत ज्ञानादि

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्टस्स वगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । (सू० १५)

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! अमण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी के छोटे वर्ग का यह अर्थ प्रकाशित किया है ॥ सू० १५ ॥ इति सोलहवों अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १६ ॥

निज आत्म गुण संपन्न हुए इत्यादि उन्होंने के गुणानुवाद याद आकर उनके स्मरण- ध्यान से वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। असार संसार की मोह माया का प्रपंच कम होता है, नुटता है उस समय आश्रव-कपाय मंद होते हैं। शुभ भावों की वृद्धि होती है उससे अशुभ कर्मों की निर्जरा होकर शुभ कर्मों का बंध होता है और यदि आपाढ भूति मुनि तथा इला पुत्र की तरह शुभ भावना बढ जाय तो घनब्रति कर्मों का सर्वथा नाश कर केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति होजावे। इस प्रकार महान् पुरुषों के मुक्ति गमन स्थान पर जाने से संसार का पार होता है इसलिये उन स्थानों को तीर्थ कहे गये हैं। ऐसे तीर्थ स्थानों में जाने से साधु-साधियों के तप संयम में विशेष शुद्ध वृद्धि होती है। और गृहस्थों के भी ऐसे तीर्थ में दर्शन-पूजन-स्मरण-ध्यान-दान-तप-शील आदि महान् लाभ मिलता है। दुकानदारी, गृहव्योपार, कुशील संवन आदि आरंभ समारंभ नुटता है। विपय वासना कम होती है। साधु-साधियों के दर्शन वदनादि का विशेष लाभ मिलता है-और भगवान् की पूजा सेवा गुणग्राम करने का निरुपाधिक अवसर अधिक मिलता है। इत्यादि ऐसे महान् लाभ के हेतु भूत तार्थ याजा का निषेध करके भव्य जावों के घर्म कार्यों में अंतराय देना किसी प्रकार उचित नहीं है। इसका विशेष निर्णय “ आगमानुसार मुंहपत्ति का निर्णय” ओर जाहिर उद्घोषणा न० १-२-३ में तथा “श्रिजित प्रतिमा को वदन पूजन करने की अनादि सिद्धि”। आदि ग्रंथों में देखें।

॥ इति छट्ठा वर्ग सम्पूर्ण हुआ ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वर्ग ॥

मूल—जड णं भंते । सप्तमस्स चगस्स उक्खेवओ जाव तेरस अझयणा पणत्ता, तं जहा— नंदा ? तह नंदमती ३ नंदोत्तर ३ नंदसेणिया ४ चेव । महया ५ सुमरुय ६ महमरुय ७ मरुहेवा ८ य अट्टमा । ? । भद्र ९ य सुभहा ? ० य, सुजाता ? १ सुमइ य ? २ । भूयदिद्वा ? ३ य चोद्धवा, सेणियभजाण नामाइं ॥२॥

अर्थ— जन्म स्वामी सुभं स्वामी से पूजते हैं कि- हे भगवन् छठे वर्ग का उपरोक्त अर्थ भगवान् ने फर- नाया धैसा आपने कहा अप मातवं वर्ग का क्या अर्थ है सो बतलावें ? तय सुभं स्वामी ने कहा यावन् मातवं वर्ग के तेरह अन्ययन कहे हैं । ये उस प्रकार हैं— पहला नंदा, दूसरा नंदमती, तीसरा नन्दोत्तरा, चौथा नंदसेना, पांचवां मरुया, छठा सुमरुता, सातवां मरुद्वी, आठवां मरुद्वी, नौवां भद्रा, दशवां सुमद्रा, ग्यारहवां सुजाता, बारहवां सुभति और तेरहवां भूतदिद्वा. ये तेरह त्रैणिक राजेन्द्र की राणियों के नाम के तेरह अन्ययन कहे हैं ।

मूल—जड णं भंते तेरस अझयणा पटत्ता, पडमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अडे पणणेने ? ।

अर्थ:—जम्बू स्वामी सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन कहे हैं, तो श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष को पाये हुए श्रीमहावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का किस प्रकार अर्थ वर्णन किया है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया वन्नओ । तस्स णं सेणियस्स रणो नंदा नामं देवी होत्था वन्नओ । सामी समोसडे, परिसा निगया ।

अर्थ:—श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं:— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था । उसके बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था । उस नगर में श्रेणिक नाम के राजेन्द्र राज्य करते थे । उनका वर्णन करना । उन श्रेणिक राजेन्द्र के नदा देवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना । एक समय श्रीमहावीर स्वामी पधारे । उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्पदा निकली ।

मूल —तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धहा समाणा कोडुवियपुरिसे सद्वावेति, सद्वावित्ता जाणं जहा पउमावइ जाव एक्कारस अंगाइं अहिजित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस वि देवीओ णंदागमेण णेयव्वाओ । (सू० १६) ॥ सत्तमो वर्गो सम्मत्तो ॥ ७ ॥

अर्थः—उसके बाद उन नंदादेवी ने यह वृत्तान्त जान कर कौटुम्बिक मनुष्यों को बुलाये. बुला कर उनके पास बैठने का वाचन (१५) मंगा कर उसमें बैठ कर पद्मावती राणी की तरह भगवान् को बंदना करने के लिये गईं यात् गर्भोपदेश सुन कर धैराग्य मय होकर दीक्षा अंगीकार की। ग्यारह अंगों का अभ्यास कर बीस वर्ष चारित्र्य प्राप्त की पावन कर यात् सिद्धि पद को प्राप्त हुई। इसी प्रकार तेरह राणियों का वृत्तान्त नंदा राणी की तरह जानेंना ॥ (सू० १६)

हिंदी अर्थ
सहित,
८ वर्ग

॥ अथ अष्टम वर्ग ॥



मूल—जइ णं भंते ! अष्टमस्त वगस्त उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-काली ?
सुकाली २ महाकाली ३ कण्ठा ४ सुरकण्ठा ५ महाकण्ठा ६ । वीरकण्ठा ७ य वोद्धन्वा रामकण्ठा ८ तहेव
य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्ठा ३, नवमी दसमी महासेणकण्ठा १० य ।

अर्थः—जम्हूँ स्वामी सुखम स्वामी से पूछते हैं कि वे भगवन् ! मानये वर्ग का अर्थ आपने क्या अब आठवें

वर्ग का अर्थ कहिए । श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं कि हे जम्बू ! आठवें वर्ग में दश अध्ययन करते हैं वे इस प्रकार हैं:— पहिला काली, दूसरा, सुकाली, तीसरा महाकाली, चौथा कृष्णा, पाँचवाँ सुकृष्णा, छठा महा कृष्णा, सातवाँ वीर कृष्णा, आठवाँ रामकृष्णा तथा नौवाँ पितृसेन कृष्णा और दशवाँ महासेन कृष्णा ये दशों श्रेणिक राजेन्द्र की राणियों नाम के दश अध्ययन हैं ।

मूल—जइणं भंते ! अट्टमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पट्ठात्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपेत्तणं के अट्ठे पट्ठते ? ।

अर्थ:—हे गुरुदेव ! वीर भगवान् ने आठवें वर्ग के दश अध्ययन करते हैं तो हे भगवान् ! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष के पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नाम नगरी होरथा, पुट्टभट्ठे चैइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया. वण्णओ ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में चंपा नामक नगरी थी । उसके बाहर ईगान कोण में पूर्ण भद्र नामक चैत्य था । उस चंपा नगरी में कौणिक नामक राजा राज्य करता था । उसका वर्णन करना ।

मूलः— तस्य णं नंपाए, नगरीण, सेणियस्स रत्तो भज्जा कोणियस्स रत्तो बुद्धमाउया काली नामं देवी होत्या, वण्णओ । जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, वड्ढहिं चउत्थच्छट्टमेहिं जाव अप्पाणं भारेमाणी विहरति ।

अर्थः—उम नंदा नगरी में श्रेणिक राजेन्द्र की स्त्री और कौणिक राजा की छोटीमाता कालिदेवी नामक राणी थी, उसका रणन करना । उसने नंदा की तरफ दीक्षा ग्रहण की, सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया तथा ब्रह्म उपवास, छठ और अद्रुम आदि तप द्वारा यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावती हुई रही ।

मूलः—तण् णं सा काली अज्जा अण्णया कदाइं जेणेव चंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छिता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भे हिं अत्थभणुण्णया समाणी रयणावल्लं तवं उवसंपजेत्ताणं विहरेत्ताण ।
वदामुहं देवमाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

अर्थः—उमके तप काशी साखी अन्यथा (एक समय) जहाँ आर्य चंदनवाला नामक साखी (अपनी गुरुगी) रहती थी वहाँ आई । आर्य उम प्रकार कहने लगीः— हे साखीली ! तुम्हारी आज्ञा के तप में ग्वावली नामक तप को अंगीकार करके, विचारने की उच्छा करनी दे । तप चंदनवाला साखी ने कहाः— हे देवामुनिप्रिया ! जिसमें तुमको

होता हो उसमें विलम्ब मत करो ।

विशेषार्थः—इस आठवें वर्ग में क्या विशेषता है वह कहते हैं:—यहाँ तप का नाम रत्नावली कहा है । गले में पहरने की वस्तु (हार) वह आभूषण विशेष है । कारण जो रत्नावली के सामान जो तप है वह तप भी रत्नावली तप कहलाता है । जैसे रत्नावली नामक आभूषण दोनों तरफ से प्रथम गुरुआत में पतला और फिर अधिक २ जाड़ा होता है, उसके बाद दोनों काहलिका नामक दो अवयव (चक्रदे) स्वर्णमय होते हैं । उसके बाद दोनों तरफ लम्बी २ सर होती हैं, उसके बाद हार के मध्य में अधिक मूल्य वाली बड़ी २ मणियाँ विभूषित रहती हैं । उसी प्रकार जो तप पद्मादिक में दिखाने में आता है । वह तप इस आकार को धारण करता है । इससे यह तप का नाम रत्नावली तप कहा है । इसमें पहले चतुर्थ (एक उपवास), फिर छठ (दो उपवास) फिर अष्टम (तीन उपवास) द्वारा उसका मस्तक बनता है । उसके बाद आठ छठ (आठ बार दो दो उपवास) आते हैं । इसकी स्थापना करते दो पंक्ति में चार खड़े खाने कर आठ छठ स्थापन करने चाहिये । अथवा तीन पंक्ति से नव खाने कर मध्य खाने में शून्य स्थापन कर याकी के आठ खानों में आठ छठके २-२ अंक रखने, इसके बाद एक पंक्ति में खड़े सोलह खाने कर उसमें अनुक्रम से चौथ भक्त (एक उपवास) से आरंभ कर चौतीस भक्त (सोलह उपवास) तक स्थापन करने । इसके बाद रत्नावली के मध्य भाग की

कल्पना कर चौतीस छद्द स्थापन करने के हैं; क्योंकि उसमें अधिक मूल्य वाली मणियों के समान मणियों की कल्पना की है। उसमें पहले द्वा छद्द, उसके नीचे तीन छद्द, फिर अनुक्रम से चार, पांच, छ छद्द स्थापन कर उसके नीचे २ अनुक्रम से उतरते हुए पांच, चार, तीन और दो छद्द स्थापन करने। यथवा आठ नब्दी और छ आड़ी रेखा करके पैंतीस ग्वाने का मूल्य के ग्वाने में अन्य रत्न वाली चौतीस छद्द स्थापन करने। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी नीचे से ऊपर जाते पहले मौल्य उपवास से लेकर एक उपवास पर्यन्त मौल्य ग्वाने स्थापन करने। इसके बाद उसकी ऊपर आठ छद्द स्थापन करने। उसकी स्थापना पहिले के अनुसार करनी। इसके बाद उसके ऊपर अनुक्रम से अठ्ठस (तीन उपवास), छद्द (दो उपवास) और चतुर्थ (एक उपवास) स्थापन करना।



यप कले वल्ले दल रीता संसे एक प्रकार सं कते

१५१

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | ० | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

१५२

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |

१५३

३३
४३
५३
६३
७३
८३
९३
०३
१
२
३
४
५
६
७
८
९
०

१५४

३३
४३
५३
६३
७३
८३
९३
०३
१
२
३
४
५
६
७
८
९
०

अथवा

१५५

३३
४३
५३
६३
७३
८३
९३
०३
१
२
३
४
५
६
७
८
९
०

१५६

३३
४३
५३
६३
७३
८३
९३
०३
१
२
३
४
५
६
७
८
९
०

| | |
|---|---|
| ० | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |

| | |
|---|---|
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |

| | | |
|---|---|---|
| २ | २ | २ |
| २ | ० | २ |
| २ | २ | २ |

| | | |
|---|---|---|
| २ | २ | २ |
| २ | ० | २ |
| २ | २ | २ |

१५७

३
४
५

१५८

३
४
५

१५९

३
४
५

१६०

३
४
५

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

इस पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना चाहिये । इसमें सब काम गुणों अर्थात् इच्छानुसार प्रिय रमादि वाला आहार जिसमें हो उसे सब काम गुणित कहा जाता है । यानी तपस्वी की इच्छानुसार पारने में छ प्रकार के विगय वाला आहार कर सकता है । तोभी चारों परिपाटियों में पारणे संकपी विशेष कर यह नियम है, कि- पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना, दूसरी परिपाटी में चिकृति बलित (छः प्रकार की विगय रक्षित) पारना करना, तीसरी परिपाटी में अल्पपूज (सूवा भोजन जो दाय फेलेप नहीं लगे) पारना करना । और चौथी परिपाटी में आंबिडे से पारना करना । दूसरी वानना में पहली परिपाटी में सब गुण वाला पारना करना ऐसा कहा है ।

मूल- नते णं सा काली अना अज्जचंदणाए अच्चभणुणया समानी रयणावलं उवसंपजित्ता णं निहगति, नं जहा—

चउत्थ करेति, चउत्थ करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति । छट्टं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति । अट्टमं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं पारेति । चउत्थं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति । छट्टं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति । छट्टं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेत्ता

दसमं करेति, दसमं करिस्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति । दुवालसमं करिस्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति । चोद्दसमं करिस्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति । सोलसमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता अद्दारसमं करेति, अद्दारसमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता, सब्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति । वीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं-गुणियं पारेत्ता बावीसइमं करेति । बावीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं करेति । चउवीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता छब्बीसइमं करेति । छब्बीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता, सब्वकामगुणियं पारेत्ता अद्दावीसइमं करेति । अद्दावीसइमं करेत्ता सब्वकाम गुणियं पारेत्ता, सब्वकामगुणियं पारेत्ता तीसइमं करेति । तीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसइमं करेति । बत्तीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेति । चोत्तीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसं छट्टाई करेति । चोत्तीसं छट्टाई करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता, सब्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेति । चोत्तीसइमं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसं करेति । बत्तीसं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता तीसं करेति । तीसं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता, सब्वकामगुणियं पारेत्ता अद्दावीसं करेति । अद्दावीसं करेत्ता सब्वकामगुणियं पारेत्ता,

सर्वकामगुणियं पारंत्ता इत्थीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता चउवीसं
करेत्ति । एतं तिन करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता यावीसं करेत्ति । यावीसं करेत्ता सब्ब-
कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता थीसं करेत्ति । थीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणिय
पारंत्ता अट्ठमं करेत्ति । अट्ठमं करेत्ता सब्बकामगुणिय पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता सोलसमं करेत्ति ।
सोत्थमं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता चोदसमं करेत्ति । चोदसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं
पारंत्ता, सग्गकामगुणियं पारंत्ता सारसमं करेत्ति । सारसमं करेत्ता सब्बकामगुणिय पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता
असमं करेत्ति । असमं करेत्ता सब्ब कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता अट्ठमं करेत्ता सब्ब-
कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता उट्ठं करेत्ति, उट्ठं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं
पारंत्ता चउवीसं करेत्ति, चउवीसं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणिय पारंत्ता अट्ठं उट्ठं करेत्ति, अट्ठं उट्ठं
पारंत्ता, सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता, अट्ठमं करेत्ता सब्बकामगुणिय
पारंत्ता चउवीसं करेत्ति । उट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं

चउवीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, एतं चउवीसं पत्ता ग्यणावलीण तपोकम्मस्स पटमा परिवाडी

एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं चावीसाण य अहेरत्तेहिं अहामुत्ता जाव आराहिया भवति ।

अर्थः—उसके बाढ वह काली साध्वी चंदनवाला साध्वी की आज्ञा लेकर ग्वाथली नामक तप को अंगीकार करके विचरने लगी । वह इस प्रकार है—पण्डिले चतुर्थभक्त (एक उपवास) करे, चतुर्थ भक्त करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके फिर अष्टम (तीन उपवास) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकाम गुणित पारना करके आठ छट्ठ (यानी आठ बार दो दो उपवास) करे, आठ छट्ठ करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्व काम गुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके अष्टम (तीन उपवास) करे, अष्टम करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकाम गुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे । दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे । द्वादश करके सर्व कामगुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्विंश (छः उपवास) करे । चतुर्विंश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके पौत्रप (मान उपवास) करे, पौत्रप करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश (आठ उपवास) करे । अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे ।

सर्वकामगुणिपारना करके विंशति (नव उपवास) करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वाविंशति (दश उपवास) करे, द्वाविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके त्र्यविंशति (न्यास उपवास) करे । चतुर्विंशति करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके पञ्चविंशति (बारह उपवास) करे । षट्त्रिंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके अष्टविंशति (बारह उपवास) करे । अष्टविंशति करके सर्वकाम गुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके त्रिंशत (चौदह उपवास) करे । त्रिंशत करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके द्वात्रिंशत् (पंद्रह उपवास) करे । द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके चतुर्विंशत् (सोलह उपवास) करे । चतुर्विंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके चतुर्विंशत् (चौतीस षट्) करे, चौतीस षट् में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके चौतीस छट् (चौतीस षट्) करे, चौतीस छट् में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारणा करके चतुस्त्रिंशत् (सोलह उपवास) करे । षट्त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारणा करके द्वात्रिंशत् (पंद्रह उपवास) करे । द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके त्रिंशत् (चौदह उपवास) करे । त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करके अष्टविंशति करे, अष्टविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षट्त्रिंशति (बारह उपवास) करे । षट्त्रिंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे ।

सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्विंशति (ग्यारह उपवास) करे । चतुर्विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वाविंशति (दस उपवास) करे । द्वाविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके विंशति (नव उपवास) करे । विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादस (आठ उपवास) करे । अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके षोडश (सात उपवास) करे । षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश (छः उपवास) करे । चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे । द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे । दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तीन उपवास) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे । छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके आठ थैले) करे । आठ छट्ठ करके प्रत्येक पारणे में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तैला) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे । फिर छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित

पारना करे। इस प्रकार निम्न्य करके रखावली तपश्चर्या की पहली परिपाटी एक वर्ष तीन महीने और बाईस अशो-
रात्रि में तृय में करे अनुसार आराधन की जाती है। इस एक परिपाटी में ३८४ उपवास और ८८ पारणे के दिन
पितृभर सब ३७२ दिन होने हैं।

मूल—तथांतरं च णं दोच्चाण् परिवाडीण् चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता विगड्वजं पारेति, विग-
उत्थं पारेना छंठं करेति, छंठं करित्ता विगड्वजं पारेति, एवं जहा पढमाण् परिवाडीण् तथा बीआए वि,
नगरं सत्रपारणण् विगड्वजं पारेति जाव आराहिया भवति ।

अर्थ—उसके बाद दूसरी परिपाटी में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करे। चतुर्थ करके विगड्विना पारना करे।
विगड्विना पारना करके छंठ (दो उपवास) करे। छंठ करके विगड्विना पारना करे। इसी प्रकार पहली परिपाटी
की तरह सब करना। विशेष यह है कि सब पारनों में विगड्वि को त्याग कर पारने करे। इस प्रकार दूसरी परि-
पाटी आराधन की जाती है।

मूल—तथांतरं च णं तच्चाण् परिवाडीण् चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता अलेवाडं पारेति, सेसं तंहेव.
एवं नउत्थायि पश्चिमाडी, नवरं सत्रपारणण् आर्थविलं पारेति, सेसं तं चैव । गाहा-पढमंमि सत्वकामगुणं

पारे, बीतियंमि विगइ वजं । तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलंमि चउत्थं ॥ १ ॥

अर्थ:—उसके बाद तीसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके बलेपकृत पारना करे । बाकी सब पूर्व की तरह जान लेना चाहिये । इसी प्रकार चौथी परिपाटी को भी जानना परन्तु इसमें प्रत्येक पारने के दिन आयंबिल करे, बाकी सब पहिले की तरह जानना । चारोंही परिपाटी के पारने की संग्रह की हुई गाथा का अर्थ इस प्रकार है “ पहिली परिपाटी में सर्वकामगुण यानी सब इच्छित कल्पनीय वस्तुओं से पारना करे, दूसरी परिपाटी में विगई को त्याग कर पारना करे, तीसरी परिपाटी में लेपरहित वस्तुओं से पारना करे । और चौथी परिपाटी में आयंबिल से पारणा करे । ”

मूल—तए णं सा काली अज्जा तं रयणावलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छिता अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति ।

अर्थ:— उसके बाद वह काली साध्वी रत्नावली नामक तपस्वर्या को पांच वर्ष, दो महीने, और अट्ठावीश दिने सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहां आर्य चंदनबाला साध्वी थी वहां आर्य चंदन

बाल्य मात्सी को पंद्रना की, नमस्कार किया। चंद्रना नमस्कार कर बहुत उपवास चगौरह तप करती हुई यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावन करती हुई विचरने लगी।

मूल—तप ण सा काली अज्ञा तेणं ओरालेणं जाव भमणिसंतथा जाया यावि होरथा, से जहा इंगालसगडी रा जाय लुहुयहुयासणे उव भासरासिपलिच्छणा तमेणं तेणं तवतेयसिगीए अतीव उवसेभेमाणी २ चिद्धति।

अर्थ—उमके बाद वह काली मात्सी इस प्रकार उदार तपअर्था करने से यावत् शरीर में नसों से ज्यादा होरही थी—(शरीर की नसें श्रितनी थीं)। जैसे कोई कोयलों की भी हुई गाडी हो, यावत् अच्छी तरह से क्रोम की हुई तेज आदि हो और मान (भग्नी) से डफी हुई हो, उमी प्रकार वह काली साध्वी आत्माके अन्दर रहा हुआ तप तेज से और तरअर्था स्त्री लक्ष्मी से अन्यन्त शोभापमान् हो गई। यहाँ तप संबन्धी उदार शब्द के पास पारल शब्द है उसका आशय इसप्रकार है—'परत' यानी गुरु का दिया हुआ, अथवा प्रयत्नवाला यानी प्रमाद रहित, 'प्रगृहीत' यानी बहुत आदर पूर्वक उन्माह में प्रवृत्त किया हुआ, कल्याण कारक, 'शिव' यानी मोक्ष का कारण रूप, 'पन्न' यानी मने प्रकार की संग्रह को देने का, 'सांगल्य' यानी पाप का नाश करने वाला, 'मश्रीक' यानी शोभापमान्, 'उद्भू' यानी तीव्र, 'उत्तम' यानी श्रेष्ठ और 'उदार' यानी निष्कृत होने में उदारता वाली तपअर्था द्वारा वह शर्मा मात्सी गुरु यानी शरीर के रस रहित, भूत यानी क्षुधा शर्मा, निर्मांस यानी मांस रहित हो गई, और

अस्तिचर्मावनद्धा यानी मात्र अस्थियं, चर्म से मढ़ी हुई रह गई जिससे बैठने में तथा उठने में उसके हाड़ के कड़कड़ शब्द करने लगे अर्थात् वह शरीर से कृष हो गई और उस का शरीर नशों से व्याप्त रह गया था । इस प्रकार उसकी अवस्था होगई तो भी वह अपने जीव के बल द्वारा चलती थी और जीव के ही बल से खड़ी रहती थी । वह काली साध्वी भाषा-वचन बोलने के बाद ग्लानि पाती । भाषा का उच्चारण करते वक्त भी ग्लानि करती थी, मैं भाषा का उच्चारण करूंगी ऐसा विचार आते ही यानी भाषा बोलने के पहले भी ग्लानि को प्राप्त होती थी जैसे कोई लकड़ी की भरी हुई गाड़ी या पत्तों की भरी हुई गाड़ी, या कोयले की भरी हुई गाड़ी धूपमें रखकर सूखी हुई खड़खड़ शब्द करती हुई चलती है और शब्द करती हुई खड़ी रहती है, इसी प्रकार वह कालीसाध्वी भी हाड़को के खड़खड़ शब्द द्वारा चलती व खड़ी रहती थी और उग्र तप द्वारा और तपके तेजद्वारा वृद्धि पाती थी । मांस रुधिर से शरीर में हानि होने लगी । भस्म से ढकी हुई अग्नि की तरह तपश्चर्या द्वारा, तेज द्वारा और तपश्चर्या रूपी लक्ष्मी की संपदा द्वारा अधिकाधिक शोभायमान होकर रहने लगी । यहां तपश्चर्या के जो विशेषण कहे हैं वे एक ही अर्थ के द्योतक हैं तो भी विशेष अर्थ की विवक्षा करने के लिये ज्ञाता सूत्र के पहिले अध्ययन की टीका के अनुसार जान लेना चाहिये ।

मूल-तए णं तीसे कालीए अज्जाए अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावतकाल समयंसि अयं अब्भत्थिए जहा खंदयस्स

चिता जहा जाम अस्थि मे उट्टाणे (कम्म मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिईसंवेगे) ताव ताव मे सेयं कळं जाव जलने अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणा मूसणा भत्तपाणपडियाइस्सवे कालं अणवकंसामाणे विहरेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेत्ति, एवं संपेहित्ता कळं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदनि णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वया-मी इच्छामि णं अज्जा ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा जाव विहरेत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिसंभं करेह । तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणाञ्जूसिया जाव विहरति ।

अर्थः— उमके षाड् उम काली माथी को एक समय सय रात्रि को धर्म ध्यान करते हुए इस प्रकार का अस्वभाव-विचार उन्मत्त दुःखा-संकटरु मुनि की तरफ इसने विचार किया कि जहां तक मेरी उठने की शक्ति है (विद्या करने की शक्ति है जहां तक बन्ध, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, श्रद्धा-धांदा, वृत्ति-संतोष और संवेग है) वहां तक मुझे बन्ध मुक्त यात त्वं प्रकाशमान होवे तब आर्या बन्धनबाला मान्त्री से पूछ कर आर्य बन्धनबाला माथी की आज्ञा लेकर संवेगना को प्रहण कर, आहार पानी का प्रत्याग्यान कर, मृत्यु की बांछा नहीं रखकर विचार करना समागमनी है । इस प्रकार उमने विचार किया । इस प्रकार विचार करके दूसरे दिन सबेरे जहां

आर्या चन्दनबाला साध्वी थी वहाँ आई, आकर आर्या चन्दनबाला साध्वी को बंदना की, नमस्कार किया। बन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार कहने लगी:-हे साध्वी! आपकी आज्ञा हो तो संलेखना प्रहण कर यावत् मैं विषरत्ने की इच्छा करती हूँ तय आर्या चन्दनबाला सध्वी ने कहा कि-हे देवानुप्रिया! तुमको जिस प्रकार सुख उत्पन्न हो उसमें विलंब मत करो। इसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला की आज्ञा लेकर संलेखना कर यावत् विषरत्ने लगी।

मूल—तए णं सा काली अजा अज्जचंदणाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जिता बहु षड्पुत्राइं अटं संवच्छराइं सामणपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अपाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणस-णाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जात्र चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा। णिस्खेवो अज्झयणं। (सू० १७)

अर्थ:—उसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यास कर पूर्ण आठ वर्ष चारित्र्य पालन कर एक महीने की संलेखना द्वारा आत्मा (शरीर का) क्षय कर अनशन द्वारा साठ भक्त को छेदकर यानी एक महीने का अनशन पूरा करके जिस कार्य के लिये चारित्र्य प्रहण किया था उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोच्छ्वास सम्पूर्ण कर सिद्धिपद को प्राप्त किया। (सू० १७) यह प्रथम अध्ययन का अर्थ हुआ.

॥ इति आठवां वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ८ ॥ १ ॥

मूल—नेणं काले णं ते णं समाणं चंपा नाम नगरी, पुत्रभङ्गे चेद्दण, कोणिए राया, तस्य णं मेणियस्स मत्तो भजा. कोणियस्स रणो जुहमाडया सुकाली नाम देवी हात्था । जहा काली तथा सुकाली ति गिम्बेता ज्ञाव भांसमाणे विहरति ।

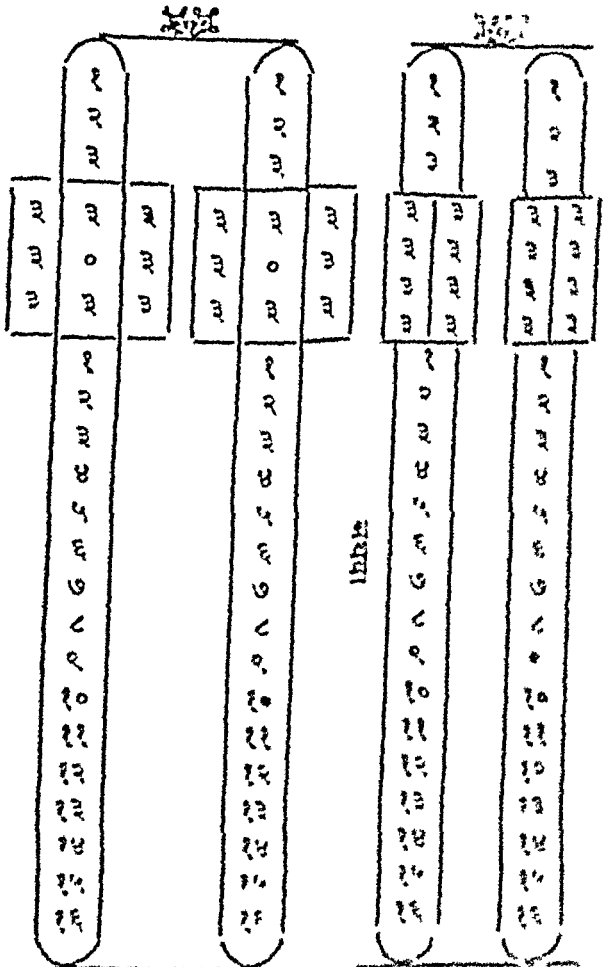
अर्थ—उस काल उस समय में चंपा नामक नगरी के बाहर पूर्णभद्र नामक चैत्य था वहाँ पर कौणिक नामक राजा राज्य करता था । वहाँ श्रेणिक राजेन्द्र की श्री कौणिक राजा की छोटी बान्ता सुकाली नामक राणी थी । काली की तरह सुकाली ने भी दीक्षा ग्रहण ही यात्रा उग्र तप-संयम में अपनी आत्मा को नारतो हुई विपरमे ग्नी ।

मूल—नणं मा सुकाली अजा अन्नया कयाड जेणेव अजचंदणा अजा जाव इच्छामि णं अजो बुग्गेहि अन्नणुत्ताया नमागी कणगावलीतवोकम्म उवमंपजित्ता ण विहेस्ताण । एवं जहा रयणावली तथा रयणावली ति. नमरं निन्नु ठाणेमु अट्टमाइं करेति जहा रयणावलीए छट्ठाटं, एक्काण परिवाडीए संवच्छरो पंच नाम्ना वाग्गस व भोजेत्ता. चउण्हं पंच वरिस्ता नय मासा अट्टागम दिवसा, सेसं तहेव । नव वासा परिगतो ज्ञाव निग्ग । (सु० १८)

अर्थ:—उसके बाद वह सुकाली साध्वी एक समय जहाँ आर्या बन्दन बाला साध्वी भी वहाँ गई और इस प्रकार कहने लगी:—हे साध्वी जी ! आपकी आज्ञा लेकर मैं कनकावली नामक तपश्चर्या की प्रवृत्त करके विहार करने की इच्छा करती हूँ। इसी प्रकार रत्नावली तप के समान ही कनकावली तप जान लेना चाहिये। विशेष यह है कि रत्नावली तपश्चर्या में तीन स्थानों पर आठ आठ और चौतीस छट्ट करने का कटा है। उनके बदले यहाँ कनकावली तपमें आठ आठ और चौतीस इन तीनों स्थानों पर अट्ठम करने के हैं। इसलिये एक परिपाटी में एक वर्ष, पाँच महीने और बाहर अहोरात्री होती है और चारों परिपाटी मिलकर पाँच वर्ष, नौ महीने और अठारह रात्री दिन होते हैं। दूसरा सब अधिकार उसी प्रकार यानी रत्नावली की तरह जान लेना चाहिये। यावत् नव वर्ष का चारित्र्य पालन कर यावत् अनशन कर के उसने सिद्धि पदको प्राप्त किया। (सूत्र १८)

सूचना:—स्वर्ण का मणिघाला अलंकार की तरह यह तपश्चर्या करने में आती है जिससे यह तप भी कनकावली नामक कहाजाता है इसकी स्थापना शृष्ठ १६३ में दी है, वहाँ से देखें।

कनकावली तप का यंत्र



13131
 1313131
 131313131
 13131313131
 1313131313131
 13131313131
 1313131
 1213131
 13131

2 2 3 2 2 2 2
 2 2 3 3 3 3 3
 2 2 3 3 3 3 3
 2 2 3 3 3 3 3
 2 2 3 3 3 3 3
 2 2 3 3 3 3 3

ॐ कनकावली तप यंत्र ॐ

एतद् ब्रह्म तपः इत्युक्तं यो विदुः श्रद्धया चरेत्।

मूल—एवं महाकाली वि, नवरं खुडागं सीहानिक्कीलियं तत्रोक्कम्मं उवसंपज्जिताणं विहरति तं जहा-
चउत्थं करोति, चउत्थं करित्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता चउत्थं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता छट्ठं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता अट्ठमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता हुवालसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता दसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता चारसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं
पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं
पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता तीसत्तिमं करोति, करेत्ता सब्बकाम-
गुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता तीसत्तिमं करोति, करेत्ता
सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसमं करोति,

करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्वसमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं
 करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता आरसमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता
 नोद्वसमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति,
 पारेत्ता आरगमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्टमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति,
 पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्टं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति,
 पारेत्ता अट्टमं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता नउत्थं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति,
 पारेत्ता छट्टं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति,
 पारेत्ता नउत्थं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता स्ववकामगुणियं पारेति ।
 तरेत् ननारि परिगडिओ. एरुण्ण परिवाडीए उम्मासा सत्त य दिवत्ता, चउण्हं दो उरिस्सा अट्टावीसा य
 दिग्गमा जाय सिद्धा । (सू० ११.).

अर्थ— इमी प्रकार महाकाली माया का भी वर्णन करना चाहिये । विशेष यह है कि—एक लघु मिश्रित-
 लिखित नामरूप को अंगीकार कर विचार करने लगी । यह तब इस प्रकार है— पहले चतुर्थ को, चतुर्थ करके

फिरसे करते हुए आंग आगे तपश्चर्या की वृद्धि करने में आती है। यह सिंह निकीरित तपश्चर्या कहलाती है। इस तपश्चर्या की स्थापना इस प्रकार है:—पहली पंक्ति में एक से प्रारंभ कर नौ तक क अंक अनुक्रम से स्थापन करने। फिर उल्टे लौटकर दूसरी पंक्ति में नौ से आरंभ कर एक तक के अंक अनुक्रम से स्थापन करने। फिर पहली पंक्ति में द्वा से नौ तक के अंक भरने। (दो, दो के पीछे तीन, तीन के पीछे यावत् नौ, नौ के पीछे एक से आठ तक के अंक भरने। इसके बाद नौ से एक तक दूसरी पंक्ति में आठ से लेकर दो के अंक पर्यन्त (आठ के पहले सात, सात के पहले पांच यावत् दो के पहले एक) अर्थात् सात से प्रारंभ कर इस प्रकार अंक स्थापन करने १।२।१।३।२।४।३।५।४।६।५।७।६।७।८।७।९।८।७।६।५।४।३।२।१।३।४।२।३।१।२।१। यहाँ एक से नौ तक दो पंक्ति हैं इसका जोड़ करने पर $४५+४५=$ मिलकर ९० होते हैं। पहली पंक्ति में दो से नौ तक बीच बीच में एक से लगाकर आठ अंक रखे हैं उसका जोड़ ३३ होता है और दूसरी पंक्ति में एक से लगा कर सात तक का जोड़ लगाने से २८ होते हैं तथा पारने के दिन ३३ होते हैं। इन सब का जोड़ १८७ होता है। इतने दिन तपश्चर्या के होने से छ महीने, और सात दिन की यह तपश्चर्या की एक परिपाटी पूर्ण होती है। इसी प्रकार चार परिपाटी होने से इन चारों का जोड़ दो वर्ष और अष्टावींश दिन में यह तपश्चर्या पूर्ण होती है। इस तप की स्थापना:—पृष्ठ २७२ में है, वहाँ से समझ लेना।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| २० | १५ | १० | ५ | ० | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | ५० | ५५ | ६० | ६५ | ७० | ७५ | ८० | ८५ | ९० | ९५ | १०० |
| २० | १५ | १० | ५ | ० | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | ५० | ५५ | ६० | ६५ | ७० | ७५ | ८० | ८५ | ९० | ९५ | १०० |

इस तपस्ये की रक्षा की ता ही नगर पहिली परिपाटी में सर्व कामयुगित पावणा करे, दूसरी परिपाटी में वेदसंगि वस्तुओं से वाचना करे, तीसरी परिपाटी में विगये रहित पावणा करे और चौथी परिपाटी में आबिल से वाचना करने की सर्वादि है।

मूल— पूर्ण कृत्य वि. नारं महालयं मीहणिलियं तयो रुम्भं जहेव सुश्रांगं, नवरं चोसीसडमं ताव जेयन्ती चोरे उनांगयन्तं, पृथग् चरितं छम्माना अद्वारत य दिवसा, चउण्डं च चरिसा दो मासा वासन य अक्षोरजा. तेने जता कालीण जाव सिना (सू० २०)

अर्थ— इसो वस्तु कृत्यागनी माची का की यान कृतना कालिये । विशेष यह है कि—उमने यथासिद्ध निरुत्थित नामक कर किया । यह पर छोटा मितनिकीतिव तप के जेसा की है । उस में विशेष यह है कि छोटे

सिंहनिष्कीर्णिक तप में नव उपवास तक करने के हैं और बड़े सिंहनिष्कीर्णिक तप में सोलह उपवास तक करने के हैं और उसी प्रकार पीछे छह कर दृसगी पंक्ति में छेदे का है। उसमें एक वर्ष, छः वर्षों में और अठारह दिन लगते हैं तथा भागों परिगणनी भिन्ना कर छः वर्ष, दो वर्षों में और बारह महोगात्र होते हैं। दोष सब अपेक्षित कार्त्तवी सार्वी की तरह रहना या कत्तु वह अनशनपर सिद्धि तद को प्राप्त हई। (गृ० २०)

इस प्रकार महा सिंहनिष्कीर्णिक तपधर्या को भी जानना चाहिये। विंशति तद दे कि एक में सोलह पर्वत और सोलह में एक पर्वत अरु व्यापन करने। फिर एक वर्षी पंक्ति में दो में सोलह पर्वत भागन किसे दृष्ट प्रयोग अंक के पीछे अनुक्रम से एक से पन्द्रह तक के अंक रखने और दूसरी पंक्ति में जो सोलह में एक तक के अंक रखे हैं उसमें पन्द्रह में दो तक के प्रयोग अंक हैं, पूरे अनुक्रम में चौदह में एक पर्वत अंक रखने। इस तप के दिन का प्रमाण इस प्रकार है:— एक में सोलह और सोलह में एक, ऐसे ही पंक्ति है। उस में एक में सोलह तक का जोड़ १३३ होने है। (दूसरी पंक्ति का भी १३३ होने है), एक में पंद्रह तक का जोड़ १२० होने है, एक में चौदह का जोड़ १०० होने है और पाचने के दिन ३१ होने हैं ये सब मिल कर ३९८ दिन होते हैं। इसमें एक वर्ष, छः वर्षों में और अठारह दिन होने हैं.



| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| महासिद्धिऋषीतिथि तप की श्यायना का यन्त्र | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |

मूल— एतं युक्तं मि, एतं सत्सत्तमियं भिस्त्रुपडिमं उवसंपजित्ताणं विहरति, पठमे सत्तए
 एतं भोगयन्त्र दन्ति पडिगोहानि एतं पाणयस्स, दोहो सत्तए दो दो भोगयस्स दो दो पाणयस्स पडि-
 गोहानि, नगे सत्तए निती भोगयन्त्र निद्रि पाणयस्स, चउत्तये चउ, पंचमे पंच, छट्टे छ, सत्तमे सत्तए सत्त
 द्रिओ भोगयन्त्र पडिगोहानि सत्त पाणयन्त्र, एवं सत्तु एवं सत्तसत्तमियं भिस्त्रुपडिमं गगुणपद्धाने सति
 त्ति एतं ७ एतत्तुण्यं भिस्त्रासत्तणे अहानुत्ता जाय आरोहन्ता जेणव अज्ञचंद्रणा अज्ञा नेणव उवा-
 या अज्ञचंद्रां अत्तं चंद्रनि नमंस्सनि, चंद्रिा नमंस्सिन्ता एवं चयासी-इच्छामि णं अज्ञाओ ! तुच्छेहि अम्भ-
 म्भस्सरा नसत्तवी अद्विनिर्च भिस्त्रुपडिमं उवसंपजित्ता णं विहरत्तए । अहानुहं देवाणुण्णिया मा पडिवंधं करेह ।

अर्थ—इसी प्रकार कृष्णा साध्वी का भी वर्णन करना। विशेष यह है कि सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार करके वह विहार करने लगी। उस में पहली सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा एक २ दत्ति आहार की और एक २ दत्ति पानी की ग्रहण करे। दूसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा दो दो दत्ति भोजन की और दो दो दत्ति पानी की ग्रहण करे। तीसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा भोजन की तीन २ दत्ति और पानी की तीन २ दत्ति ग्रहण करे, चौथी सप्तमिका में चार चार, पांचवीं में पांच पांच, छठी में छः और सातवीं सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा सात सात दत्ति भोजन की और सात सात दत्ति पानी की ग्रहण करे। इस प्रकार करने से यह सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को गुण पचास रात्रि-दिन और एकसौ छत्तुं दत्तियों से सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहाँ आर्य चंदन बाला साध्वी थी वहाँ आई, आकर आर्य चंदन बाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार कहा:— हे साध्वीजी ! आप की आज्ञा हो तो मैं अष्ट अष्टमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विचरने की इच्छा करती हूँ। तब साध्वी ने कहा कि:—हे देवानुप्रिया ! जिस में तुझे सुख उत्पन्न हो वह तप कार्य करने में विलंब मत कर।

मूल—तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णया समाणी अट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपजित्ताणं विहरति, पढमे अट्ठए एक्कं भोगणस्स दत्तिं पडिग्गाहेति, एक्कं पाणयस्स जाव अट्ठमे

अदृष्टं भोयणस्स पडिगाहेनि, अट्ट पाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्सदीणं
 नत्तिदिण्हिं द्रोदि न अट्टासीण्हिं भिस्सासाण्हिं अत्तात्तं जाव आगहिता नवत्तवमियं भिस्सुपडिमं
 उरत्तंरत्तिनाण निरत्ति । पडमे नराण एत्थेत्थं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेनि एत्थेत्थं पाणयस्स जाव नवमे
 न राण नरा दत्तिं भोयणस्स पडिगाहेनि, नरा नव पाणयस्स । एवं खलु नवत्तवमियं भिस्सुपडिमं
 सुत्ताभेत्तिरात्तिदिण्हिं चउत्तिं पंचोत्तरेत्ति भिस्सासाण्हिं अत्तात्ता जाव आगहिता दत्तदत्तमियं भिस्सुपडिमं
 उरत्तंरत्तिनाणं निरत्ति । एत्थेत्थं दत्त एत्थेत्थं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेनि एत्थेत्थं पाणयस्स जाव दत्तमे
 दत्त एत्थेत्थं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेनि दत्त दत्त पाणयस्स । एवं खलु एवं दत्तदत्तमियं भिस्सुपडिमं
 एत्थेत्थं दत्तदत्तमियं अट्टदत्तदिं भिस्सासाण्हिं अत्तात्तं जाव आगहेनि, आगहिता चउत्तिं चउत्तय जाव
 भिस्सुपडिमं पडिगाहेनि अट्टपाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्तय जाव

अदृष्टं भोयणस्स पडिगाहेनि, अट्ट पाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्सदीणं

अदृष्टं भोयणस्स पडिगाहेनि, अट्ट पाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्सदीणं
 अदृष्टं भोयणस्स पडिगाहेनि, अट्ट पाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्सदीणं
 अदृष्टं भोयणस्स पडिगाहेनि, अट्ट पाणयस्स । एवं खलु एवं अट्टमियं भिस्सुपडिमं चउत्सदीणं

मूल—नपुं णं मुक्कण्हा अज्ञा तेणं ओगलेणं जाव सिद्धा । निम्बेवो अज्जयणं । (सू० २१) ।
 अर्थ—उस के बाद यह मुक्कणा साध्वी गैसी उदार तपस्वियों द्वारा यावत् अनशन कर अष्ट कर्मों का
 क्षय करने के लिए यह जो प्राप्त हुई । इस प्रकार उस अध्ययन का निक्षेप पानी व्याख्यान पूर्ण हुआ (सू० २१)
 मूल—एवं महाकण्हा नि, णारं खुगुगं सब्बओभइं पडिमं उवसंपिज्जिताणं विहरति, तं जहा—
 वड्यं हरेति, वड्यं पत्तिता मन्नाहामगुणियं पारेति, सब्बहामगुणियं पारेता छट्टं करेति, छट्टं हरेता मन्वकाम-
 गुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता अट्टमं हरेति, अट्टमं करेता मन्वहामगुणियं पारेति, मन्वकामगुणियं
 पारेता इमं हरेति, इमं हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता दुयालमं हरेति, दुयालमं
 हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता अट्टमं हरेति, अट्टमं करेता मन्वकामगुणियं पारेति,
 मन्नाहामगुणियं पारेता इमं हरेति, इमं हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति मन्वकामगुणियं पारेता दुयालमं
 हरेति, इयालमं हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता वड्यं हरेति, वड्यं हरेता
 मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता छट्टं हरेति, छट्टं करेता मन्वकामगुणियं पारेति, मन्व-
 कामगुणियं पारेता इयालमं हरेति, इयालमं हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता वड्यं
 हरेता, वड्यं हरेता मन्नाहामगुणियं पारेति, मन्नाहामगुणियं पारेता छट्टं हरेति, छट्टं करेता मन्वकामगुणियं

पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति । एवं ग्वल्लु एवं खुट्टागसब्बतोभयसस तवोकम्मसस पडमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं द्वियसेहिं अट्टासुत्तं जाव आराहेत्ता दोच्चाण परिवाडीण चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता विगड्वज्जं पारेति, विगड्वज्जं पारेत्ता जहा रयणावलीण तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ पारणा तहेव । चउण्हं कालो संबच्छरो मामो दम य द्विवसा, मेमं तहेव जाव सिद्धा, निम्वेयो अञ्जयणं (सू० २२) ॥

और पानी की एक = उक्ति गण्य रहे। इसी प्रकार एक = उक्ति बसने हुए पान् आर्यी अटमिका में
 अत्र दिन तक भोजन ही अत्र = उक्ति और पानी ही अत्र = उक्ति ग्रहण रहे। इस प्रकार निधाय लोके यह अत्र
 अटमिका नामक नियु प्रतिमा पीत रसि दिन में और दो सौ अटमिका उक्तियों में सूत्र में ही अनुमा
 आगान परं, न नरभिका नामक नियु प्रतिमा को अंगीकार कर रित करने लगी। उस में पहले नौ दिन
 एक भोजन ही एक एक उक्ति और पानी ही एक = उक्ति ग्रहण रहे। इसी प्रकार एक नरभिका में एक =
 उक्ति बसने हुए पान् नरन नरभिका में नौ दिनों एक भोजन ही नौ नौ उक्ति और पानी ही नौ नौ उक्ति
 गण्य रहे। इस प्रकार नियु परं, पर नाम नरभिका नामक मिथु प्रतिमा को एकही रात्रि दिनों में और बार
 सौ सौ उक्तियों में सूत्र में ही अनुमा आगान परं, करे करि द्युत नामक मिथु प्रतिमा को ग्रहण
 करे, विचार करने लगी। इन में पहले द्युत दिन तक भोजन ही एक एक उक्ति और पानी ही एक = उक्ति
 गण्य रहे, बारस द्युत नामक प्रतिमा में भोजन ही द्युत द्युत उक्ति और पानी ही द्युत उक्ति ग्रहण रहे। उस
 प्रकार मिथु परं, पर द्युत नामक प्रतिमा नामक मिथु प्रतिमा एक ही रात्रि दिनों में और सौ सौ (५५०)
 उक्तियों में सूत्र में ही अनुमा आगान परं, करे करे पौनमी नामक प्रतिमा और मान अमग
 नरभिका नामक प्रतिमा की उक्तियों परं, करे करे भोजन में अगनी आत्मा को आयती हुई विचार करने लगी।

दिव्यी त्रये
 गहित,
 ८ गो

करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ करे, छठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, छठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, इस प्रकार निश्चय करके इसी तरह छोटी सर्वतोभद्रा नामक तपश्चर्या की पहली परिपाटी तीन महीने और दश दिन की सूत्र में कह अनुसार यावत् आराधन की, आराधन करके दूसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके विर्गई को छोड़ कर पारना करे, विर्ग छोड़ कर पारना करने के बाद छठ वगैरह उपरोक्त तप करे, जैसा रत्नावली तपश्चर्या में कहा है, उसी प्रकार यहां भी चारों परिपाटी में पारना करने का जान लेना । चारों परिपाटी का काल एक वर्ष, एक महीना और दश दिन का होता है।

द्वारा अभिप्राय उगी प्रकार यानी काली माधवी के अनुसार वर्णन करना यावत् यह सिद्ध पद को प्राप्त हुई। इस प्रकार इस व्यवहान का विवरण पूर्ण हुआ (नु० २२)

विशेषार्थः—परी सर्वतोभद्रा प्रतिमा की अपेक्षा यह छोटी होने से लघु सर्वतोभद्रा कहलानी है। सर्व विद्या और विद्विज्ञा में भद्रा यानी मम संग्या वाली होने से सर्वतोभद्रा कहलानी है। यह इस प्रकार है—एक से पाँच तक के एक बीजक होने में यह प्रतिमा के अन्तर चीतरक पंद्रह २ का जोड़ आता है उसकी स्थापना करने का इस प्रकार है।

नूतना—मस पौरुष उः गः नानुन के चौगुने पाँच २ गाने करने यानी एक वर्षीय नाने बनाने, फिर वर्षीय नान में एक से पाँच तक के अंक रखने। जो नाना पाँच में इसे पुरनी पंक्ति में पहिले स्थान वाली के गानों में उमके पीछे दूसरे स्थान पर नानुन में लिखने, ऐसा करने से छोटी सर्वतोभद्रा प्रतिमा होती है इस प्रतिमा में पारवर्ती के दिन विचोत्तर (५०) होंगे और पारने के दिन वर्षीय (२५) होंगे। मर सिद्ध एक पणिगदी में सौ दिन और चारों पणिगदी के दिन पर चारवीं दिन पंक्ति है।

लघु सर्वतोभद्रा

| | | | | |
|---|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ |

मूल—एवं वीरकण्ठा वि, नवरं महालयं सवतोभङ्गं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा-
चउत्थं करोति, चउत्थं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करोति, छट्ठं करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारित्ता अट्ठमं करोति, अट्ठमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति,
सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोति, दसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवा-
लसमं करोति, दुवालसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसं करोति, चउदसं
करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करोति, सोलसं करोत्ता सव्वकामगुणियं
पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता
पारेत्ता दुवालसमं करोति, दुवालसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता
चउदसं करोति, चउदसं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करोति, सोलसं
करोत्ता सव्वकागुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करोति, चउत्थं करोत्ता सव्वकामगुणियं
पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करोति, छट्ठं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता

अष्टमं करोति, अष्टमं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करोति, सोलसं करोता
 स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता स्वकामगुणियं पारेति,
 स्वकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करोति, छट्टं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता अष्टमं क-
 रति, अष्टमं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोति, दसमं करोता स्वकाम-
 गुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करोति, दुवालसमं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्व-
 कामगुणियं पारेत्ता चउदसं करोति, चउदसं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता अष्टमं
 करोति, अष्टमं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोति, दसमं करोता स्वकामगु-
 णियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करोति, दुवालसं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं
 पारेत्ता चउदसमं करोति, चउदसमं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं
 करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता स्वकामगुणियं पारेति,
 स्वकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करोति, छट्टं करोता स्वकामगुणियं पारेति, स्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसमं करोति,

नोदसमं करोता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करोति, सोलसमं करोत्ता सव्वकाम-
गुणियं पारेति, मन्वाकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करोति, चउत्थं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं
पारेत्ता उट्टं करोति, उट्टं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करोति, अट्टमं करोत्ता
मन्वाकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोति, दसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति । गण्डेक्काण
अट्टमाणं पंच य दिवसा. चउत्थं दो मासा अट्ट मासा वीसं दिवसा । सेसं तहेव जाव सिद्धा । (सू० २३)

अर्थ:—इसी प्रकार श्रीगुरुणा मासकी सा भी वर्णन करना चाहिये कि यद्यथा यथा मन्वा सर्वतोभद्रा
नामक तपस्यियों की प्रथम करने विचार करने उगी । यह तपस्यियों इस प्रकार है:—पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व
काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके उट्ट करे, उट्ट करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व
काम गुणित पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके
दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके
सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्विंश करे, चतुर्विंश करके सर्व काम गुणित पारना
करे, सर्व काम गुणित पारना करके पौषड करे, पौषड करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित

णित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, दशम प्रकार एक परिपाटी में आठ महीने और पांच दिन लगते हैं, और चारों परिपाटियों में द्वा वर्ष, आठ महीने और बीस दिन लगने हैं। शेष सब वर्णन काली साध्वी की तरह याचव बहुत प्रकार का तप कर अनशन कर सर्वकर्मों को क्षय कर अंत में भिद्र पद को प्राप्त हुई। (सू० २३)

सूचना:—गोष्ठी संरितो भद्रा ही तरह यह महा सर्वतो भद्राको भी जाननेवा गान्धो। इसमें विशेष यह कि इस नपथ्या में एक उपवास से आरंभ पर मास उपवास तक प्राये हे। उसकी स्थापना करने की रीति इस प्रकार है—पहले तीन दिन अंश पान पत्नी पंक्ति में लिखने। उसमें जो मध्य का पंक्ति हो वह दूसरी पंक्ति में पन्ने लिखना और उसके बाद तप के अनुक्रम में शेष पात्र लिखने। इस प्रकार महा सर्वतो भद्रा होती है। यहाँ नपथ्या के दिन एक ही तरह (१२३) होते हैं और पान्ने के दिन गुनवास (४०) होते हैं। इस प्रकार एक पत्रियाही में कुल दो सौ और पंतालीस (२४५) दिन होते हैं। इस को चार गुणा करने से चार पत्रियाही होती हैं। (कुल दिन की संख्या ९८०) नया सर्व तो भद्राही स्थापना का यंत्र यह है।

दृष्ट—एवं रामकृष्ण वि, नारं भद्रोत्तरपत्रिमं उवसंपञ्चितानं विहति, तं जहा— दुवालसमं भवेत्, दुवालसमं रेत्ना मगरामगुणियं पागेति, मद्यममगुणिय पागेत्ता चोदममं रेत्ना मद्यममगुणियं पागेति, मद्यममगुणियं पागेत्ता मोलसमं करेत्ता मोलसमं करेत्ता मद्यममगुणियं पागेति.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ३ |
| ७ | ८ | ९ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | ३ | ४ | ५ |
| ९ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | ३ | ४ | ५ |
| ९ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |

अथ वाचनान्तर में इन तीनों प्रतिमा के लक्षण की गाथाएँ इस प्रकार प्राप्त होती हैं। दो प्रतिमा के अन्दर अर्थात् छोटी सर्वतोभद्रा में और महा सर्वतोभद्रा में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करने का है तथा भद्रोत्तरा नामक तीसरी प्रतिमा में पहिले द्वादश (पाँच उपवास) करने के हैं। उसके बाद अनुक्रम से द्वादश (पाँच उपवास), षोडश (सात उपवास) और विंशति (नव उपवास), ये तीनों प्रतिमा की पहली पंक्ति के अन्तिमके तप हैं। शेष तपश्चर्या में अनुक्रम से अंक स्थापन करने ॥ १ ॥ अब दूसरी, तीसरी वगैरह पंक्ति की स्थापना के लिये कहते हैं:— पहली पंक्ति में जो तीसरा अंक है उसको दूसरी पंक्ति की रचना में पहले रखना। वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में तीन का है और भद्रोत्तरा में सात का है। इसके बाद अनुक्रम से आगे २ के अंक रखने वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में चार के बाद पाँच का है, और भद्रोत्तरा में आठ के बाद नव का अंक है। उसके बाद अन्तिम अंक के बाद जितने खाने रहे हों वे कोठे पहले के एक वगैरह अंकों से पूर्ण कर देने। इस प्रकार करने से सर्वतोभद्रा की दूसरी पंक्ति में अन्तिम पाँच के अंक के बाद एक और दो का अंक आता है, और दूसरी भद्रोत्तरा की दूसरी पंक्ति में पाँच और छ का अंक आता है। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति पूरी होती है। इसी प्रकार ऊपर की अपेक्षा नीचे की पंक्ति करना। ऐसी सब मिलाकर पाँच पंक्ति स्थापन करनी, यह रचना छोटी सर्वतोभद्रा और भद्रोत्तरा प्रतिमा के अन्दर जान लेना चाहिये। इस गाथा का अर्थ उपरोक्त कहे हुए

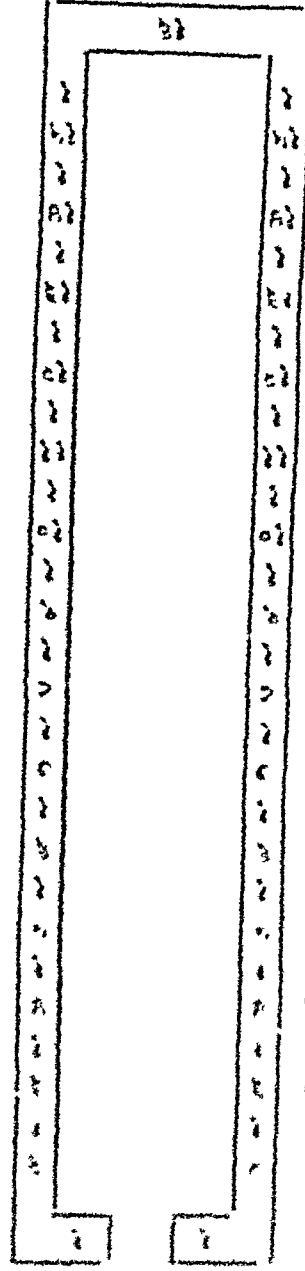
रत्न में जान लेता । ॥ २ ॥ अब महा सर्वोभद्रा की दुर्गा, तीसरी योगरह पंक्ति की रचना करने के लिये उपाय राश्यां के महा सर्वोभद्रा प्रतिमा की दुर्गा पंक्ति रखनी हो तो पश्चिमी पंक्ति की अपेक्षा चौथे स्थान में रहे हुए एक को ध्यादि में रखना जैसे कि पश्चिमी पंक्ति के चौथे स्थान में चार का अंक है वह दूसरी पंक्ति में स्थित रखना । इसके बाद अनुक्रम में दूसरे अंकों को स्थान पानी पांच, छ और अन्तिम में सात का अंक रखना । इसके बाद उस पंक्ति में जिनके स्थान (तीन) तक रहे हों उसमें अनुक्रम से (१-२-३) अंक रख कर उस दुर्गा पंक्ति को पूरी करनी । इसी प्रकार सात की पंक्तियां पूर्ण करनी चाहिये । इस प्रकार महा सर्वोभद्रा प्रतिमा में जानलेना चाहिये ।

शुद्ध—एवं पित्रुनेगरुपता रि, नारं मुनावलीनभोक्तुमं उवसंपञ्जिताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं केलि, चउत्थं करेना नन्वकामगुणियं पारंति, सव्यकामगुणियं पारंता इष्टं करेचि, इष्टं करेना सव्यकाम गुणियं पारंति, नन्वकामगुणियं पारंता चउत्थं करेना सव्यकामगुणियं पारंति, सव्यकामगुणियं पारंता उद्धमं करेनि, उद्धमं करेना सव्यकामगुणियं पारंति, सव्यकामगुणियं पारंता चउत्थं करेनि, चउत्थं करेना सव्यकामगुणियं पारंति, सव्यकामगुणियं पारंता दत्तमं करेनि, दत्तमं करेना सव्यकामगुणियं पारंति,

हिन्दी अर्थ
 मरिचि.
 ८ वीं

करेता सञ्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता छब्बीसइमं करेति, छब्बीसइमं करेता सब्जकाम-
गुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं
पारेता अट्टासीसं करेति, अट्टासीसं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति,
चउत्थं करेता मन्वरासामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता तीसइमं करेति, तीसइमं करेता सब्जकामगु-
णियं पारेति, मन्वरासामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं
पारेता यनीसइमं करेति, यनीसइमं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति,
चउत्थं करेता मन्वरासामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चोत्तीसइसं करेति, चोत्तीसइसं करेता सब्ज-
कामगुणियं पारेति, मन्वरासामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जका-
मगुणियं पारेता यनीसइमं करेति, एवं तहेम ओसारेति जाय चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं
पारेति । एषाण् सानो एषाण् नाला पनस्त य दिससा । चउत्थं निण्डि यरिसा दस य मामा । सेसं तहेव
तय सिन्ना । (मन् ३५)

अर्थ:—इसी प्रकार पितृसेनकृष्णा साध्वी का वर्णन करना । विशेष यह है कि यह मुक्तावली नामक तपश्चर्या ग्रहण कर विहार करने लगी । यह मुक्तावली तपश्चर्या इस प्रकार है:—पहिले एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दो उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके तीन उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चार उपवास करे, चार उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके पाँच उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके छ उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके सात उपवास करे, सात उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके आठ उपवास



भूतः— एते महात्मानो कृष्णानि, नमरं आयविलवद्दमाणं तवोकमं उवसंपञ्जिनाणं विहरति, ते ज्ञान-एग आयविलं करोति, एग आयविल करता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता ये आयविलाइं करोति, ये आयविलाइं करोता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता निश्चि आयविलाइं करोति, निश्चि आयविलाइं करोता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता चनारि आयविलाइं करोति, चनारि आयविलाइं करोता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता पंच भायविलाइं करोति, पंच आयविलाइं करोता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता छ आयविलाइं करोति, छ आयविलाइं करोता चउत्यं करोति, चउत्यं करोता एते एकोनगियाए, एड्डीए आयविलाइं वड्ढंति चउत्यंतगियाइं

जाव आयंबिलसयं करोति, आयंबिलसयं करोत्ता चउत्थं करोति ।

अर्थ:— इसी प्रकार महासेनकृष्णा साध्वी का धृतान्त कहना । विशेष यह है कि—आयंबिल वर्धमान नामक तपश्चर्या ग्रहण करके विहार करने लगी । वह इस प्रकार है:—पहिले एक आयंबिल करे, एक आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके फिर दो आयंबिल करे, दो आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके तीन आयंबिल करे, तीन आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके चार आयंबिल करे, चार आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके पाँच आयंबिल करे, पाँच आयंबिल करके एक उपवास करके छ आयंबिल करे, छ आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके इसी प्रकार एक एक उपवास के आंतरे से एक एक आयंबिल को बढ़ाते हुए यावत् सौ आयंबिल करे, सौ आयंबिल करके एक उपवास करे ।

मूल— तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्डमाणं तवोकम्मं चोदसेहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरेत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेति, जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरति ।

स्त्री:—उमके बाद उस महासैनहुणा माखी ने आंगविल वर्द्धमान नामक तपस्वी को बौद्ध रूप, तीन महिने और बीस अशोराशी से (आंगविल ६०६० और एक मी उपवास मिलाकर ५१५० दिन पंगत) सूत्र से करे धनुसार गान्त मन्त्र प्रहार में काया से यहण किये, गात् आरागन कर जहाँ आयें गन्धन बाला माखी भी यहाँ आई। आहर आगे बंजनबाला माखी को बंदना की, नमस्कार किया। बंदना नमस्कार कर बहुत से उपवास गात् १४-संगम में अपनी आत्मा को भावनी हुई विहार करने लगी।

मूल—तप णं मा महानिणकण्हा अजा तेणं आरोलेणं जाव उवसेभिसाणी चिट्ठे । तप णं तीसे मयनिणकण्हाय अजाय अत्तया कयाडं पुच्चरत्तामत्तकाले चिंता जाहा मंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जे पुत्तुड जाव संलेहणा, कालं अणरकंसयसाणी विहरति ।

स्त्री:—उमके बाद यह महासैनहुणा माखी उस प्रधान तपस्वी द्वारा यात् अतीव २ गोपित होकर रहने लगी। उमके बाद उस महासैनहुणा माखी को मंत्रक मुनि की तरफ एक समय रुद्राचित् गत्री के पूर्वभाग और अन्धिम नाम के शीत गौलि मय रात्रिसे विहार उन्मत्त हुआ, यात् स्त्रीयें बंदनबाला माखी से उमने पूजा, तप कर गात् संश्रयता कर मरने की आज्ञा न करनी हुई रहने लगी।

मूल—तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुत्ताइं सत्तरस वासाइं सामन्नं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरईं जाव तमट्ठं आराहेति चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा ।

अर्थ:—उसके बाद उस महासेनकृष्णा साध्वी ने आर्य बन्दनबाला साध्वी के पास सामायिक वगैरह ग्यारह अंग पढकर सम्पूर्ण सत्तरह वर्ष का चारित्र पालन कर एक महीने की संलेखना कर शरीर को क्षीण किया, साठभक्त का (एक महीना) अनशन कर जिस के लिये चारित्र ग्रहण किया था, यावत् उस मोक्ष का आराधन किया, अन्तिम स्वाच्छोश्वास को पूर्ण कर सिद्ध हुई, बुद्ध हुई और मोक्ष को प्राप्त हुई ।

अब इस आठवें अन्तिम वर्ग में कही हुई काली वगैरह साध्वियों के दीक्षा पर्याय को प्रतिपादन करने के लिये सूत्र की गाथा कहते हैं ।

मूल— अट्ट य वासा आदी एकोत्तरीयाए जाव सत्तरस । एसो खलु परिआओ सेणियभज्जाणं णायव्वो ॥ १ ॥

वासुदेवे आहेवचं जाव विहरति ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्भू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उस में पहले अध्ययन में करे अनुसार कृष्ण वासुदेव अधिपतिपना भोगते हुए यावत् रहते थे ।

मूल—तत्थ णं वारवतीए णगरीए वसुदेवे राया, धारिणी देवी, वन्नओ । जहा गोयसो नवरं जालिकुमारो, पद्मासओ दाओ, वारसंगी, सोलस वासा परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुजे सिद्धे ।

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में वसुदेव नामक राजा थे, उनके धारिणीदेवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना । उस राणी के गौतम कुमार के समान पुत्र हुआ । विशेष यह है, कि उसका नाम जालिकुमार रखवा, पचास कन्यायों से लग्न कराया और उसको पचास ऋडू का दहेज दिया । फिर उसने दीक्षा ग्रहण की, बारह अंगों का अभ्यास किया । सोलह वर्ष तक धारिणी को पालन किया । शेष सब वर्णन गौतम कुमार की तरह कहना यावत् शत्रुंजयगिरि तीर्थराज पर सिद्ध हुआ ॥ १ ॥

मूल—एवं मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य, एवं पज्जुन्ने वि त्ति, नवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माता । एवं संवे वि, नवरं जंबवती माता । एवं अनिरुद्धे वि, नवरं पज्जुन्ने पिया वेदव्भी माया ।

एवं सच्चनेमी, नवरं ससुहृद्विजये पिता सिवा माता । एवं दृढनेमी वि । सञ्चे पृगगमा । चउदथवगगस्स
निक्खेवओ (सू०८)

अर्थ—इसी प्रकार २ मयाहि, ३ उबयाहि, ४ पुरयसेन, ५ वारिसेण और ६ प्रमुन्न इन पाँचों कुमारों का
आधिकार समान जानना, विशेष है कि इनके पिता कृष्ण बासुदेव और माता रुक्मिणी भी । इसी प्रकार ७ मांभ
कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनका पिता कृष्ण और माता जांबुवती भी । इसी प्रकार ८ अनिरुद्ध
कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनका पिता प्रमुन्न कुमार और माता वैदर्भी भी । इसी प्रकार ९
सत्यनेसि कुमार का अध्ययन कहना । विशेष यह है कि इनके पिता समुद्रविजय जी और माता त्रिवांश्री भी ।
इसी प्रकार १० दृढनेमिका अध्ययन कहना । सबों का एक समान ही अधिकार है । ये भी सब शत्रुनाय पर मुक्ति
गये हैं । इस प्रकार चौथे वर्ग के दशों अध्ययनों का स्वरूप कहा ।

॥ इति चौथे वर्ग के दश सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पंचम वर्ग ॥

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स, वगस्स अयमढे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वगस्स अंतगढदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अहे पन्नत्ते ? ।

अर्थ— जम्बू स्वामी सुधर्मस्वामी से पूछते हैं कि हे भगवान् ! अमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने चौथे वर्ग का यह अर्थ कहा है तो अन्न हे भगवान् ! अंतगढदसा के पांचवें वर्ग का अमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने किस प्रकार का अर्थ कहकर समझाया है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा— ‘पउमावती १ य गोरी २ गंधारी ३ लम्बवणा ४ सुसीमा ५ य । जंबवई ६ सच्चभामा ७ रुप्पिणि ८ मूलसिरि ९ मूलदत्ता १० वि ॥ १ ॥ ’

अर्थ— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! अमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पांचवें वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं— पद्मावती १, गौरी २, गांधारी ३,

लक्ष्मणा ४, सुसीमा ५, जाम्बूवती ६, सत्यभामा ७, रुक्मिणी ८, मूलश्री ९ और मूलदत्ता १० इन दश राणियों के नाम से दश अध्ययन कहे हैं ।

मूलः—जइ णं भंते ! पंचमस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थः—हे भगवन् पांचवें वर्ग के दश अध्ययन श्री महावीर स्वामी ने कहे हैं तो हे भगवन् ! पांचवें वर्ग के पहले अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवती नगरी, जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेत्तच्चं जाव विहरति । तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावइ नाम देवी होत्था, वन्नओ ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी श्री वंशरह पहले अध्ययन की तरह कहना । यावत् उस नगरी में कृष्ण वासुदेव अधिपति बनकर रहते थे । उन कृष्ण वासुदेव की पद्मावती देवी नामक राणी थी उसका वर्णन करना ।

मूलः— ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठेनेमि समोसेढे जाव विहरति । कण्हे वासुदेवे

णिग्गते जाव पज्जुवासति ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् वहाँ पधारे, यावत् योग्य स्थान लेकर रहे । उस वक्त उनको बंदना करने के लिये कृष्णवासुदेव नगरी से निकले, यावत् भगवान् की सेवा करने लगे ।
मूलः—तए णं सा पउमावती देवी इमीसे कहाए लच्छडा समाणी हट्ट तुट्ट जहा देवती जाव पज्जु-
वासति ।

अर्थः— उसके बाद वह पद्मावती देवी इस यृतान्त का अर्थ जान कर यानी भगवान् के पधारने की बात सुन कर देवकी देवी की तरह हट्ट तुट्ट होकर भगवान् के पास जाकर यावत् भगवान् की सेवा करने लगी ।
मूलः—तए णं अरिहा अरिष्टनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावतीए य धम्मकहा, परिसा पडिगया ।

अर्थः— उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव तथा पद्मावती देवी वीरह पर्यदा को धर्म कथा कही । जिसको सुन कर पर्यदा अपने २ स्थान पर गई ।
मूलः—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

इमीसे णं भंते ! वारवतीए नगरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए किंमूलाते विणासे भविस्सति ? ।

मूलः—कण्हाति अरहं अरिद्वेनेमि कण्हं वासुदेव एव वयासी—एव खलु कण्हा ! इमीस वारवतते वारवतते वारवतते ।

नयरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए सुरगिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सति ।

अर्थः— हे कृष्ण ! ऐसा संबोधन करके अरिहंत अरिप्रिनेमि भगवान् ने इस प्रकार कहा । इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण ! यह द्वारिका नगरी नव योजन विस्तार वाली यावत् देवलोक के समान है इसके विनाश होने में मद्य (शराब), अग्नि और द्वीपायन ये तीन कारण होंगे, क्योंकि कुमारी को उन्मत्त करवाली मदिरा; अग्नि कुमार देव ने प्रज्वलित की हुई अग्नि और द्वीपायन यानी मदिरा पान से उन्मत्त हुए तुम्हें कुमारी के दुःख देने से द्वारिका विनाश करने वाला उक्त नाम का बालतपस्वी कि जो अग्नि कुमार देव अग्नि कुमार देव अग्नि लगाने वाला द्वीपायन नामानाम तपस्वी ही द्वारिका का नाश करने के लिये कारण भूत होगा ।

मूलः—तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहतो अरिद्वेनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

अवभथिए समुप्पन्ने - धन्ना णं ते जालि-मयालि-उवयाली-पुरिससेण वारिसेण-पब्बुन्न-सांव-अनिरुद्ध-दढनेमि सच्चनेमिप्पभियातो कुमारा जे णं चइत्ता हिरन्नं जाव परिभाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वतिया। अहणं अथन्ने अकयपुन्ने रजे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु सुच्छित्ते नो संचाएमि अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वतित्तए।

अर्थ:— इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास से इस प्रकार की बात सुनकर हृदय में धारण करने से इस प्रकार विचार किया कि वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरूपसेन, वारियेण प्रपुम्म, शांघ, अनिरुद्ध, दढनेमि और सत्यनेमि वगैरह कुमारों धन्य है कि जिन्होंने राज, स्वर्ण वगैरह का त्याग कर यावत् अपने हिस्से को दान देकर अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की है। मैं ही सिर्फ अप्रशंसित एवं अधन्य पुण्य हीन हूं, तथा राज के लिये यावत् अंत:पुर (रणवास) के लिये और मनुष्य सखन्धी काम भोग के लिये अनुरागी सुर्द्धित हूं, जिससे मैं अरिहंत अरिट्ठनेमि भगवान् के पास यावत् दीक्षा लेने को असमर्थ हूं।

मूल:—कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेव एवं वयासी- से नूणं कण्हा ! तव अयमवभथिए समुप्पन्ने-धन्ना णं ते जाव पव्वतित्तए से नूणं कण्हा ! अयमहे समहे ? हंता अत्थि ।

अर्थ:—हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण ! तुमको यह विचार उत्पन्न हुआ है कि वे कुमार धन्य हैं कि जिन्होंने दीक्षा ग्रहण की है और मैं दीक्षा ले नहीं सकता । तो निश्चय करके हे कृष्ण ! यह बात सच्ची है ? कृष्ण वासुदेवने ने कहा— हां भगवान् यह सच्ची है ।

मूल:—तं नो खलु कण्हा ! तं एवं भूअं वा भवस्सति वा जअं वासुदेवा चइअं वासुदेवो ने जाव पव्वइस्संति ।

अर्थ:—तो निश्चय करके हे कृष्ण ! ऐसा हुआ नहीं, हो सकता नहीं और होगा भी नहीं कि जो वासुदेवों ने राज्य का त्याग कर स्वर्ण छोड़ यावत् दीक्षा ग्रहण की हो, ग्रहण करते हो या ग्रहण करेंगे ।

मूल:—से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ— न एयं वा जाव पव्वइस्संति ? ।

अर्थ:—हे भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहते हो कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवोंने दीक्षा ग्रहण की नहीं ? ।
मूल:—कण्हाति ! अरहा अरिष्टनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी — एवं खलु कण्हा सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा, से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं बुच्चति — न एयं भूयं जाव पव्वइस्संति ।

अर्थ:—हे कृष्ण ! ऐसा सम्योधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण ! सब वासुदेवों ने पूर्वभ्रम में नियाणा किया हुआ होता है, नियाणे करने वाले को चारित्र्य उदय आता नहीं इसलिये इस कारण से हे कृष्ण ! मैं ऐसा कहता हूं कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवों ने दीक्षा ली नहीं ।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिष्टनेमिं एवं वयासी-अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किञ्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उव्वज्जिस्सामि ? ।

अर्थ:—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से इस प्रकार कहा कि- हे भगवन् ! मैं यहाँ से आयुष्य को पूरा कर कहाँ जाऊँगा ? कहाँ उत्पन्न होऊँगा ? ।

मूल—तए णं अरिहा अरिष्टनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी- एवं खलु कण्हा ! वारवतीए नयरीए सुरदीवायणकोवनिद्दुड्ढाए अस्मापिइनियगविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणेत्रेयालिं अभिसुहे जोहिट्टि- ह्यपामोक्खणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिते कोसंबवणकाणणे नगोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीतवत्थपच्छाइयसरिरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्खेणं इसुणा वामे पादे विद्धे

समाणे कालमासे कालं किञ्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके दे कृष्ण ! द्वारिका नगरी अग्निकुमार में देव उत्पन्न होने वाले द्वीपायन के कोप से जल कर भस्म हो जायगी तब माता पिता और स्वजन रहित होने से तुम अकेले ही बलदेव के साथ दक्षिण दिशा के समुद्र के किनारे बसी हुई पांडु मथुरा नामक नगरी की तरफ युधिष्ठिर वगैरह पांडु राजा के पुत्र पांचों पाण्डवों के पास जाने के लिये चलोगे । उस वक्त रास्ते में कौशांबी नगरी के जंगल में श्रेष्ठ बड़ वृक्ष के नीचे पृथ्वीशीला पटक पर पीले वस्त्र से गरिर को ढक कर सोओगे । उस वक्त जरा कुमार के धनुष में से छोड़ा हुआ तीक्ष्ण बाण द्वारा दाहिना पैर विंध जाने से आयु समय आयुष्य पुरा कर उज्वल वेदना वाली बालुकप्रभा नामक तीसरी नरक पृथ्वी में नर्कावस्था में उत्पन्न होओगे ।

मूल—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिष्टनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओह्य जाव

क्षियाति ।

अर्थ—इस के बाद कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से यह अर्थ सुन कर तथा हृदय में धारण कर शून्य चित्त से संकल्प विकल्प करते हुए विचार करने लगे ।

मूलः—कण्हाति ! अरहा अरिष्टनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे आगमेसीए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे वारसमे अमसे नामं अरहा भविस्ससि, तत्थ तुमं वहुइं वासाइं केवल्लिपरियागं पाउणेत्ता सिञ्जिहिसि ।

अर्थः— इसके बाद हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से कहा कि हे देवानुप्रिय ! तुम आर्तध्यान (दुःखी मत होओ) मत करो; क्योंकि तुम प्रबल वेदना वाली तीसरी नरक पृथ्वी से अंतरा रहित बाहर निकल कर इसी जम्बुद्वीप नामक द्वीप के भारत वर्ष में आती उत्सर्पिणी काल में पुंड्र देशान्तर्गत शतद्वार नामक नगर में वारहवे अमम नामक अरिहंत होओगे । वहां तुम बहुत वर्षों तक केवली पर्याय को पालकर सिद्ध पद को प्राप्त करोगे । बुद्ध होओगे और कर्म रहित होकर सब दुःखों का अन्त करोगे ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिष्टनमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ठ अप्फोडेति, अप्फोडित्ता वग्गति, वग्गित्ता तिवतिं छिंदति, छिंदित्ता सीहनायं करेति करित्ता, अरहं अरिष्टनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थि दुरुहत्ति, दुरुहित्ता जेणेव वारवती णगरी जेणेव

सए गिहे तेणेव उवागते, अभिसेयहत्थिरयणातो पच्चोसहति, पच्चोसहिता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुविय पुरिसे सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी—

अर्थः— इसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पाससे यह अर्थ कान द्वारा सुन कर हृदय में धारण कर छुटतुष्ट होकर भुजाओं का आस्फालन किया, करके उछाल मारी, उछाल मारकर त्रिपदी यानी रंगभूमि ऊपर रहे हुए योद्धा के समान तीन डगले स्थापन क्रिये अर्थात् तीन फलांग कूदकर सिंहनाद किया। सिंहनाद करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके अपने पट्टाभियेक हाथी पर चढ़े। चढ़कर जहाँ द्वारिका नगरी थी और जहाँ अपना घर था वहाँ आये। आकर पट्टाभियेक हस्ती रत्न से नीचे उतरे, उतर कर जहाँ अपना सभा मण्डप था और जहाँ अपना सिंहासन था वहाँ आये। आकर उस श्रेष्ठ सिंहासन पर पूर्व दिशा तरफ मुंह करके बैठे, बैठ कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाये, बुला कर इस प्रकार उनसे कहा किः—

मूलः—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! वारवतीए नयरीए सिंवाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह—

एवं खलु देवानुष्पिष्या ! वारवतीए नयरीए नवजोयण जाव भूयाए सुरगिदीवाणमूलाए विणासे भविस्सति, तं जो णं देवानुष्पिष्या ! इच्छति वारवतीए नयरीए राथा वा जुवराया वा ईसरे तलवरे मांडविय कोडुंविय इब्भ सेट्टी वा देवी वा कुमारी वा अरहतो अरिष्टेनेमिस्स अंतिए मुडे जाव पव्वइत्तए, तं नं कण्हे वासुदेवे विसज्जेति, पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणति, महता इड्ढीसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेति दोच्चं पि तच्चं पि घोसयणं घोसेह, घोसइत्ता मम एयं आणत्तियं पच्चपिणह । तए णं ते कोडुंवियपुरिस्ता जाव पच्चपिणंति ।

अर्थ:— हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारिका नगरी के तीनकोन वाले (तीन रास्ते जहां मिले हों) वगैरह सब मार्गों से यावत् उद्घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो कि निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! यह द्वारिका नव योजन के विस्तार वाली यावत् स्वर्ग के समान है, इसका मदिरा, अग्नि और द्वीपायन तपस्वी के निमित्त से नाग होने वाला है इसलिये हे देवानुप्रियो ! इस द्वारिका नगरी में जो कोई राजा, युवराज, राज कुमार, ईश्वर, प्रधान, तलवर (राजा का प्रिय), मांडविक (पेटल), कौटुम्बिक, इन्ध, श्रेष्ठी (सेठ), राणी, कुमार अथवा कुमारी अरिहंत अरिष्टेनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करते हो, उन सबों को कृष्ण वासुदेव

आज्ञा देते हैं तथा दीक्षा लेने वालों ने अपने शेष कुटुम्ब को छोड़ दिया हो और उनका निर्वाह करने में जिसका मन दुःखी होता हो उनकी जिस प्रकार पहले बंधी हुई आजीविका होगी उसी प्रकार हम देंगे; परन्तु आजीविका को उत्पन्न करने वालों ने दीक्षा लेने से पछि निर्वाह करने लायक मनुष्यों की आजीविका हम बंद करेंगे नहीं और यड़ी समृद्धि तथा सत्कार समुदाय से उनका दीक्षा महोत्सव भी हम ही करेंगे। इस प्रकार दो बार, तीन बार उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके यह भरी आज्ञा वापस लाओ। तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी प्रकार करके यावत् उनको आज्ञा को वापिस कर दिया।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी अरहतो अरिद्वेनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जाव हियया अरहं अरिद्वेनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी - सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं से जहेतं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिये ! मा पडिवंथं करेहि ।

अर्थः—उसके बाद उस पद्मावती देवी ने भी अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से धर्म दर्शना को सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होती हुई यावत् हृदय में आनन्द मनाती हुई अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान्

को बंदना की, नमस्कार किया। बंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन (साधुधर्म) की श्रद्धा करती हूं कि जो आप ने अभी बतलाया है, विशेषयह कि हे देवानुप्रिय ! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर उसके बाद आप महानुभाव देवानुप्रिय के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा। प्रभु ने कहा-हे देवानुप्रिया ! जिस प्रकार तुम्हें सुख उत्पन्न हो वैसा करो। धर्म कार्य में विलंब नहीं करना चाहिये।

मूलः— तए णं सा पउमावती देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति, दुरूहिता जेणेव वारवती नगरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवगच्छति, उवागच्छिता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता करयल जाव कट्टु एवं वयासी - इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णया समाणी अरहतो अरिट्ठेनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिए !

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी श्रेष्ठ धार्मिक वाहन के ऊपर चढ़ी। चढ़ कर जहाँ द्वारिका नगरी थी और जहाँ अपना घर था वहाँ आई। आकर धार्मिक वाहन से नीचे उतरी। नीचे उतर कर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आई। आकर दोनों हाथ जोड़ कर यावत् मस्तक पर अंजली लगा कर इस प्रकार कहने लगी- हे देवानुप्रिय ! मैं इच्छा करती हूं कि आपकी आज्ञा पाकर मैं अरिहंत अरिट्ठेनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूं। यह

सुनकर कृष्ण वासुदेव ने कहा है देवानुप्रिया ! जिस प्रकार तुमको सुख उत्पन्न हो वैसा कार्य शीघ्र करो ।

मूलः— तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुविय पुरिसे सदावेति, सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! पउमावतीए देवीए महत्थं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक मनुज्यों को बुलाये । बुला कर इस प्रकार कहा— हे देवानुप्रियो ! पद्मावती देवी के लिये अधिक मूल्य वाली दीक्षा महोत्सव के अभियेक की सामग्री शीघ्रातिशीघ्र तैयार करो । तैयार करके यह मेरी आज्ञा मुझे वापस करो । इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी प्रकार सामग्री तैयार करके यावत उनकी आज्ञा वापस की ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावतीं देवीं पट्ठयं दुरुहति, अट्टसएणं सोवन्नकलसं जाव महानि—
इल्लमणाभिसएणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता सब्वालंकारविभूसियं करेति करित्ता पुरिससहससवाहिणं सिवियं
रदावेति, रदावित्ता तं सिवियं दुरुहति, दुरुहित्ता वारवतीणगरीमज्झमज्जेणं निगच्छति, निगच्छित्ता

जेणेव रेवतए पववए जेणेव सहसंबवण उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता सीयं ठवेति, ठवित्ता पउमावती देवी सीयाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिहनेमि तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिहनेमीं तिवखत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी-

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती देवी को पाट के ऊपर बैठाया। बैठा करके गऊसौ आठ स्वर्ण के कलसों स यावत् अपनी राज्य समृद्धि के अनुसार उसका यज्ञमारी दीक्षा संबंधी अभिषेक किया। अभिषेक करके सब प्रकार के अलंकारों से सुशोभित की। सुशोभित करके हजार मनुष्यों से उठे ऐसी शिथिका तैयार करा कर उस शिथिका में बिठलाई। बिठला कर द्वारिका नगरी के मध्य २ होकर निकले। निकल कर जहाँ रैवतरु पर्वत था और जहाँ सहस्राश्रवन नामन उद्यान (बाग) था वहाँ आये। आकर शिथिका स्थापन किया। स्थापन करके पद्मावती देवी शिथिका से नीचे उतरी, उतर कर जहाँ अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहाँ मय आये आकर भगवान् को तीन वक्त प्रदक्षिणा की। करके वंदना की, नमस्कार कर कृष्णवासुदेव ने इस प्रकार कहा—

मूलः—एस णं भंते ! मम अगमहिंसी पउमावइ नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुत्ता मणामा अभिरामा जाव किमंग पुण पासणयाए ? तन्नं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिवखं दलयामि, पडिच्छंतु णं

देवाणुष्पिया ! सिस्सिणिभिव्रखं । अहासुहं ।

अर्थः— हे भगवान् ! यह मेरी पटरानी पद्मावती नामक देवी इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम, अभिराम यावत् (गूढर के पुष्प के समान सुनने में दुर्लभ है) वैसी देखने में दुर्लभ हो इससे क्या कहना ? ऐसी उसको मैं हे देवानुप्रिय ! आपको शिष्या रूप भिक्षा देता हूं । इसलिय हे देवानुप्रिय ! आप इस शिष्यारूप भिक्षा को ग्रहण करो । तब भगवान् ने कहा— जिसमें तुमको सुख पैदा हो वैसा करो ।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी उत्तपुरच्छिमं दिसीभागं अवकमति, अवकमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति, ओमइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लायं करेति, करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठेनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी— आलित्ते जाव धम्ममसाइविसवतं ।

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी उत्तर और पूर्य दिशा के बीच इशान कौन में गई । जाकर स्वतः अपने हाथ से आभूषण (अलंकार) निकाले, स्वतः ही पांच मुट्टे द्वारा लौच किया, लौच करके जहाँ अरिहंत अरिट्ठेनेमि भगवान् थे वहाँ आई । आकर भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—हे भगवान् ! यह संसार आदीश जलरहा है यावत् प्रदीत अतीव जलरहा है अर्थात् यह संसार राग-

द्वेष-विषय-रूपाय-मोहमाया आदि से जन्म जरा मरण आदि दुःखों से व्याप्त है इसलिये इन दुःखों से छुटने के लिये मैं आपके शरणे आई हूँ, इससे मैं इच्छा करती हूँ कि आप मुझे दीक्षा दो, यावत् आचार, गौचरी, विनय, वैनियक, करण-सीतरी, चरण सीतरी और प्राणयात्रा (धारण) के लिये जिसमें निर्दोष आजीविता हो ऐसा धर्म मुझसे रह्यो ।
मूलः—तते णं अरहा अरिद्धनेमि पउमावतीं देवीं सयमेव पव्वावेति, पव्वाविता सयमेय मुंडावेति, सयमेव जक्खिणीते अजाते सिस्सिणिं दलयति ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिद्धनेमि भगवान् ने पद्मावती देवी को दीक्षा दी । दीक्षा देकर मुंड ॐ ती और आपने ही यक्षिणी नामक साध्वी को शिष्या रूप में दी ।

मूलः—तते णं सा जक्खिणी अजा पउमावइं देवीं सयं पव्वावेइ जाव संजमियव्वं ।

अर्थः—उसके बाद यावत् उम यक्षिणी साध्वी ने पद्मावती देवी को स्वतः दीक्षा दी यावत् धर्मोपदेन दिया कि चारित्र पालन करने के लिये तुमको इस प्रकार यत्न करना चाहिये इत्यादि ।

मूलः—तए णं सा पउमावती जाव संजमइ । तते णं सा पउमावती अजा जाता ईरियासमिया जाव
* मुख्य शिष्या यक्षिणी साध्वी के हाथ से केस लेने पर रूप लोच किया सशमना चाहिये ।

गुप्तवंभयारिणी ।

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती देवी यावत् संयम में यत्न करने लगी । जिससे वह पद्मावती साध्वी इर्यासमिति, भाषासमितियुक्त यावत् मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, गुप्त इन्द्रिय अर्थात् गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने में तत्पर हुई ।

मूल:—तए णं सा पउमावइं अज्जा जक्खिणीते अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कास्स अंगंइं अहिज्जा-
ति, बहूहिं चउत्थछट्टमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्ममेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरति.

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी यक्षिणी साध्वी के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यास करने लगी । तथा बहुत से उपवास, ब्रैले (दो उपवास), तैले (तीन उपवास), चौला (चार उपवास), द्वादश (पांच उपवास), अर्धमास (पन्द्रह उपवास) और मास क्षमण (एक महीने के उपवास) वगैरह विविध प्रकार की तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को तप-संयम में भावती हुई विहार करने लगी ।

मूल:—तए णं सा पउमावइ अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए
संलेहणाए अप्पाणं झोसेति, झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छंदति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइन्गभावे
जाव तमटं आराहेति चरिसुस्सासेहिं सिद्धा (सू०९) । पंचम वग्गस्स पढममज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥१ ॥

अर्थ:—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी बहुत परिपूर्ण थीस वर्ष चारित्र्यावस्था को पालन कर एक मास का अनशन करके अपने शरीर को सुखा दिया । सुखा कर अनशन के साठ भक्त का छेदन किया अर्थात् एक महीने का अनशन पूर्ण किया । अनशन पूर्ण कर जिसके लिये चारित्र्य ग्रहण किया था यावत् उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोश्वाससे सिद्धि पद को प्राप्त किया ।

यहां यावत् शब्द से यह जानने का है कि जिसने मोक्ष के लिये चारित्र्य अंगीकार किया, मुंड हुई, केशों का लोच किया । ब्रह्मचर्य का पालन किया, स्नानादि छोड़े, छत्री वगैरह रखना नहीं, नंगे पैर चलना, पृथ्वी पर शयन, आहार पानी वगैरह के लिये दूसरे घरों में जाना, आहारादि का लाभ तथा अलाभ हो होतो भी हर्ष शोक करना नहीं, मान या अपमान होने पर भी समभाव रखना, दूसरों की की हुई हिलना (आदर न करना), निन्दा (अपने मन में निन्दा करनी) खिसना (लोगों के सामने जाति वगैरह प्रकट करनी), तर्जना—हे लुच्चा ! तू क्या जानता है ? वगैरह बचन द्वारा बकना, ताड़ना (लात वगैरह मारना), घृणा (समक्ष में निन्दा करनी), उच्चावच अर्थात् अयोग्य बचन बोलना (विविधि प्रकारके अनुचित शब्द बोलना), बाईस परिपह उपसर्ग, इन्द्रियों रूपी कांटा वगैरह इन कष्टों को सहन किये और अंतमें उसने अनशन कर कर्म क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया ।

॥ इति पंचम वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं चारवई रेवतए उज्जाणे नंदणवणे, तत्थ णं चारतीए णगरीए कण्हे वासुदेवे राया । तस्स णं कण्हवासुदेवस्स गोरी देवी वन्नओ, अरहा अरिष्टनेमि समोसडे, कण्हे णिग्गाए, गोरी जहा पउमावती तथा णिग्गाया, धम्म कहा, परिसा पडिगया, कण्हे वि गये । तए णं सा गोरी जहा पउमावती तथा णिम्भवंता, जाव सिद्धा ।

अर्थ:—तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उसमें रेवतक नामक पर्वत और नंदनवन था । उस द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा राज्य करते थे, उन कृष्ण वासुदेव के गोरी देवी नामक राणी थी । उसका वर्णन करना । अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् पथारे और कृष्णवासुदेव उनको बंदना करने के लिये गये । पद्मावती देवी की तरह गोरी देवी ने भी दीक्षा ग्रहण की यावत् सिद्धि पाई ।

इति पंचम वर्ग का दूसरा अध्यायन सम्पूर्ण ॥५॥ २॥

मूल:—एवं गंधारी, लम्बुणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुषिणी अट्ट वि पउमावती सरिसाओ अट्ट अज्झयणा (सू० १०)

अर्थ:—इसी प्रकार तीसरी गांधारी, चौथी लक्ष्मणा, पांचवीं सुसामा, छठी जंबुवती, सातवीं सत्यभामा और आठवीं रुक्मिणी इन सब ही राणियों का दीक्षा लेना और तपश्चर्या करके अंतमें अनशन करके कर्म क्षय कर मोक्ष जाना आदि सब अधिकार पद्मावती के समान कहना, क्योंकि ये सब कृष्ण वासुदेव की राणियों थीं इन आठों के आठ अध्ययन कहने । अन्तिम दो अध्ययन कृष्ण वासुदेव के पुत्र की स्त्रियों के नामकें हैं । सू । १० ।

मूल:—ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीए नगरीए रेवताए नंदणवणे कणहे वासुदेवे । तस्य णं वारवतीए नयरीए कणस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबुवतीए देवीए अत्तए संवे नामं कुमारे होत्था, अहीण० ।

अर्थ:— तिस काल तिस समय में द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, वंदन वन उद्यान, कृष्ण वासुदेव राजेन्द्र राज्य करते थे । उस नगरी में कृष्ण वासुदेव का पुत्र जाम्बुवती देवी का आत्मज शास्व नामक कुमार था । उसके हाथ पैर वगैरह अवयव परिपूर्ण थे ।

मूल:—तस्सणं संवस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था, वन्नओ । अरहा अरिहनेमी समोसठे, कणहे निगए, मूलसिरी वि णिगया जहा पउमावती, नवरं देवाणुप्पिया ! कणहं वासुदेवं आपुच्छामि, जाव सिद्धा । एवं मूलदत्ता वि ॥ (सू० ११)

अर्थ:—उस शाम्ब कुमार की मूलश्री नामक स्त्री थी। उसका वर्णन करना। एक समय अरिहंत मरिचनेमि भगवान् पधारे। उनको बंदना करने के लिये कृष्ण वासुदेव गये और मूलश्री भी गई, पद्मावती की तरह सब कहना। विशेष यह है कि उसने प्रभु से कहा कि—हे देवानुप्रिय! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा प्राप्त कर इत्यादि पावत् वह आज्ञा प्राप्त कर दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसी प्रकार मूलदत्ता भी दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसका अध्ययन भी इसी प्रकार कहना ॥ सूत्र ० ११ ॥

॥ इति पंचम वर्ग समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ वर्ग ॥

—३४५३४२४६—

मूलः—जइ छट्स उक्खेवओ, नवरं सोलह अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—“ मंकाती १ किंकमे २ चैव मोगगराणी ३ य कासवे ४ खेमते ५ धित्तिधरे ६ चैव केलासे ७ हरिचंदणे ८ ॥ १ ॥ वीरत्त ९ सुदंसणे १० पुन्नभदे ११ सुमणभदे १२ सुपइटे १३ मेहे १४ । अइमुत्ते १५ अ अलम्बे १६ अज्झय-

पाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥ ”

अर्थ:—जम्बूस्वामीने सुधर्मस्वामी से पूछा कि- हे भगवन् ! पांचवे वर्ग का आपने यह अर्थ कहा है तो अब भगवान् महावीर स्वामी ने कथन किया हुआ छोटे वर्ग का अर्थ कहो ? तब सुधर्मस्वामी ने कहा कि छोटे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं, वे इस प्रकार हैं:—पहला मंकाति, दूसरा किंकम, तीसरा सुद्गरपाणि, चौथा काश्यप, पांचवा क्षेमक, छठा धृतिधर, सातवाँ कैलाश, आठवाँ हरिचन्दन, नववाँ विरक्त, दशवाँ सुदर्शन, ग्यारहवाँ पूर्णभद्र, बारहवाँ स्वप्नभद्र, तेरहवाँ सुप्रतिष्ठ, चौदहवाँ मेघ, पन्द्रहवाँ अतिसुक्त और सोलहवाँ अलक्ष. इन सोलह नामों के सोलह अध्ययन कहे हैं ।

मूल:—जइ सोलस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अटे पन्नत्ते ? ।

अर्थ:—हे भगवन् ! जो छोटे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं; तो छठ वर्ग के पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ? ।

मूल:—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, मंकाती नामं गाहावइ परिवसति अइहे जाव अपरिभूए ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बु ! तिस काल तिस समय में राजगृह नामक नगर था । उसकी ईसाण कोण में गुणशील नामक चैत्य था । उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था । उस नगर में मंकाति नामक गाथापति रहता था । वह ऋद्धिवान् यावत् कोई भी उससे विजय प्राप्त न कर सके ऐसा समृद्धिशाली और पराक्रमी था ।

मूल:—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव विहरति, परिसा निगया ।

अर्थ:—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले गुणशील नामक चैत्य में यावत् पधारे । उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्यदा निकली ।

मूल:—तए णं से मंकाती गाहावइ इमीसे कहाए लद्धे जहा पन्नतीए गंगदत्ते तहेव, इमो वि जेदपुत्तं कुंडुवे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिव्वंते जाव अणगारे जाए इरियासमिए ।

अर्थ:—उसके बाद वह मंकाति नामक गाथापति भगवान् के आगमन की बात सुन कर प्रसन्न हुआ । जैसे भगवती सूत्र में गंगदत्त भगवान् को वंदना करने को गया था उसका अधिकार है; उसी प्रकार सब यहाँ

पर भी वर्णन करना । फिर यह मंकाति भी अपने बड़े पुत्र को कुटुम्ब पालन का भार सौंप कर हजार पुरुष उठावे ऐसी पालकी में बैठ कर निकला । यावत् वह अणगार हुआ हर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हुआ ।

मूलः— तए णं से मंकाती अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, से सं जहा खंदगस्स । गुणरयणं तवोकम्मं, सोलसवासाइं परियाओ, तेहव विपुले सिद्धे । किंकमे वि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे । (सू० १२)

अर्थः—उसके बाद उस मंकाति अणगार ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के तथाप्रकार के स्थविर मुनियों के पास सामायिक वर्गैरह ग्यारह अंगों का अभ्यास किया । शेष सब अधिकार स्कंदरु मुनि की तरह जान लेना । गुणरल संवत्सर नामक तपश्चर्या की, सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया । उसी प्रकार विपुलगिरि पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । किंकम नामक दूसरा अध्ययन भी इसी प्रकार कहना वे किंकम अणगार भी यावत् विपुलपर्वत पर सिद्ध हुए । (सू० १२)

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिए चेइए, सेणिय राया, चेछणा देवी ।
अर्थः—तिस काल तिस समय में राजगृह नगरी थी । उसकी बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य

था । उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था और उसके चेलणा देवी नामक राणी थी ।
 मूल—तस्य णं रायगिहे अञ्जुणए नामं मालागारे परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूए ।
 अर्थः—उस राजगृह नगर में अर्जुन नामक माली रहता था वह कद्धिमान् यावत् कोई उसमें न जीत सके इस प्रकार का था ।

मूल—तस्स णं अञ्जुणयस्स मालायारस्स वंथुमती णामं भारिया होत्था, सुमाला ।
 अर्थः—उस अर्जुन माली के वन्धुमती नामक स्त्री थी । वह अत्यन्त कोमल सुकुमाल थी ।
 मूल—तस्स णं अजुणयस्स मालयारस्स रायगिहस्स नगरस्स वहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था, कण्हे जाव निउरंवभूते दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिते पासाइए ।
 अर्थः—उस अर्जुन माली के राजगृह नगर के बाहर फूलों का एक बड़ा बगीचा था । वह कृष्ण (काला) और कृष्ण कांति वाला, नीला अर्थात् नीली कांति वाला वगैरह विशेषण युक्त यावत् मेघ के समूह के समान था । पांच प्रकार के पुष्पो से प्रकृष्टित और शोभायमान था तथा रमणीय आदि विशेषण वाला था ।

मूल— तस्स णं पुप्फारामस्स अट्टरसामंते तस्य णं अञ्जुणयस्स मालायारस्स अज्जतपज्जतपिति—

पञ्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था पोरणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभदे ।

अर्थः— उस पुष्पों के बाग के निकट उस अर्जुन माली के याप, दादा और पड़ दादा आदि वंशके अनेक मनुष्यों की परंपरा से चला आता हुआ मुद्गरपाणि नामक यक्ष का चैत्य था । वह पूर्ण भद्र नामक चैत्य के समान पुराणा, दिव्य और सत्य वगैरह प्रभाव युक्त था ।

मूल—तत्थ णं मोगगरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्पणं अयोमयं मोगगरं गहाय चिद्धति ।
अर्थः— उस चैत्य में मुद्गरपाणि यक्ष की प्रतिमा के हाथ में एक हजार पल लोहे का बना हुआ बड़ा मुद्गर था ।

मूल—तए णं से अज्जुणए सालागारे बालप्पभितिं चेव मोगगरपाणिजक्खभत्ते यावि होत्था, कल्ला-
कल्लिं पच्छियपिडगाइं गणहति, गेण्हत्ता रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुप्फा-
रामे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करोति, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ, गहित्ता जेणेव
मोगगरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मुगरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणयं

करेति करित्ता जानुपायवडिण् पणामं करेति, ततो पच्छा रायमगंगंसे वित्तिं कल्पेमाणे विहरति ।

अर्थ:—उस समय वह अर्जुन माली बाल्यावस्था से ही मुद्गरपाणि यक्ष का भक्त था जिससे वह हमेशा बांस की छाबड़ी लेता था, लेकर राजगृह नगरी से बाहर निकलता, बाहर निकल कर जहाँ अपना बगीचा था वहाँ आता, आकर पुष्पों को तोड़ता, तोड़ कर पहले ताजे और श्रेष्ठ पुष्पों को ग्रहण करता । ग्रहण करके जहाँ मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आता । आकर मुद्गरपाणि यक्ष को अधिक मूल्य वाली तथा बड़ों के योग्य हो वैसी पुष्प पूजा करता था । पुष्प पूजा करके दोनों पाँव पृथ्वी पर झुका कर उस यक्ष को प्रणाम करता था उसके बाद नगर में जाकर राज्य मार्ग में अपने पुष्प बेच कर अपनी आजिविका का करता हुआ रहता था ।

मूल—तत्थ णं रायगिहे नगरे ललित्या नामं गोद्धी परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूता जंकयसुकया यावि होत्था ।

अर्थ:—उस राजगृही नगर में ललित नामक अर्थात् उद्वत्त मनुष्यों की एक टोली रहती थी । वह काट्टिमान् यावत् देदीप्यमान् और अधिक मनुष्यों से भी जिससे विजय न पा सके ऐसी यत्कृत सुकृता थी अर्थात् वे मित्रों की टोली जो कोई कार्य अच्छा अथवा बुरा करे तो भी उनके माता-पिता और अन्य लोग अच्छा कार्य किया ऐसा कहा करते थे ।

मूल—तए णं रायगिहे नगरे अन्नदा कदाद पमोदे धुठे यावि होत्या ।

अर्थ:— उसके बाद राजगृह नगर में एक समय कदाचित् महोत्सव होने के लिये उद्घोषणा हुई ।

मूल—तए णं से अज्जुणाए सालागारे कछं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु पच्चूसकाल-
समयंसि बंधुमतीए भारियाए सच्चिं पच्छियपिडयातिं गणहति, गेणहत्ता, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति,
पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झमज्जेणं णिगच्छति, णिगच्छिता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छिता बंधुमतीए भारियाए सच्चिं पुप्फुच्चयं करेति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अर्जुन माली कल बहुत फूलों की जरूरत होगी, ऐसा विचार कर प्रातःकाल में बन्धुमती स्त्री के साथ बांस की छावडी लेकर अपने घर से निकला । निकल कर राजगृह नगर के बीचोंबीच होकर बाहर जहाँ अपना बगीचा था वहाँ आया । आकर बन्धुमती स्त्री के साथ फूल तोड़ने लगा ।

मूल—तए णं तीसे ललियाए गोटीए छ गोट्टिहा पुरिसा जेणेव मोगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाय-
यणे तेणेव उवागता अभिरममाणा चिद्धंति ।

अर्थ:—उस समय उस ललित नामक डोली के छ मित्र मनुष्य जहाँ सुदुगरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ

आये और खेलने लगे ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धि पुफुच्चयं करेति, करित्ता अग्गातिं वरातिं पुप्फातिं गहाए जेणेव भोगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति ।

अर्थ—उसके बाद उस अर्जुन माली ने बन्धुमती स्त्री के साथ पुष्पों को एकत्रित किये । एकत्रित करके पहले श्रेष्ठ पुष्पों को लेकर जहाँ सुद्वारपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आया ।

मूलः— तए णं ते छ गोट्टिला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमतीए भारियाए सद्धि एज्जमाणं पासं-
ति, पासित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी - एस णं देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धि
इहं हव्वमागच्छति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडयबंधणयं करेत्ता बधु-
मतिए भारियाए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणणं विहरित्तएत्ति कट्टु एयमहं अन्नमन्नस्स पडिसुणे-
ति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति निच्चला निष्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिद्धंति ।

अर्थः—उस समय उन छत्रों मित्र पुरुषों ने उस अर्जुन माली को उसकी बन्धुमती स्त्री के साथ आता

हुआ देखा । देख कर परस्पर इस प्रकार कहने लगे— हे देवानुप्रियो ! यह अर्जुन माली इसकी बन्धुमती स्त्री के साथ यहाँ शीघ्र आ रहा है । इससे हे देवानुप्रियो ! अपने इन अर्जुन माली को उल्टी सुदिक्रियों से बांध कर उसके सामन उसकी स्त्री बन्धुमती के साथ विपुल काम भोग भोगना श्रेष्ठ है । इस प्रकार संकेत करके यह यात परस्पर एक दूसरे ने अंगीकार की । अंगीकार करके चैत्य के धारने की ओट लेकर छिप गये और निश्चल, निस्पंद (धिना हिले) तूष्णी, गुरे की तरह छुपे रहे ।

मूल—तए णं से अज्जुणए सालागारे बंधुमतिमारियाए सद्धिं जेणेव सोगारपाणिजवखायचणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति, करित्ता महरिहं पुण्फच्चणं करेति. करित्ता जानुपायपडिए पणामं करेति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अर्जुन माली अपनी बन्धुमती स्त्री के साथ जहाँ सुदुर्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहाँ आया । आकर यक्ष की मूर्ति को देखते ही उसने प्रणाम किया । प्रणाम करके अधिक मूल्य वाली यानी यक्षों के योग्य पुष्पों से पूजा की । पूजा करके पृथ्वी पर बुटने नमस्कार उस यक्ष को प्रणाम किया ।

मूल—तए णं ते छ गोडिछा पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहितो णिगच्छति, णिगच्छित्ता अज्जुणयं

मालागारं गेण्हंति, गेण्हत्ता अवओडगबंधणं करेति, करित्ता बंधुमतिए मालागारिए सद्धिं विपुलाइं भोग-
भोगाइं भुजमाणा विहरंति ।

अर्थः—उसके बाद वे छठों मित्र शीघ्र २ बारने की ओड से निकले । निकल कर अर्जुनमाली को पकड़ा ।
पकड़ कर उल्टी सुदिकर्यों से बांध दिया । बांध कर बन्धुमती मालन के साथ विपुल काम भोग करने लगे ।

मूल—तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अथमज्झरिथिए समुप्पन्ने—एवं खलु अहं बालप्पभिति
चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लकल्लिं जाव कप्पेमाणे विहरामि, तं जइ णं मोग्गरपाणिजम्बे इह संनिहिते
होते से णं किं समं एयारूवं आवइं पविज्जमाणं पासते ? तं नित्थ णं मोग्गरपाणि जम्बे इह संनिहिते,
सुव्वत्तं तं एस कट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद उस अर्जुन माली को इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि—इस प्रकार निश्चय करके मैं
बाल्यावस्था से ही इन पूज्य सुदुर्गरपाणि यक्ष की हमेशा पूजा करता हूँ । यावत् आजीविका चलता हुआ रहता
हूँ अगर जो यह सुदुर्गरपाणि यक्ष इस प्रतिमा में प्रत्यक्षावस्था में होता तो मुझे इस आपत्ति दशा में कैसे देखता ।
इससे तो यह प्रतीत होता है कि यह सुदुर्गरपाणि यक्ष प्रत्यक्ष नहीं । यह तो काष्ठ रूप ही इष्टिगोचर होता है ।

मूल—तएणं से मोगरपाणि जक्खे अज्जुणयस्स माणागारस्स अयमेयारूवं अब्भत्थियं जाव विघाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरय अणुपविसति, अणुपविसित्ता नडतडतडस्स वंधाई छिंदति तं पलसहस्सणि-
प्फणं अयोमयं मोगरं गेण्हति, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेति ।

अर्थः—उसके बाढ उस सुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन माली के इस प्रकार के विचार यावत् जान कर अर्जुन माली के शरीर में प्रवेश किया । प्रवेश करके तडा तड उसके बन्धनों को तोड डाले और हजार पल के बने हुए लोहे के सुद्गर को लेकर स्त्री सहित सातों को काल के कराल मुख में कवलित कर दिये ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे मोगरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइहे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेत्तेणं कल्लकल्लिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेमाणे विहरति ।

अर्थः—उसके बाद वह अर्जुन माली सुद्गरपाणि यक्ष द्वारा अधिष्ठित होकर राजगृह नगरी के बाहर निकट भूमि पर हमेशा छ पुरूप और एक सान्ची स्त्री को मारता हुआ फिरने लगा ।

मूल—रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोगरपाणिणा अण्णाइहे समाणे रायागिहे णगरे वहिया छ इत्थिसत्तमे

पुरिसे धायेमाणे विहरति ।

अर्थः— इसके बाद राजगृह नगर में श्रीकोण रास्ते पर तथा चौपट रास्ते पर बहुत से लोग इकठ्ठित हुए, होकर परस्पर इस प्रकार कहने लगे । इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली के शरीर में सुदुर्ग पाणि नामक यक्ष अधिष्ठित हुआ है । उससे वह राजगृह नगर के बाहर छः पुरुष और सातवीं स्त्री को प्रतिदिन मारता हुआ फिरता है ।

मूल—तए णं से सेणिए राया इमिसे कहाए लद्धटे समाने कोडुवियपुरिसे सद्वेति, सद्वावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे जात्र धातेमाणे विहरति, तं मा णं तुब्भे केइ कट्टस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सतिरं निग्गच्छतु, मा णं तस्स सरीरस्सं वावत्ती भविस्सति ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि धोसणयं बोसेह, धोसित्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह तए णं ते कोडुवियपुरिसा जात्र पच्चप्पिणांति ।

अर्थः— इसके बाद उस श्रेणिक राजा ने इस वार्ता के विषय को जान कर कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाये । बुला कर इस प्रकार कहाः— निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन नामक माली हमेशा छः पुरुष और एक स्त्री को मारता

हुआ फिरता है। जिससे नगरी में से कोई भी मनुष्य लकड़ी, घास, जल और पुष्प या फल यौग्य लेने के लिये अपनी इच्छानुसार गाँव के बाहर जाना नहीं क्योंकि ऐसा करने से उनके शरीर का नाश होना संभव है। इस प्रकार दो बार तीन बार में उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके मेरी इस आज्ञा को सुझे मापिस दे दो। यह सुन कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने यावत् उसी प्रकार उद्घोषणा की और राजा की आज्ञा वापिस कर दी।

मूल—तथ्य णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेठी परिवसति, अइहे । तए णं से सुदंसणे समणो—
वासए यावि हेत्था अभिगयजीवाजिन्ने जाव विहरति ।

अर्थ:—अथ उस राजगृह नगर में समृद्धिवान् सुदर्शन नामक एक सेठ रहता है। यह सुदर्शन श्रावक धर्म का आराधन करने वाला है इससे जीवाजीव यौग्य तत्व को जानने वाला यावत् रहता है।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं जाव समोसहे विहरति ।

अर्थ:—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् वहाँ पधारे और साधु के योग्य अवग्रह याच कर रहे हैं।

मूल—तए ण रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति—

जाव किमंग पुण विपुलस्स अट्टस्स गहणयाए ? एवं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अब्भत्थिए जाव समुप्पन्ने - एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरति, तं गच्छामि णं वंदामि नमंसांमि, एवं संपेहेति, संपेहिता जेणेव अम्ममापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ ! समणे जाव विहरति, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसांमि जाव पज्जुवासांमि ।

अर्थ:—उस समय राजगृह में तीन रास्ते वाले मार्ग में यावत् राज मार्ग में बहुत से मनुष्य इकट्ठे होकर परस्पर एक दूसरे को इस प्रकार कहने लगे:— निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहां गुणशील चैत्य में पधारे हैं उनका नाम गोत्र सुनने में भी बहुत फल है तो यावत् उनके पास जाकर शास्त्रों के बड़े २ अर्थों को अंगीकार करने में मद्दफल हो इसमें तो क्या ही कहना ? इस प्रकार बहुत से मनुष्यों से यह बात सुन हृदय में धारण कर सुदर्शन सेठ को यह विचार उत्पन्न हुआ कि:—निश्चय करके श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस नगर में पधारे हैं । नगर के समीप में आये हों तो भी ऐसा कहा जा सकता है । इसलिये कहते हैं कि यहां पधारे हैं, यहां समवसरे हैं और यहां समवतर कर धर्म देशना देने के लिये यहां विराजे हैं । अथवा इस नगर में पधारे हैं, यानी इस नगर के इशान

कौण में गुणशील चैत्य में पधारे हैं और साधुओं के योग्य ऐसे अवग्रह में रहे हैं। इसलिये मैं उनके पास जाऊं और उनको वंदना करूं, नमस्कार करूं। इस प्रकार विचार करके जहाँ अपने मात-पिता थे वहाँ गया। जाकर हाथ जोड़ यावत् इस प्रकार कहने लगा:- निश्चय करके हे मात-पिता ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहाँ पधारे हैं जिससे मैं उनके पास जाऊं और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना - नमस्कार करूं यावत् जाकर उनकी सेवा करूं।

मूल—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अस्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणे मालागारे जाव घाते माणे विहरति, त मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महीवीरं वंदए णिगच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सति, । तुमणं इह गते चेव समणं भगवं महावीर वंदहि णमंसाहि ।

अर्थ:—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ से उसके मात-पिता ने इस प्रकार कहा निश्चय करके हे पुत्र ! उस ओर अर्जुन नामक माली सात मनुष्यों को मारता हुआ रहता है। इसलिये हे पुत्र ! तू श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहाँ मत जा। जाने से तेरे शरीर को दुःख न हो ऐसा हम चाहते हैं। इसलिये तू यहाँ पर रह कर के ही श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना-नमस्कार कर।

मूल—तए णं सुदंसणे सेट्ठी अस्मापियरं एवं वयासी-किण्णं अहं अस्मयातो ! समणं भगवं महा-

वीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं इह गते चैव वंदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ तुव्भेहिं
अव्भणुन्नाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदते !

अर्थः—तब उस सुदर्शन सेठ ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा किः— हे पूज्य मात-पिता ! यहाँ आये
हुए, यहाँ प्राप्त हुए और यहाँ पधारे हुए अमण भगवान् महावीर स्वामी को मैं यहाँ रह कर किस प्रकार वंदना करूँ ?
इसलिये हे मात-पिता ! आपकी आज्ञा लेकर मैं अमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहाँ जाऊँ।

मूलः—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचायति वहुहिं आघवणाहिं जाव परूवेत्तए
ताहे एवं—वयासी अहा सुहं देवाणुप्पिया !

अर्थः—उसके याद सुदर्शन सेठ को उसके मात-पिता जब बहुत प्रकार से समझाने पर भी नहीं रोक सके
तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जिसमें तेरे को सुख उत्पन्न हो बैसा तेरी इच्छानुसार कर।

मूलः—तए णं से सुदंसणे अम्मापितीहिं अब्भणुण्णाए समाणे पहाए सुद्धप्पोवेसाइं जाव सरिरे
तथाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिच्चा पायविहारचारेणं रायगिहं णगरं मज्झमज्जेणं णिगगच्छति
णिगच्छित्ता मोगारपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे

भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ ने मात-पिता की आज्ञा लेकर स्नान किया और शुद्ध शरीर वाला हुआ, उत्तम वस्त्र धारण किये यावत् बहुत मूल्य वाले अंलकारों से शरीर को सुशोभित किया । फिर अपने घर से बाहर निकला । निकल कर पैदल चलता हुआ राजगृह नगर के बीच होता हुआ नगर के बाहर निकला । निकल कर सुद्वार पाणि यक्ष के चैत्य से बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसा बीच में गुणशील नामक चैत्य का मार्ग था और जहाँ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी विराजे थे उस रास्ते प्रयाण करने लगा ।

मूल—तए णं से मोगगरपाणी जक्खे सुदसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं वीतीवय-
माणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ते तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगगरं उच्छालेमाणे उच्छालेमाणे जेणेव सुदंसणे
समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस सुद्वारपाणि यक्ष ने सुदर्शन आवक को बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसे मार्ग में जाते हुए देखा । देख कर तत्काल क्रोधायमान होकर वह हजार पल लोहे का बना हुआ सुद्वार को हाथ में लेकर उछालता हुआ उछालता हुआ जिधर सुदर्शन आवक था उधर चला ।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासति, पासित्ता अभीते अतत्थे अणुव्विगगे अब्बुभित्ते अचल्लिए असंभंते वरथंतेणं भूमिं पमज्जति, पमज्जित्ता करतल एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो त्थु णं समणस्स जाव संपावित्ताकामस्स, पुव्विं च णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलते पाणातिवाते पच्चक्खाते जावज्जीवाए, थूलते मुसावाते, थूलते अदिन्नादाणे, सदर-सतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छा परिमाणे कए जावज्जीवाए, तं इदाणिं पि णं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणा-इवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहूणं परिगहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसह्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेइ पारेत्तए अह णो एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि ततो मे तहा पच्चक्खाते चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जति ।

अर्थ—उसके याद उस सुदर्शन श्रावक ने सुदुग्गरपाणि यक्ष को आते हुए देखा । देख कर भय रहित होकर, त्रास रहित, उद्वेगरहित और क्षोभ का त्याग कर, अचलायमान होकर संभ्रांत रहित उसने वस्त्र के छेड़े से श्रूमिका

प्रमार्जन किया । प्रमार्जन करके दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक पर तीन चार आवृत्त कर दर्शों नख इकट्ठे हों ऐसे अंजली बांध कर इस प्रकार बोला कि:—अरिहंतों को यावत् मुक्ति पद को पाये हुए भगवानों को मेरा नमस्कार हो । श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाने की इच्छा करने वाले ऐसे श्री महावीर स्वामी को मेरा नमस्कार हो । पहिले मैंने श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास स्थूल प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान किया है । इसी प्रकार स्थूल मृषावाद का और स्थूल अदत्तादान का प्रत्याख्यान किया है । स्वदार सन्तोष व्रत जीवन पर्यन्त ग्रहण किया है तथा जीवन पर्यन्त इच्छानुसार परिग्रह का त्याग किया है तो भी अभी उन्हीं भगवान् की पास मैं उन्हीं की साक्षी से हमेशा के लिये सर्वथा प्राणातिपात का जीवन पर्यन्त त्याग करता हूँ । इसी प्रकार जीवन पर्यन्त मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह का सर्वथा प्रत्याख्यान करता हूँ अर्थात् छोड़ता हूँ । इसी प्रकार सर्वथा क्रोध का यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान करता हूँ । इसी प्रकार सब प्रकार के अशन, पान, खादिम और स्वादिम ये चार प्रकार के आहार को भी जीवन पर्यन्त त्याग करता हूँ यदि कदाचित् मैं इस उपसर्ग से मुक्त हो जाऊँ तो मैं यह प्रत्याख्यान पार करता हूँ और इस उपसर्ग से मुक्त न होऊँ तो प्रत्याख्यान धारे हैं उसी प्रकार निश्चित हैं । इस प्रकार कह कर उसने सागार प्रतिमा अंगीकार की अर्थात् अभिग्रह सहित काउसग किया ।

मूल—तए णं से मोगरपाणीजक्खे तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगरं उच्छालेमाणे उच्छालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता नो चेव णं संचाएति सुदंसणे समणोवासए तेयसा समभिपडित्तए ।

अर्थः—उसके बाद सुद्गरपाणी यक्ष हजार पल लोह का बना हुआ सुद्गर को उछालता २ जहाँ सुदर्शन श्रावक था वहाँ आया, परन्तु सुदर्शन श्रावक के तेज प्रभाव को सहन नहीं कर सका इसलिये उसको उपसर्ग करने को सामर्थवान् हुआ नहीं ।

मूल—तए णं से मोगरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासतं सब्बओ समंताओ परिघोल्लेमाणे परिघोल्लेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपत्थिख सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए द्दहीए सुचिरं निरिक्खति, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहाइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोगरं गहाय जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

अर्थ:—उसके बाद वह सुदुर्गरपाणी यक्ष उस सुदर्शन श्रावक की चो तरफ फिरने लगा । फिरता २ जय उस सुदर्शन श्रावक के धर्म प्रभाव के तेज से उसको मारने की समर्थ न हो सका, तब उस सुदर्शन श्रावक के सन्मुख आवे जीमणे पासे अर्थात् दायें बायें समान आवे ऐसे और सप्रतिदिशा अर्थात् विदिशा भी समान आवे इस प्रकार खडा होकर सुदर्शन श्रावक को अनिमेष दृष्टि से एक टक लगा कर बहुत समय तक देखता रहा । देख कर बभरा कर अर्जुन माली के शरीर का उसने त्याग किया । त्याग करके वह हजार पल लोहे का बना हुआ सुदुर्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में पीछा अपने स्थान को चला गया ।

मूल— तए णं से अब्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण विप्पमुक्कके समाणे धसत्ति धरणि—
यलंसि सब्वगेहिं निवडित्तए ।

अर्थ:—उसके बाद उस अर्जुन माली को सुदुर्गर पाणी यक्ष ने छोड़ दिया तब वह धडाक से पृथ्वी पर सब अंगों को बिना सम्हाले गिर गया ।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुत्तसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेति ।

अर्थ:—उसके बाद उस सुदर्शन श्रावक ने उपसर्ग दूर हुआ जान कर प्रतिमा का पालन किया अर्थात् काउसग्ग को पार दिया ।

सुदंशने समाने उद्वेति, उद्विता सुदंशने

आसत्ये समाने उद्वेति, उद्विता सुदंशने
सुदंशने ततो मुहुत्तरेण आसत्ये समाने उद्वेति, उद्विता सुदंशने

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे ततो मुहुत्तरेण आसत्ये समाने उद्वेति, उद्विता सुदंशने

समणोवासयं एवं वयासी—तुभे णं देवाणुप्पिया ! के ? कहिं वा संपत्थिया ?
अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली जब एक सुहृत् के बाद स्वस्थ हुआ । तब खड़ा होकर उसने सुदंशने

समणोवासयं एवं वयासी—तुम कौन हो ? और कहाँ जाते हो ?
अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली ने अर्जुन माली से इस प्रकार कहा :— निश्चय करके है देवानुप्रिय ! मैं

श्रावक से इस प्रकार पूछा :— है देवानुप्रिय ! तुम कौन हो ? और कहाँ जाते हो ?
मूल—तए णं से सुदंशने समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !

अहं सुदंशने नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते ।
अर्थ—तब उस सुदंशने श्रावक ने अर्जुन माली से इस प्रकार कहा :— निश्चय करके है देवानुप्रिय ! मैं

अहं सुदंशने नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते ।
मूल—तए णं से सुदंशने समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !

अहं सुदंशने नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते ।
अर्थ—तब उस सुदंशने श्रावक ने अर्जुन माली से इस प्रकार कहा कि :— है देवानुप्रिय ! मैं भी आपके साथ

अहं सुदंशने नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते ।
मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंशने समणोवासयं एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !

अहं सुदंशने नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते ।
अर्थ—तब उस सुदंशने श्रावक ने अर्जुन माली से इस प्रकार कहा कि :— है देवानुप्रिय ! मैं भी आपके साथ

श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को बंदना करने यावत् उनकी सेवा करने के लिये आने की इच्छा करता हूं। तब सुदर्शन श्रावक ने कहा कि:— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझे सुख उत्पन्न हो वैसे तेरी इच्छानुसार कर ।

मूल:—तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिमबुत्तो जाव पज्जुवासति ।

अर्थ:—उसके बाद वह सुदर्शन श्रावक अर्जुन माली के साथ जहां गुणशील नामक चैत्य था और जहां श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे वहां आये । आकर अर्जुन माली के साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को तीन वक्त प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके बंदना की - नमस्कार किया यावत् सेवा करने लगे ।

मूल:—तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासयस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा । सुदंसणे पडिगए ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने सुदर्शन श्रावक, अर्जुन माली और उस बृहत् सभा को धर्मोपदेश दिया । उपदेश सुन कर सुदर्शन श्रावक अपने घर गया ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट सदहामि णं भंते ! गिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्टेमि ; अहासुहं देवाणुप्पिया । ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास धर्म सुन कर हृदय में धारण कर हट्ट तुट्ट होकर कहने लगा कि—हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर (साधुधर्मपर) अद्भुत करता हूँ यावत् दीक्षा लेने का मेरा प्रयत्न (विचार है) तब भगवान् ने कहा कि— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझ को सुख उत्पन्न हो वैसे कार्य कर ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरथिमं दिसिभाणं अवक्कमइ २ ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव अणगारे जाए जाव विहरति ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली उत्तर और पूर्वके बीच में ईशान कोण में गया, जाकर पाँच मुट्टि से केशों का लोच किया । यावत् वह चारित्र ग्रहण कर अणगार हुआ । फिर चारित्र पालने में प्रयत्नवान् होकर इर्यासमिति सुक्त और गुप्त ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होकर विहार करने लगा ।

मूलः—तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं

महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिगह उग्निपहति-कप्पइ मे जावजीवाए छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्ममेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तिए त्ति कट्ठु अयमेयारूवं अभिगहं ओगे-पहति, ओगिणिहत्ता जावजीवाए जाव विहरति ।

अर्थः— उसके बाद उन अर्जुन अणगार ने जिस दिन मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना की नमस्कार किया । वंदना-नमस्कार कर के इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया । मुझे आज से लेकर जीवन पर्यन्त निरंतर (अंतर रहित) छट्ठे तप से पारण करके तप-संयम में आत्मा को भावन करते हुए विहार करना कल्पता है । इस प्रकार जीवन पर्यन्त के लिये अभिग्रह ग्रहण किया, अभिग्रह ग्रहण करके विहार करने लगा ।

मूल—तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठेखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्जायं करेति, जहा गोयमसामी जाव अडति ।

अर्थः— उसके बाद वे अर्जुन माली अणगार छट्ठे तप के पारणे के दिन पहली पोरसी में स्वाध्याय करते । स्वाध्याय करके गौतम स्वामी की तरह आहार पानी के लिये यावत् पर्यटन करते थे ।

मूल—तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च जाव अडमाणं वहवे इत्थिओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमे णं मे पितामारिए भायामारिए भगिणीमारिए भज्जामारिए पुत्तमारिए धूयामारिए सुण्हामारिए, इमेणं मे अन्नयरे सयणसंबंधिपरिपणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पेगाइया हीलंति निंदंति खिसंति गरिहति तज्जेति तालंति ।

अर्थः—उसक बाद राजगृह नगर में छोटे, बड़े और मध्यम घरों में यावत् पर्यटन करते हुए उन अर्जुन माली अणगार को देख कर बहुनसी खिये, पुरुष, वृद्ध, बालक और नौ जवान इस प्रकार कहने लगे किः— इस साधु ने पहले मेरे पिता को मारा है, कोई कहता मेरे भाई को मारा है, कोई कहता मेरी बहन को मारी है । कोई कहता मेरी स्त्री को मारी है । कोई कहता मेरे पुत्र को मारा है । कोई कहता मेरी पुत्री को मारी है । कोई कहता मेरी पुत्र वधु को मारी है । इस साधु ने मेरे असुक स्वजन को, सम्वन्धी को और मित्र को मारा है । उस प्रकार कह कर कितने ही लोग उन मुनि पर क्रोध करने लगते, कितने ही हिलना करने लगते, कितने ही निंदा करने लगते, कितने ही चिड़ने लगते, कितने ही नाराज कर अनुचित शब्द बोलने लगते, कितने ही तर्जना करने लगते और कितने मारने भी लग जाते थे ।

मूलः—तए णं से अब्जुणए अणगारे तेहिं वहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महह्येहि य जुवाणएहि य आकेसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अप्पउस्समाणे सम्मं सहति सम्मं खमति तित्तिक्खति अहियासेति, सम्मं सहमाणे खममाणे तित्तिक्खमाणे अहियासेमाणे रायगिहे णगरे उच्चणीय-मज्झिमकुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभति तो पाणं ण लभति, जइ पाणं तो भत्तं न लभति, तते णं से अब्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसाइए अपरित्तजोगी अडति, अडित्ता रायगि-हाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव गुणासिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिंदसेति पडिंदसित्ता समणेणं भगवथा महावीरेणं अब्भणुण्णाए अमुच्छिइए विलमिव पणणगभूएणं अप्पण्णं तमाहारं आहारेति ।

अर्थः—उसके बाद उन अर्जुन अणगार पर बहुतसे स्त्री, पुरुष, शूद्र, बालक और नवयुवक क्रोध करने लगे, यावत् ताड़ना (मारने) करने लगे, तो भी वह उन पर मन से भी द्वेष किये बिना, भय रहित होकर समता भाव से से उनको सहन करने लगे । क्रोध नहीं करके क्षमा करते थे । दीनता छोड़ कर सहन शीलता धारण की तथा उनकी अत्यन्त बुरी बातें भी सहन की । इस प्रकार क्षमा पूर्वक समभाव से सहन करते हुए राजगृह नगर में छोटे, बड़े और

मध्यम घरों में पर्यटन करते थे। उस समय जो कभी भक्त (आहार) मिलता तो पानी नहीं मिलता और कभी पानी मिलता तो आहार नहीं मिलता तो भी अर्जुन अणगार को शोक नहीं होने से दीन और शून्य चित्त नहीं होने से शान्त, द्वेष नहीं होने से प्रसन्न, क्षोभ रहित होने से अनाविल अथवा जीने की चिन्ता को छोड़कर दुःखी नहीं होते थे, इसी कारण उनकी समाधी में मन, वचन और काया के योग में कोई भी दोष दिखाई नहीं देता था। इस प्रकार वे साधु पर्यटन करते थे। पर्यटन करके राजगृह नगर से बाहर निकले। निकल कर जहाँ गुणशील चैत्य था और जहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी थे वहाँ आये, आकर गौतम स्वामी की तरह भगवान् को भक्त पानी दिखलाते। दिखा कर श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर मुर्छा को छोड़ कर यानी स्वाद को छोड़ कर जैसे बिल में प्रवेश करता हुआ सर्प पृथ्वी के ऊपर नीचे के भाग को स्पर्श नहीं करता है उसी प्रकार मुँह में स्पर्श किये बिना ही निगल जाते अर्थात् राग रहित होकर आहार करते थे।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनि-क्खमिन्ता वहिं जणवयविहारं विहरति ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी एक समय कदाचित् राजगृह नगर में से बाहर निकले। बाहर निकल कर बाहर के देशों में विहार करने लगे।

मूल—तए णं से अञ्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभावेणं तवोकम्ममेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामणपरियागं पाउणति, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदित्ता जस्सट्टाए कीरइ जाव सिद्धे (सू० १३) ॥ ३ ॥

अर्थ:—उसके बाद वे अर्जुन अणगार उस उदार प्रयत्न से ग्रहण किये हुए और विस्तीर्ण ऐसी तपश्चर्या में समता पूर्वक अपनी आत्मा को भावन करते हुए पूर्णरूप से छः महीने तक चारित्र का पालन किया। फिर अर्थ मास (पंद्रह दिन का) अनशन करके शरीर को सुखा दिया और तीस भक्त अनशन पूरा किया। अनशन पूरा करके जिस के लिये चारित्र अंगीकार किया था उस अर्थ को साधन कर याचत सिद्धि पद प्राप्त किया (सूत्र० १३)

॥ इति तीसरा अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, तत्थ णं सेणिए राया, कासेत्वे णासं गाहावइ परिवसति जहा मंकाति, सोलस वासा परियाओ, जाव त्रिपुले सिद्धे ॥ ४ ॥

अर्थ—तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था, उसकी ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था, उस नगर में श्रेणिक राजा था। काठ्यप नामक गाथापति निवास करता था वगैरह मंकाति की तरह सब वर्णन

करना । काश्यप गाथापति ने सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया, यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए।

॥ इति चौथा अध्ययन संपूर्ण ॥ ४ ॥

मूलः—एवं खेमते वि गाहावइ, नवरं कांकंदी नगरी, सोलस परियाओ, विपुले पव्वए सिद्धे ॥ ५ ॥
अर्थ—इसी प्रकार क्षेमक गाथापति का अध्ययन कहना, विशेष यह है कि वह कांकंदी नगरी में निवास करता था । सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को प्राप्त हुए ।

॥ इति पाँचवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ५ ॥

मूलः—एवं धितिहरे वि गाहावइ, नवरं कांकंदीए णगरीए, सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ॥ ६ ॥
अर्थ—इसी प्रकार धृतिधर गाथापति का वर्णन करना । विशेष यह है कि वह कांकंदी नगरी का निवासी था । सोलह वर्ष तक चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्ध हुए ॥ इति छटा अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ ॥

मूलः—एवं केलासे वि गाहावइ, नवरं सागेए णगरे, चारस वासाइं परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ ७ ॥
अर्थ—इसी प्रकार कैलाश गाथापति का वर्णन कहना । विशेष यह है कि—यह साकेत नगरी के निवासी थे । बारह वर्ष चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त किया ।

॥ इति सातवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ७ ॥

मूल—एवं हरिचंद्रणे वि गाहावइ साएए, वारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ॥ ८ ॥

अर्थ—इसी प्रकार हरिचन्दन गाथापति का वर्णन करना । ये साकेत नगर के निवासी थे । बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । ॥ इति आठवौं अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥

मूल—एवं वारत्तए वि गाहावइ, नवरं रायगिहे नगरे, वारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ ९ ॥

अर्थ—इसी प्रकार वारत्तक गाथापति का वर्णन करना विशेष यह है कि ये राजगृह नगर के निवासी थे बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए । ॥ इति नववौ अध्ययन ॥ ९ ॥

मूल—एवं सुदंसणे वि गाहावइ, नवरं वाणियगामे नगरे दूइपलासए चेइए, पंचवासा परियाओ विपुले सिद्धे । १०

अर्थ— इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति का वर्णन करना । विशेष यह है कि ये वाणिज्य ग्राम के निवासी थे । वहाँ दृतिपलाश नामक चैत्य था । पांच वर्ष चारित्र पालन कर विपुलगिरी पर सिद्ध हुए । इति दशवौं अध्ययन ॥

मूल—एवं पुन्नभदे वि गाहावइ, वाणियगामे नगरे पंचवासा विपुले सिद्धे ॥ ११ ॥

अर्थ—इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति का वर्णन करना । ये भी वाणिज्य ग्राम में निवास करने वाले थे

बहुत वर्षों तक चारित्र पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति ग्यारहवौ अध्ययन संपूर्ण ॥ ११ ॥

मूल—एवं सुमणभेदं वि सावर्थाए नगरीए बहुवासपरियातो सिद्धे । १२

अर्थः—इसी प्रकार सुमनोभद्र सार्थवाह का वर्णन करना ये भी श्रावस्ति नगरी के रहने वाले थे । बहुत वर्षों तक चारित्र पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति बारहवौ अध्ययन संपूर्ण ॥ १२ ॥

मूल—एवं सुपइठे वि गाहावइ, सावर्थाए नगरीए, सत्तावीसं वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे । १३ ॥

अर्थः—इसी प्रकार सुमतिष्ठ गाथापति का वर्णन करना । ये भी श्रावस्ति नगरी में निवास करते थे । सत्ताईस वर्ष तक चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को पाये । ॥ इति तेरहवौ अध्ययन संपूर्ण ॥ १३

मूल—एवं मेहे, रायगिहे नगरे, बहूइं वासाइं परियाओ जाव विपुल सिद्धे ॥ १४ ॥

अर्थः—इसी प्रकार मेघ गाथापति का वर्णन करना । ये राजग्रह नगर के रहने वाले । बहुत वर्षों तक चारित्र पालन करके यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए (सू० १४) ॥ इति चौदहवौ अध्ययन संपूर्ण १४ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं पोलासपुरे नगरे, सिरिवणे उज्जाणे, तत्थ णं पोलासपुरे नगरे त्रिजये नामं राया होत्था । तस्स णं विजयस्स रत्तो सिरि नाम देवी होत्था, वन्नओ । तस्स णं विजयस्स रत्तो

पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था, सुमाले ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में पोलासपुर नामक नगर था । उसके बाहर इशान कोण में श्रीवन नामक उद्यान था । उस पोलासपुर नगर में विजय नामक राजा राज्य करता था । उस विजय राजा के श्रीदेवी नाम रानी थी, उसका वर्णन करना । उस विजय राजा का पुत्र तथा श्रीदेवी का आत्मज अतिसुत्तक नामक कुमार था वह यावत् सुकोमल था ।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीर जाव सिरिवणे । विहरति ।
अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् श्रीवन नामक उद्यान में आकर विराजे ।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूइ जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे नगरे उच्च जाव अडइ ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के बड़े शिष्य गौतम स्वामी भगवती सूत्र में कहे अनुसार यावत् पोलासपुर नगर में छोटे बड़े, और मध्यम घरों में यावत् आशर पानी के लिये पर्यटन करते थे ।
मूल— इमं च णं अइमुत्ते कुमारे णहाए जाव विभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि

पडिनिक्खमिता
य कुमारएहि य कुमारियाहि य सच्चि संपखिडे सओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता
य डिभियाहि य डिभियाहि य दारियाहि य दारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य कुमारएहि य
तेहि बहूहि दारएहि य दारियाहि य दारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य कुमारएहि य

अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।
अभिरसमाणे अभिरसमाणे विहरति ।

अर्थ:—उस समय अतिशुक्तक नामक कुमार स्नान करके यावत् विभूषित होकर बहुत से दारक, दारिका, डिंम,
द्विभिका, कुमार और कुमारिकाओं के साथ अपने राज महल से बाहर निकले । बाहर निकल कर जहाँ इन्द्रध्वज खड़ा
करने का स्थान था वहाँ आये । आकर उन बहुत से दारक, दारिकाँ, डिंम, डिंभिकाँ, कुमार और कुमारिकाओं
के साथ क्रीड़ा करते हुए खेलते हुए वहाँ पर रहे थे ।

अर्थ:—उस समय भगवान् गौतम स्वामी पोलासपुर नगर में बड़े, छोटे और मध्यम घरों में यावत् आहार
वीथीवयति ।
अर्थ:—उस समय भगवान् गौतम स्वामी पोलासपुर नगर में बड़े, छोटे और मध्यम घरों में यावत् आहार
पानी के लिये पर्यटन करते हुए उस इन्द्रध्वज खड़े रहने के स्थान से बहुत दूर भी नहीं और बहुत निकट भी नहीं
ऐसे रास्ते से निकले ।

अर्थ:—उस समय गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्टणस्स अदूरसामंतेणं
अर्थ:—उस समय गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्टणस्स अदूरसामंतेणं

अर्थ:—उस समय गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्टणस्स अदूरसामंतेणं

अर्थ:—उस समय गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्टणस्स अदूरसामंतेणं

मूल—तए णे से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयसं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासति, पासिता जेणेव भगवं गोयसे तेणेव उवागते, उवागच्छिता भगवं गोयसं एवं वयासी—के णं भंते ! तुब्भे ? किं वा अडह ? !

अर्थ—उसके थाट वह अतिमुक्तक कुमार भगवान् गौतम स्वामी को अपने पास भी नहीं और दूर भी नहीं ऐसे मार्ग से जाते हुए देखे । देव कर जहाँ भगवान् गौतम स्वामी थे वहाँ आया । आकर उसने भगवान् गौतम स्वामी से पूछा कि हे भगवन् ! आप कौन हैं ? और किस कारण पर्यटन करते हैं ? !

मूल—तए णं भगवं गोयसे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिगंगथा इरियासामिया जाव वंभयारी उच्चनीय जाव अडामो ।

अर्थ—तय भगवान् गौतम स्वामी ने अतिमुक्तक कुमार से इस प्रकार कहा है देवानुप्रिय ! हम श्रमण निर्ग्रथ दर्यासमिति वाले यान्त्र गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाले और बड़े, छोटे एवं मध्यम घरों में भिक्षा के लिये पर्यटन करते हैं ।

मूल— तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयसे एवं वयासी— एह णं भंते ! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमीति कट्टुड भगवं गोयसं अंगुलीए गेण्हति, गेण्हिता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते ।

अर्थ:—उसके बाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा:—हे भगवान् ! आप मेरे घर पर पधारे तो मैं आपको मिक्षा दूँ। ऐसा कह कर भगवान् गौतम स्वामी की अंगुली पकड़ी *, पकड़ कर अपना घर था वहाँ गौतम स्वामी को ले आया।

* ऊपर के अधिकार में अहमत्ता कुमार गौतम स्वामी की अंगुली पकड़ कर अपने राज महल में ले आया, ऐसा खुलासा मूल पाठ में है परन्तु रास्ते में बातें करते चले थे ऐसा नहीं लिखा जिस पर भी स्थानकवासी महाशय रास्ते में बातें करते चलने का बहाना लेकर गौतम स्वामी के मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखने का ठहराते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। साधु को रास्ते में चलते हुए बातें करना कल्पता नहीं। इस शास्त्रज्ञा का उल्लंघन करके गौतम स्वामी रास्ते में चलते हुए कभी बातें नहीं कर सकते। और स्थानकवासियों के मतव्य मुजत्र तथा आचारांगादि द्वारा ज्ञानुसार जब साधु को छीक-उवासी आदि होने लगे तब हाथों से नाक मुंह दोनों की यत्ना करके पीछे छीक वगैरह करना कल्पता है। अब स्थानकवासियों के कथनानुसार यहाँ पर विचार करने का अवसर है कि गौतम स्वामी के एक हाथ में पात्रों और दूसरे हाथ की अंगुली अडमत्ताकुमार ने पकड़ रखी है उस समय गौतम स्वामी को छीक वगैर होने लगे तब हाथों से नाक और मुंह दोनों की यत्ना करके छीकादि किस तरह कर सकते थे। ऐसे अवसर पर मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखना बेकार ठहरा। यह विषय खास विचार करने योग्य है। और जिस प्रकार छीक वगैरह करते समय नाक तथा मुंह दोनों की यत्ना करके किये जाते हैं। उसी प्रकार रास्ते में चलते समय कभी खास कारण वश वार्तालिप करने का काम पड जावे तो खड़े रह

मूल—तए ण सा सिरीदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ट तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया, भगवं गोयमं तिव्वुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंससति. वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखादिससादिसेणं पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ:—उसके बाद उस श्रीदेवी ने भगवान् गौतम स्वामी को आते हुवे देखे । देख कर हट्ट-तुट्ट होकर आसन से खड़ी होगई । खड़ी होकर जहाँ भगवान् गौतम स्वामी थे वहाँ आई । आकर भगवान् गौतम स्वामी को तीन बार प्रदक्षिणा करके वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके बहुत विस्तार वाले अशन, पान, खादिस और स्वादिस पदार्थ बहोराये । बहोरा कर यावत् उनको चिदा किये ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी- कहि णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?

कर मुंहपत्ति से या साधु के खंधे पर कवल होती है उसको मुंह के आगे आडी डाल कर मुंह की यता करके चाँते कर सकते है । इस में मुंहपत्ति हमेशा मुंहपर बांधी रखने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस बात का विशेष खुलासा सब तरह से शंका समाधान सहित हमारा बनाया " आगामानुसार मुंहपत्ति का निर्णय " और जाहिर उद्घोषणा नंबर १-२-३ में विस्तार से लिखा गया है, पाठक गण उसको मंगवा कर अवश्य पढ़ें अमूल्य भेट मिलता है जैन ग्रेस, कोटा में ।

अर्थ:—उसके बाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार पूछा— हे भगवन् ! आप कहां रहते हो ? ।

मूल:—तए णं भगवंं गोयमे अइमुत्तें कुमारं एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्ममायरिए धम्मोवएसए भगवंं महावीरे आदिकरे जाव संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स वहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिग्गहं उग्गहं उग्गिण्हत्ता संजमेणं जाव भावेमाणे विहरति, तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।

अर्थ:—तब भगवान् गौतम स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार से इस प्रकार कहा:— निश्चय करके हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य धर्म का उपदेश करने वाले भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले यावत् मोक्ष पद पाने की इच्छा वाले हैं । वे यह! पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन नामक उद्यान में यथायोग्य अवग्रह को ग्रहण करके संयम और तप में अपनी आत्मा को भावन करते हुए रहे हैं, वहां पर हम रहते हैं ।

मूल:—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवंं गोयमं एवं वयासी— गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणे भगवंं महावीरं पायवंदते । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थ:—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा — हे भगवान् !

मैं आपके साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के चरणों को नमस्कार करने की इच्छा करता हूँ। तब गौतम स्वामी ने कहा:— हे देवानुप्रिय ! तेरे को सुख उत्पन्न हो बैसा कर ।

मूल:—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोतमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा-
गच्छति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिवबुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति जाव
पज्जुवासति ।

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार भगवान् गौतम स्वामी के साथ जहाँ श्रमण भगवान् श्री महा-
वीर स्वामी थे वहाँ आया । आकर श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को तीन वार प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा
करके वंदना की । यावत् भगवान् की सेवा करने लगा ।

मूल:— तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागते जाव पडिदंसेति पडिदंसित्ता
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।

अर्थ:—उसके बाद भगवान् गौतम स्वामी जहाँ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे, वहाँ आये । यावत्
इरियावही पडिक्कमी, भक्तवान की आलोचना की यावत् भगवान् को आहार दिखलाया । दिखा कर यावत् संमय

तप में आत्मा भावन करते हुए रहे ।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा ।

अर्थ:—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार को तथा उन बड़ी जन समुदाय को धर्म देशना दी ।

मूल— तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास से धर्म देशना सुन कर हृदय में धारण कर हट्ट तुट्ट होकर इस प्रकार बोला कि हे देवानुप्रिय ! भगवान् ! मैं मेरे मात-पिता की आज्ञा प्राप्त कर लेजं, उसके बाद मैं देवानुप्रिय ! आपके पास यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा । तव भगवान् ने कहा कि:—हे देवानुप्रिय ! तुझको सुख उत्पन्न हो चैसा कर, धर्म कार्य में विलम्ब मत कर ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वतित्तए, अइमुत्तं कुमारं

अम्मापियरो एवं वयासी- बालेसि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धेसि तुमं पुत्ता ! किं नं तुमं जाणसि धम्मं ? ।

अर्थ—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार जहाँ अपने मात - पिता रहते थे वहाँ आया । यावत् मैं आप की आज्ञा से दीक्षा लेने की इच्छा करता हूँ ऐसा कहा । तव अतिमुक्त कुमार को उसके मात-पिता ने कहा:- हे पुत्र ! पहिले तो तू बालक है, हे पुत्र ! तू अज्ञानी है, इसलिये तू संयम धर्म को क्या जानता है ? ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि, जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि ।

अर्थ— उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा— इस प्रकार निश्चय करके हे मात-पिता ! मैं जिसको जानता हूँ उसको ही नहीं जानता और जिसको नहीं जानता उसको जानता हूँ ।

मूल—तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-कहं नं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि जाव तं चेव जाणसि ? ।

अर्थ—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार से उसके मात-पिता ने कहा:- हे पुत्र ! तू जो जानता है उस को ही तू नहीं जानता और जो तू नहीं जानता है उसको जानता है, यह बात किस प्रकार है ? ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मपियरो एवं वयासी- जाणामि अह अम्मयाआ जहा जायणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहं वा कहिं वा कंहे वा केचिरेण वा ? , न जाणामि अहं अम्मयाओ ! केहिं कम्माययणेहिं जीवा नरइयतिरिखलजेणिमणुस्सेदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चैव जाणामि, तं चैव न याणामि जं चैव न याणामि, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भ-
णुणाए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थ:—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा:- हे मात-पिता ! मैं जानता हूँ कि जन्म धारण किये हुए जीव अवश्य मरने वाले हैं परन्तु हे मात-पिता ! मैं नहीं जान सकता कि कब, किस समय (प्रातः काल, मध्यान, शाम, या रात्रि) में, किस क्षेत्र में, किस प्रकार रोगादि से और कितने अल्प या दीर्घ समय को पूरा करके मरना होगा ? और हे मात-पिता ! कौन से कर्मों के आदान से यानी ज्ञानावरणीयादि कर्मों को ग्रहणकरके (ज्ञानावरणी आदि कर्मों के आयतन अथवा आदान यानी बंधन के हेतुओं से और पाठांतर में कर्मापत्तन यानी जिसके द्वारा आत्मा में कर्म आकर पड़े-संभवे-मिलें ऐसा प्रत्यंतर में पाठ है) अर्थात् कौन २

कमा ग जाए नरक, निपच, मनुष्य और देव योनी में उत्पन्न होते हैं वरु में जान सकना नहीं, परन्तु हे मात-पिता ! यह तो मैं जानता हूं कि प्रपने २ कर्मनुसार मय जीव नरक चैगरु में यावत् उत्पन्न होते हैं । उस कारण से निश्चय करते हे मात-पिता ! मैं जो जानता हूं यह मैं नहीं जान सकता और जो मैं नहीं जानता उसको जानता हूं ऐसा मैं आप से कहता हूं इस कारण से हे मात-पिता ! तुम्हारी आज्ञा लेकर मैं यावत् दीक्षा लेने की इच्छा करता हूं ।

मूल—नए णं नं अडसुत्तं कुमारं अस्मापियरो जाहे नो संचाणंति बहूहिं आघवणंहिं तं इच्छामो ते जाया ! गगद्विचममनि राजन्निरिं पसेत्तए ।

अर्थ—उसके बाद उन अतिभुक्त कुमार को उसके मान-पिता जब बहुत प्रकार से ममजाने पर भी वर में गतमें मैं असमर्थ हो गये । तब ये बोले कि हे पुत्र ! एक दिन भी तेरी राज्य लक्ष्मी देखने के लिये हम इच्छा करते हैं अर्थात् एक दिन के लिये ही तू गजेन्द्र पन कर राज्ज सुख का उपभोग कर ।

मूल—नए णं से अतिमुत्ते कुमारे अस्मापिउ वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए, संचिट्ठनि, अभिसेओ जहा महापलन्न, निग्गमणं जाय अणगारे जाए जाव सामाडयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जनि बहूइं वासाइं सामगणपरियाग गृणरवण संवन्दरं तवोकमं जाव विपुले सिद्धे । (१५)

अर्थ:—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार अपने मात-पिता के बचन को मान करके मीन रहा तब भगवता सूत्र में कहे हुवे महाबल की तरह उसका बड़ा भारी राज्याभियेक किया उसने दीक्षा अंगीकार की यावत् सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया। बहुत वर्षों तक चारित्र्यावस्था को पालन कर गुण रत्न संवत्सर वगैरह तप करके यावत् विपुलाचल पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए (१५) ॥ इति पंद्रहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १५ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए, तत्थ णं वाणारसीइ अलम्बे णामं राया होत्था ।

अर्थ:—तिसकाल तिस समय में बनारसी नामक नगरी भी उसके बाहर ईशान कोण में महाकामवन नामक चैत्य था। उस बनारसी नगरी में अलक्ष नामक राजेन्द्र राज करता था।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे जाव विहरति, परिस्ता निगया तए णं अलम्बे राया इमीसे कहाए लच्छेडे समाणे हट्ट लुट्ट जहा कूणिए जाव पज्जुवासति, धम्मकहा !

अर्थ:—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्रीमहार्वीर स्वामी यावत् उस चैत्य में आकर विराजे, उनको बंदना करने के लिये नगरी में से पर्यदा निकली। उस धक्त अलक्ष राजेन्द्र भी भगवान् का आगमन सुनकर हृष्ट तुष्ट

होकर कौणिक राजेन्द्र की तरह राज कृद्धि सक्ति येड़े आडम्बर पूर्वक बंदना करने के लिये आया यावत् भगवान् की सेवा करने लगा। तर भगवान् ने धर्म देखना दी, उसको सुन कर लोग वापस अपने २ घर गये।

मूल—तए णं से अलम्बे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तथा णिम्वंते, णवरं जेट्ठपुनं रजे अभिसिंचति, एक्कारस्स अंगा, बहु वासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ (१६)

अर्थ—उसके बाद उस अलक्ष राजेन्द्र ने श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी के पास उदायन राजा की तरह शिशा अंगीकार की। विशेष यह है कि-उसने अपने नडेपुत्र को राज गादी पर स्थापन किया, फिर ग्यारह अंगों का अंगणाम कर बहुत गणों तक चारित्र्यावस्था को पालन की यावत् विपुलचल पर्वत पर ॐ सिद्धि पद को प्राप्त हुए ॥१६॥

ॐ-इस तरह ३ पर गांगार शमुजय और विपुलाचल पर सिद्ध होने का अधिकार आया है, पाठक गण यह अपने अनुभव गित और शास्त्रानुसार धन्यता का है कि-सच्ची प्राणियों के जैसे २ निमित्त कारण मिलते हैं वेसे ही मन के परिणाम होते हैं। उन्को के आंगार गुन या अंगुन रनों का तथा होता है। जैसे किसी शत्रु का नाम, स्थान, मूर्ति आदि देखने से क्रुपाय उत्पन्न होकर हमें भयकर कामें बंधते हैं। सात-पिपा, पिपा मुक, उग में प्राथय शाना आदि उपकारी के नाम, स्थान, मूर्ति देखने से क्रुद भाव उत्पन्न होते से मोहतीय कामें बंधते हैं। उन्की तरह तीर्थकर गणपर महापुनि प्रादि के नाम, गात्र सुनने से तथा केवल उग्यन और मुंके वनम स्थान पर जाने से उन महाप पुत्रों ने राजसिद्धि संग्रह और सुन्दर स्मरणों आदि उदै कर तप समय में रमणता करके उन्कोरुद उन्को गहन करने हुए रमें हय करके मुक्ति गये जन्म मरणानि ६४ लक्ष औंरायोनिरूप संसार से मुंटे और जगत ज्ञानादि

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्टस्स वगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । (सू० १५)

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! अमण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी के छोटे वर्ग का यह अर्थ प्रकाशित किया है ॥ सू० १५ ॥ इति सोलहवों अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १६ ॥

निज आत्म गुण संपन्न हुए इत्यादि उन्हीं के गुणानुवाद याद आकर उनके स्मरण- ध्यान से वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। असार संसार की मोह माया का प्रपंच कम होता है, नुटता है उस समय आश्रव-कपाय मंद होते हैं। शुभ भावों की वृद्धि होती है उससे अशुभ कर्मों की निर्जरा होकर शुभ कर्मों का बंध होता है और यदि आपाठ भूति मुनि तथा इला पुत्र की तरह शुभ भावना बढ जाय तो घनवाति कर्मों का सर्वथा नाश कर केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति होजावे। इस प्रकार महान् पुरुषों के मुक्ति गमन स्थान पर जाने से संसार का पार होता है इसलिये उन स्थानों को तीर्थ कहे गये हैं। ऐसे तीर्थ स्थानों में जाने से साधु-साधियों के तप संयम में विशेष शुद्ध वृद्धि होती है। और गृहस्थों के भी ऐसे तीर्थ में दर्शन-पूजन-स्मरण-ध्यान-दान-तप-शील आदि महान् लाभ मिलता है। दुकानदारी, गृहव्योपार, कुशील संवन आदि आरंभ समारंभ नुटता है। विपय वासना कम होती है। साधु-साधियों के दर्शन वदनादि का विशेष लाभ मिलता है-और भगवान् की पूजा सेवा गुणग्राम करने का निरुपाधिक अवसर अधिक मिलता है। इत्यादि ऐसे महान् लाभ के हेतु भूत तार्थ याज्ञा का निषेध करके भव्य जावों के घर्म कार्यों में अंतराय देना किसी प्रकार उचित नहीं है। इसका विशेष निर्णय “ आगमानुसार मुंहपत्ति का निर्णय” ओर जाहिर उद्घोषणा न० १-२-३ में तथा “श्रंजित प्रतिमा को वदन पूजन करने की अनादि सिद्धि”। आदि ग्रंथों में देखें।

॥ इति छट्ठा वर्ग सम्पूर्ण हुआ ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वर्ग ॥

मूल—जड णं भंते । सत्तमस्स चग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस अञ्जयणा पणत्ता, तं जहा— नंदा ? तह नंदमती ३ नंदोत्तर ३ नंदसेणिया ४ चेव । मत्था ५ सुमरुय ६ महमरुय ७ मरुहेवा ८ य अट्टमा । ? । भदा ९ य सुमहा ? ० य, तुजाता ? १ सुमइ य ? २ । भूयदिद्वा ? ३ य चोद्धवा, सेणियभज्जाण नामाइं ॥२॥

अर्थः— जन्म ग्यामी सुगमं ग्यामी से पूजते हैं कि- हे भगवन् छठे वर्ग का उपरोक्त अर्थ भगवान् ने फर- नाया हैता आपने कहा अप मातवं वर्ग का क्या अर्थ है सो बतलावें ? तय सुगमं ग्यामी ने कहा यावन् मातवं वर्ग के तेरह अन्ययन कहे हैं । ये उस प्रकार हैं:- पहला नंदा, दूसरा नंदमती, तीसरा नन्दोत्तरा, चौथा नंदसेना, पांचवां मरुया, छठा सुमरुता, सातवां मरुहेवी, आठवां मरुहेवी, नौवां भदा, दशवां सुमहा, ग्यारहवां तुजाता, बारहवां सुमति और तेरहवां सुतदिद्वा. ये तेरह श्रेणिक राजेन्द्र की राणियों के नाम के तेरह अन्ययन कहे हैं ।

मूल—जड णं भंते तेरस अञ्जयणा पट्त्ता, पडमस्स णं भंते ! अञ्जयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अडे पणणेने ? ।

अर्थ:—जम्बू स्वामी सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन कहे हैं, तो श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष को पाये हुए श्रीमहावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का किस प्रकार अर्थ वर्णन किया है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया वन्नओ । तस्स णं सेणियस्स रणो नंदा नामं देवी होत्था वन्नओ । सामी समोसडे, परिसा निगया ।

अर्थ:—श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं:— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था । उसके बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था । उस नगर में श्रेणिक नाम के राजेन्द्र राज्य करते थे । उनका वर्णन करना । उन श्रेणिक राजेन्द्र के नदा देवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना । एक समय श्रीमहावीर स्वामी पधारे । उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्पदा निकली ।

मूल —तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धहा समाणा कोडुवियपुरिसे सद्वावेति, सद्वावित्ता जाणं जहा पउमावइ जाव एक्कारस अंगाइं अहिजित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस वि देवीओ णंदागमेण णेयव्वाओ । (सू० १६) ॥ सत्तमो वर्गो सम्मत्तो ॥ ७ ॥

अर्थः—उसके बाद उन नंदादेवी ने यह वृत्तान्त जान कर कौटुम्बिक मनुष्यों को बुलाये. बुला कर उनके पास बैठने का वाचन (१५) मंगा कर उसमें बैठ कर पद्मावती राणी की तरह भगवान् को बंदना करने के लिये गईं यात्रा में पंखेग सुन कर धैराग्य मय होकर दीक्षा अंगीकार की। ग्यारह अंगों का अभ्यास कर बीस वर्ष चारित्र्य प्राप्त की। इसी प्रकार तेरह राणियों का वृत्तान्त नंदा राणी की तरह जानना ॥ (सू० १६)

हिंदी अर्थ
सहित,
८ वर्ग

॥ अथ अष्टम वर्ग ॥



मूल—जइ णं भंते ! अष्टमस्त वगस्त उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-काली ?
 नुक्कली २ महाकाली ३ कण्ठा ४ सुरुण्हा ५ महाकण्ठा ६ । वीरकण्ठा ७ य वोद्धन्वा रामकण्ठा ८ तहेव
 य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्ठा ३, नवमी दसमी महासेणकण्ठा १० य ।

अर्थः—जम्हूँ स्वामी सुखम स्वामी से पूछते हैं कि वे भगवन् ! मान्य वर्ग का अर्थ आपने क्या अब आठवें

वर्ग का अर्थ कहिए। श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं कि हे जम्बू ! आठवें वर्ग में दश अध्ययन करते हैं वे इस प्रकार हैं:— पहिला काली, दूसरा, सुकाली, तीसरा महाकाली, चौथा कृष्णा, पाँचवाँ सुकृष्णा, छठा महा कृष्णा, सातवाँ वीर कृष्णा, आठवाँ रामकृष्णा तथा नौवाँ पितृसेन कृष्णा और दशवाँ महासेन कृष्णा ये दशों श्रेणिक राजेन्द्र की राणियों नाम के दश अध्ययन हैं।

मूल—जइ णं भंते ! अट्टमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पद्दत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपेत्तणं के अट्ठे पद्दत्ते ? ।

अर्थ:—हे गुरुदेव ! वीर भगवान् ने आठवें वर्ग के दश अध्ययन करते हैं तो हे भगवान् ! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष के पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नाम नगरी होरथा, पुद्दभदे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया. वण्णओ ।

अर्थ:—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में चंपा नामक नगरी थी। उसके बाहर ईगान कोण में पूर्ण भद्र नामक चैत्य था। उस चंपा नगरी में कौणिक नामक राजा राज्य करता था। उसका वर्णन करना।

मूलः— तय णं नंपाए नगरीए सेणियस्स रत्तो भज्जा कोणियस्स रत्तो बुद्धमाउया काली नामं देवी होत्था, वण्णओ । जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, वहुहिं चउत्थछट्टट्टमेहिं जाव अप्पाणं भारेमाणी विहरति ।

अर्थः—उम नंदा नगरी में श्रेणिक राजेन्द्र की स्त्री और कौणिक राजा की छोटीमाता कालीदेवी नामक राणी थी, उसका रणन करना । उसने नंदा की तरद्वीक्षा ग्रहण की, सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया तथा बहूत्र उपवास, छट्ट और अट्टम आदि तप द्वारा यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावती हुई रही ।

मूलः—तए णं सा काली अज्जा अण्णया कदाइं जेणेव चंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छिता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भे हिं अब्भणुण्णया समाणी रयणावल्लं तवं उवसंपजेत्ताणं विहरेत्ताए ।
वदामुहं देवणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।

अर्थः—उमकेएए काशी मात्मी अन्यथा (एक समय) जहाँ आर्य चंदनवाला नामक मात्मी (अपनी गुरुणी) रहती थी वहाँ आई । आएर उम प्रकार कहने लगीः— हे मात्मीजी ! तुम्हारी आज्ञा केएर मैं ग्वावली नामक तप को अंगीकार करके विचारने की उच्छा करनी दे । तय चंदनवाला मात्मी ने कहाः— हे देवबालुप्रिया ! जिसमें तुमको

होता हो उसमें विलम्ब मत करो ।

विशेषार्थः—इस आठवें वर्ग में क्या विशेषता है वह कहते हैं:—यहाँ तप का नाम रत्नावली कहा है । गले में पहने की वस्तु (हार) वह आभूषण विशेष है । कारण जो रत्नावली के सामान जो तप है वह तप भी रत्नावली तप कहलाता है । जैसे रत्नावली नामक आभूषण दोनों तरफ से प्रथम शुरुआत में पतला और फिर अधिक २ जाड़ा होता है, उसके बाद दोनों काहलिका नामक दो अवयव (चक्रदे) स्वर्णमय होते हैं । उसके बाद दोनों तरफ लक्ष्मी २ सर होती हैं, उसके बाद हार के मध्य में अधिक मूल्य वाली बड़ी २ सगियाँ विभूषित रहती हैं । उसी प्रकार जो तप पदादिक में दिखाने में आता है । वह तप इस आकार को धारण करता है । इससे यह तप का नाम रत्नावली तप कहा है । इसमें पहले चतुर्थ (एक उपवास), फिर छठ (दो उपवास) फिर अष्टम (तीन उपवास) द्वारा उसका मस्तक बनता है । उसके बाद आठ छठ (आठ बार दो दो उपवास) आते हैं । इसकी स्थापना करते दो पंक्ति में चार खड़े खाने बार आठ छठ स्थापन करने चाहिये । अथवा तीन पंक्ति से नव खाने कर मध्य खाने में शून्य स्थापन कर याकी के आठ खानों में आठ छठके २-२ अंक रखने, इसके बाद एक पंक्ति में खड़े सोलह खाने कर उसमें अनुक्रम से चौथ भक्त (एक उपवास) से आरंभ कर चौतीस भक्त (सोलह उपवास) तक स्थापन करने । इसके बाद रत्नावली के मध्य भाग की

स्थापना कर चौकीन छद्द स्थापन करने के हैं; क्योंकि उसमें अधिक मूल्य वाली मणियों के समान मणियों की कल्पना की है। उसमें पहले दो छद्द, उसके नीचे तीन छद्द, फिर अनुक्रम से चार, पांच, छ छद्द स्थापन कर उसके नीचे २ अनुक्रम से उतरते हुए पांच, चार, तीन और दो छद्द स्थापन करने। यथा आठ नब्दी और छ आड़ी रेखा करके पैंतीस ग्वाने का मूल्य के ग्वाने में अन्य रत्न वाली चौकीन छद्द स्थापन करने। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी नीचे से ऊपर जाते पहले मौल्य उपवास से लेकर एक उपवास पर्यन्त मौल्य ग्वाने स्थापन करने। इसके बाद उसकी ऊपर आठ छद्द स्थापन करने। उसकी स्थापना पहिले के अनुसार करनी। इसके बाद उसके ऊपर अनुक्रम से अठ्ठस (तीन उपवास), छद्द (दो उपवास) और चतुर्थ (एक उपवास) स्थापन करना।



यद्य कर्त्तुं यत्नं इति शब्दोऽयं स एव प्रकाशयति

॥१॥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | ० | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

॥२॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |
| १ | २ | २ | १ |

| |
|---|
| ३ |
| ५ |
| ४ |
| ३ |
| २ |
| १ |
| ० |
| ४ |
| ७ |
| ७ |
| ५ |
| ५ |
| २ |
| ३ |
| २ |
| १ |

| |
|---|
| ३ |
| ५ |
| ४ |
| ३ |
| २ |
| १ |
| ० |
| ४ |
| ७ |
| ७ |
| ५ |
| ५ |
| २ |
| ३ |
| २ |
| १ |

अथवा

| |
|---|
| ३ |
| ५ |
| ४ |
| ३ |
| २ |
| १ |
| ० |
| ४ |
| ७ |
| ७ |
| ५ |
| ५ |
| २ |
| ३ |
| २ |
| १ |

| |
|---|
| ३ |
| ५ |
| ४ |
| ३ |
| २ |
| १ |
| ० |
| ४ |
| ७ |
| ७ |
| ५ |
| ५ |
| २ |
| ३ |
| २ |
| १ |

| | |
|---|---|
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |

| | |
|---|---|
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |
| २ | २ |

| | | |
|---|---|---|
| २ | २ | २ |
| २ | ० | २ |
| २ | २ | २ |

| | | |
|---|---|---|
| २ | २ | २ |
| २ | ० | २ |
| २ | २ | २ |

| |
|---|
| ३ |
| २ |
| १ |

| |
|---|
| ३ |
| २ |
| १ |

| |
|---|
| ३ |
| २ |
| १ |

| |
|---|
| ३ |
| २ |
| १ |

॥३॥

॥४॥

॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥

इस पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना चाहिये। इसमें सब काम गुणों अर्थात् इच्छानुसार प्रिय रमादि वाला आहार जिसमें हो उसे सब काम गुणित कहा जाता है। यानी तपस्वी की इच्छानुसार पारने में छ प्रकार के विगय वाला आहार कर सकता है। तोभी चारों परिपाटियों में पारणे संकषी विशेष कर यह नियम है, कि- पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना, दूसरी परिपाटी में चिकृति बलित (छः प्रकार की विगय रक्षित) पारना करना, तीसरी परिपाटी में अल्पपूज (सूवा भोजन जो दाय क्लेप नहीं लगे) पारना करना। और चौथी परिपाटी में आंबिद से पारना करना। दूसरी वानना में पहली परिपाटी में सब गुण वाला पारना करना ऐसा कहा है।

मूल- नते णं सा काली अना अज्जचंदणाए अच्चभणुणया समानी रयणावलं उवसंपजित्ता णं निहरति, नं जहा—

चउत्थ करेति, चउत्थ करंत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति। अट्टं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति। अट्टमं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति। चउत्थं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति। छट्टं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेति, मच्चकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता मच्चकामगुणियं पारेत्ता

दसमं करेति, दसमं करिन्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति । दुवालसमं करिन्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति । चोद्दसमं करिन्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति । सोलसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टारसमं करेति, अट्टारसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति । वीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं-गुणियं पारेत्ता बावीसइमं करेति । बावीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं करेत्ता । चउवीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता छब्बीसइमं करेति । छब्बीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टावीसइमं करेति । अट्टावीसइमं करेत्ता सब्बकाम गुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता तीसइमं करेति । तीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसइमं करेत्ता । बत्तीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेति । चोत्तीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसं छट्टाई करेति । चोत्तीसं छट्टाई करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेत्ता । चोत्तीसइमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता तीसं करेत्ता । तीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टावीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेत्ता, सब्बकामगुणियं पारेत्ता ।

सर्वकामगुणियं पारंत्ता इत्थीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता चउवीसं
 करेत्ति । एतं तिन करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता यावीसं करेत्ति । यावीसं करेत्ता सब्ब-
 कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता थीसं करेत्ति । थीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणिय
 पारंत्ता अट्ठमं करेत्ति । अट्ठमं करेत्ता सब्बकामगुणिय पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता सोलसमं करेत्ति ।
 सोलसमं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता चोदसमं करेत्ति । चोदसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं
 पारंत्ता, सग्गकामगुणियं पारंत्ता सारसमं करेत्ति । सारसमं करेत्ता सब्बकामगुणिय पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता
 अट्ठमं करेत्ति । अट्ठमं करेत्ता सब्ब कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता अट्ठमं करेत्ता सब्ब-
 कामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता उट्ठं करेत्ति, उट्ठं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं
 पारंत्ता चउवीसं करेत्ति, चउवीसं करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणिय पारंत्ता अट्ठं उट्ठं करेत्ति, अट्ठं उट्ठं
 करेत्ता सग्गकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं पारंत्ता, अट्ठमं करेत्ति । अट्ठमं करेत्ता सब्बकामगुणिय
 पारंत्ता, सब्बकामगुणिय पारंत्ता उट्ठं करेत्ति । उट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, सब्बकामगुणियं
 पारंत्ता चउवीसं करेत्ति ।

चउवीसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारंत्ता, एतं चउवीसं पत्ता ग्यणावलीण तपोकम्मस्स पटमा परिवाडी

एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं चावीसाण य अहेरत्तेहिं अहामुत्ता जाव आराहिया भवति ।

अर्थ:—उसके बाट बट काली साध्वी चंदनवाला साध्वी की आज्ञा लेकर ग्वाथली नामक तप को अंगीकार करके विचरने लगी । बट इस प्रकार है—पण्डिले चतुर्थभक्त (एक उपवास) करे, चतुर्थ भक्त करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके फिर अष्टम (तीन उपवास) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके आठ छट्ठ (यानी आठ बार दो दो उपवास) करे, आठ छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्व कामगुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तीन उपवास) करे, अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे । दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे । द्वादश करके सर्वकामगुणित कामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश (छः उपवास) करे । चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके पौत्रप (मान उपवास) करे, पौत्रप करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश (आठ उपवास) करे । अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे ।

सर्वकामगुणिपारना करके विंशति (नव उपवास) करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वाविंशति (दश उपवास) करे, द्वाविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके त्र्यविंशति (न्यास उपवास) करे । चतुर्विंशति करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके पञ्चविंशति (बारह उपवास) करे । षट्त्रिंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके अष्टविंशति (बारह उपवास) करे । अष्टविंशति करके सर्वकाम गुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके त्रिंशत् (चौदह उपवास) करे । त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके द्वात्रिंशत् (पंद्रह उपवास) करे । द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके चतुर्विंशत् (सोलह उपवास) करे । चतुर्विंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारना करके चौबीस छट्ट (चौतीस षट्ठे) करे, चौबीस छट्टों में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकाम गुणित पारणा करके चतुस्त्रिंशत् (सोलह उपवास) करे । षट्त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारणा करके द्वात्रिंशत् (पंद्रह उपवास) करे । द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, अष्टविंशति करके पञ्चविंशति करे, अष्टविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षट्त्रिंशति (बारह उपवास) करे । षट्त्रिंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे ।

सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्विंशति (ग्यारह उपवास) करे । चतुर्विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वाविंशति (दस उपवास) करे । द्वाविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके विंशति (नव उपवास) करे । विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादस (आठ उपवास) करे । अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश (सात उपवास) करे । चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे । द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे । दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तीन उपवास) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे । छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके आठ थैले) करे । आठ छट्ठ करके प्रत्येक पारणे में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तैला) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे । फिर छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित

पारना करे। इस प्रकार निम्न्य करके रखावली तपश्चर्या की पहली परिपाटी एक वर्ष तीन महीने और बाईस अशो-
रात्रि में तृय में करे अनुसार आराधन की जाती है। इस एक परिपाटी में ३८४ उपवास और ८८ पारणे के दिन
पितृभर सब ३७२ दिन होने हैं।

मूल—तथांतरं च णं दोच्चाण् परिवाडीण् चउत्थं करेति, चउत्थं करिता विगड्वजं पारेति, विग-
उत्थं पारेना छंठं करेति, छंठं करिता विगड्वजं पारेति, एवं जहा पढमाण् परिवाडीण् तथा बीआए वि,
नयं सव्यपारणण् विगड्वजं पारेति जाव आराहिया भवति ।

अर्थ—उसके बाद दूसरी परिपाटी में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करे। चतुर्थ करके विगड्विना पारना करे।
विगड्विना पारना करके छंठ (दो उपवास) करे। छंठ करके विगड्विना पारना करे। इसी प्रकार पहली परिपाटी
की तरह सब करना। विशेष यह है कि मय पारनों में विगड्वि को त्याग कर पारने करे। इस प्रकार दूसरी परि-
पाटी आराधन की जाती है।

मूल—तथांतरं च णं तच्चाण् परिवाडीण् चउत्थं करेति, चउत्थं करेता अलेवाडं पारेति, सेसं तंहेव.
छंठं नउत्थायि पश्चिमाडी, नयं सव्यपारणण् आर्थविलं पारेति, सेसं तं चैव । गाहा-पढमंमि सव्यकामगुणं

पारे, बीतियमि विगइ वजं । तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलंमि चउत्थं ॥ १ ॥

अर्थ:—उसके बाद तीसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके ब्रह्मपकृत पारना करे । बाकी सब पूर्व की तरह जान लेना चाहिये । इसी प्रकार चौथी परिपाटी को भी जानना परन्तु इसमें प्रत्येक पारने के दिन आयंबिल करे, बाकी सब पहिले की तरह जानना । चारोंही परिपाटी के पारने की संग्रह की हुई गाथा का अर्थ इस प्रकार है “ पहिली परिपाटी में सर्वकामगुण यानी सब इच्छित कल्पनीय वस्तुओं से पारना करे, दूसरी परिपाटी में विगई को त्याग कर पारना करे, तीसरी परिपाटी में लेपरहित वस्तुओं से पारना करे । और चौथी परिपाटी में आयंबिल से पारणा करे । ”

मूल—तए णं सा काली अज्जा तं रयणावलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छिता अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति ।

अर्थ:— उसके बाद वह काली साध्वी रत्नावली नामक तपस्वर्या को पांच वर्ष, दो महीने, और अट्ठावीश दिने सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहां आर्य चंदनबाला साध्वी थी वहां आर्य चंदन

बाल्य मात्सी को पंद्रना की, नमस्कार किया। चंद्रना नमस्कार कर बहुत उपवास चगौरह तप करती हुई यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावन करती हुई विचरने लगी।

मूल—तप ण सा काली अज्ञा तेणं ओरालेणं जाव भमणिसंतथा जाया यावि होरथा, से जहा इंगालसगडी रा जाय सुहुयहुयासणे उव भासरासिपलिच्छणा तमेणं तेणं तवतेयसिगीए अतीव उवसेभेमाणी २ चिद्धति।

अर्थ—उमके बाद वह काली मात्सी इस प्रकार उदार तपअर्था करने से यावत् शरीर में नसों से ज्यादा होरही थी—(शरीर की नसें श्रितनी थीं)। जैसे कोई कोयलों की भी हुई गाडी हो, यावत् अच्छी तरह से क्रोम की हुई तेज अदि हो और मान (भग्नी) से डफी हुई हो, उमी प्रकार वह काली साध्वी आत्माके अन्दर रहा हुआ तप तेज से और तरअर्था स्त्री लक्ष्मी से अन्यन्त शोभापमान् हो गई। यहाँ तप संबन्धी उदार शब्द के पास पारल शब्द है उसका आशय इसप्रकार है—'परत' यानी गुरु का दिया हुआ, अथवा प्रयत्नवाला यानी प्रमाद रहित, 'प्रगृहीत' यानी बहुत आदर पूर्वक उन्माह में प्रवृत्त किया हुआ, कल्याण कारक, 'शिव' यानी मोक्ष का कारण रूप, 'पन्न' यानी मने प्रकार की संग्रह को देने का, 'सांगल' यानी पाप का नाश करने वाला, 'मश्रीक' यानी शोभापमान, 'उद्दण' यानी तीव्र, 'उत्तम' यानी श्रेष्ठ और 'उदार' यानी विष्णु होने में उदारता वाली तपअर्था द्वारा वह शर्मा मात्सी गुरु यानी शरीर के रस रहित, भूत यानी क्षुधा शर्मा, निर्मांस यानी मांस रहित हो गई, और

अस्तिचर्मावनद्धा यानी मात्र अस्थियं, चर्म से मढ़ी हुई रह गई जिससे बैठने में तथा उठने में उसके हाड़ के कड़कड़ शब्द करने लगे अर्थात् वह शरीर से कृष हो गई और उस का शरीर नशों से व्याप्त रह गया था। इस प्रकार उसकी अवस्था होगई तो भी वह अपने जीव के बल द्वारा चलती थी और जीव के ही बल से खड़ी रहती थी। वह काली साध्वी भाषा-वचन बोलने के बाद ग्लानि पाती। भाषा का उच्चारण करते वक्त भी ग्लानि करती थी, मैं भाषा का उच्चारण करूंगी ऐसा विचार आते ही यानी भाषा बोलने के पहले भी ग्लानि को प्राप्त होती थी जैसे कोई लकड़ी की भरी हुई गाड़ी या पत्तों की भरी हुई गाड़ी, या कोयले की भरी हुई गाड़ी धूपमें रखकर सूखी हुई खड़खड़ शब्द करती हुई चलती है और शब्द करती हुई खड़ी रहती है, इसी प्रकार वह कालीसाध्वी भी हाड़को के खड़खड़ शब्द द्वारा चलती व खड़ी रहती थी और उग्र तप द्वारा और तपके तेजद्वारा वृद्धि पाती थी। मांस रुधिर से शरीर में हानि होने लगी। भस्म से ढकी हुई अग्नि की तरह तपश्चर्या द्वारा, तेज द्वारा और तपश्चर्या रूपी लक्ष्मी की संपदा द्वारा अधिकाधिक शोभायमान होकर रहने लगी। यहाँ तपश्चर्या के जो विशेषण कहे हैं वे एक ही अर्थ के ब्योक्त हैं तो भी विशेष अर्थ की विवक्षा करने के लिये ज्ञाता सूत्र के पहिले अध्ययन की टीका के अनुसार जान लेना चाहिये।

मूल-तए णं तीसे कालीए अजाए अन्नदा कदाइ पुंवरत्तावतकाल समयंसि अयं अब्भत्थिए जहा खंदयस्स

चिता जहा जाय अथिमे उट्टाणे (कम्ममे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिईसंवेगे) ताव ताव मे सेयं कळं जाव जलने अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणा मूसणा भत्तपाणपडियाइस्सवे कालं अणवकंसमाणे विहरेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेत्ति, एवं संपेहित्ता कळं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदनि णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वया-मी इच्छामि णं अज्जा ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा जाव विहरेत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिसंभं करेह । तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणाञ्जूसिया जाव विहरति ।

अर्थः— उमके षाड् उम काली माथी को एक समय सय रात्रि को धर्म ध्यान करते हुए इस प्रकार का अस्तरबसाय-विचार उन्मत्त हुआ-संकटक मुनि की तरफ इसने विचार किया कि जहां तक मेरी उठने की शक्ति है (विद्या करने की शक्ति है जहां तक बन्ध, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, श्रद्धा-धांदा, वृत्ति-संतोष और संवेग है) वहां तक मुझे बन्ध मुक्त यात त्वं प्रकाशमान होवे तब आर्या बन्धनबाला मान्त्री से पूज कर आर्य बन्धनबाला माथी की आज्ञा लेकर संवेगना को प्रहण कर, आहार पानी का प्रत्याग्यान कर, मृत्यु की बांछा नहीं रखकर विचार करना प्रत्यागमनी है । इस प्रकार उमने विचार किया । इस प्रकार विचार करके दूसरे दिन सबेरे जहां

आर्या चन्दनबाला साध्वी थी वहाँ आई, आकर आर्या चन्दनबाला साध्वी को बंदना की, नमस्कार किया। बन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार कहने लगी:-हे साध्वी! आपकी आज्ञा हो तो संलेखना प्रहण कर यावत् मैं विवरने की इच्छा करती हूँ तय आर्या चन्दनबाला सध्वी ने कहा कि-हे देवानुप्रिया! तुमको जिस प्रकार सुख उत्पन्न हो उसमें विलंब मत करो। इसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला की आज्ञा लेकर संलेखना कर यावत् विवरने लगी।

मूल—तए णं सा काली अजा अज्जचंदणाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जिता बहु षड्पुत्राइं अटं संवच्छराइं सामणपरियागं पाउणिता मासियाए संलेहणाए अपाणं झुसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणस-णाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जात्र चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा। णिस्खेवो अज्झयणं। (सू० १७)

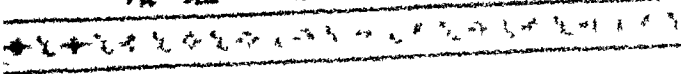
अर्थ:—उसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यास कर पूर्ण आठ वर्ष चारित्र्य पालन कर एक महीने की संलेखना द्वारा आत्मा (शरीर का) क्षय कर अनशन द्वारा साठ भक्त को छेडकर यानी एक महीने का अनशन पूरा करके जिस कार्य के लिये चारित्र्य प्रहण किया था उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोच्छ्वास सम्पूर्ण कर सिद्धिपद को प्राप्त किया। (सू० १७) यह प्रथम अध्ययन का अर्थ हुआ।

॥ इति आठवां वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ८ ॥ १ ॥

मूल—नेणं काले णं ते णं समाणं चंपा नाम नगरी, पुत्रभट्टे चेइण, कोणिए राया, तस्य णं मेणियस्स मत्तो भजा. कोणियस्स रणो जुहमाडया सुकाली नाम देवी हात्था । जहा काली तथा सुकाली ति गिम्बेता ज्ञाव भांसमाणे विहरति ।

अर्थ—उस काल उस समय में चंपा नामक नगरी के बाहर पूर्णभद्र नामक चैत्य था वहाँ पर कौणिक नामक राजा राज्य करता था । वहाँ श्रेणिक राजेन्द्र की श्री कौणिक राजा की छोटी बाना सुकाली नामक राणी थी । काली की तरह सुकाली ने भी दीक्षा ग्रहण ही यात्रा उग्र तप-संयम में अपनी आत्मा को नारती हुई विपरमे गयी ।

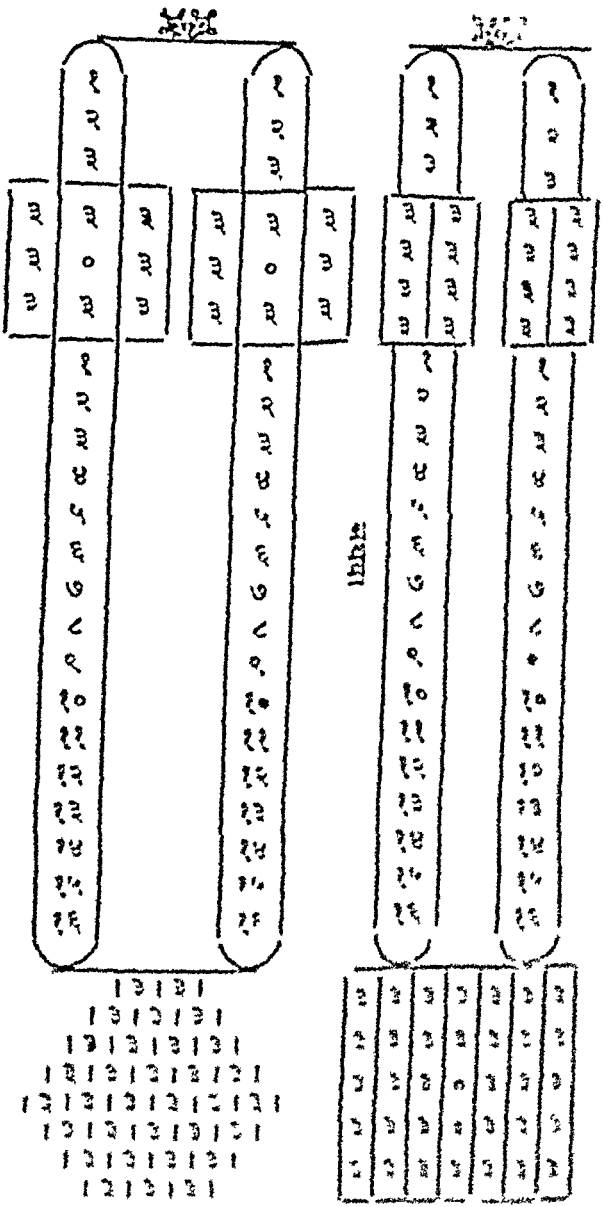
मूल—नणं मा सुकाली अजा अन्नया कयाड जेणेव अजचंदणा अजा जाव इच्छामि णं अजो बुग्गेहि अन्नणुत्ताया नमागी कणगावलीतवोकम्म उवमंपजित्ता ण विहेस्ताण । एवं जहा रयणावली तथा रयणावली ति. नमरं निचु ठाणेमु अट्टमाइं करेति जहा रयणावलीए छट्ठाटं, एक्काणं परिवाडीए संवच्छरो पंच नाम्ना वाग्गस व भोजेत्ता. चउण्हं पंच वरिसा नय मासा अट्टाणस दिवसा, सेसं तहेव । नव वासा परिवातो ज्ञाव निग्ग । (सु० १८)



अर्थ:—उसके बाद वह सुकाली साध्वी एक समय जहाँ आर्या चन्दन बाला साध्वी भी वहाँ गई और इस प्रकार कहने लगी:—हे साध्वी जी ! आपकी आज्ञा लेकर मैं कनकावली नामक तपश्चर्या को ग्रहण करके विहार करने की इच्छा करती हूँ। इसी प्रकार रत्नावली तप के समान ही कनकावली तप जान लेना चाहिये। विशेष यह है कि रत्नावली तपश्चर्या में तीन स्थानों पर आठ आठ और चौतीस छठ करने का कहा है। उनके बदले यहाँ कनकावली तपमें आठ आठ और चौतीस इन तीनों स्थानों पर अट्ठम करने के हैं। इसलिये एक परिपाटी में एक वर्ष, पाँच महीने और बाहर अहोरात्री होती है और चारों परिपाटी मिलकर पाँच वर्ष, नौ महीने और अठारह रात्री दिन होते हैं। दूसरा सब अधिकार उसी प्रकार यानी रत्नावली की तरह जान लेना चाहिये। यावत् नव वर्ष का चारित्र्य पालन कर यावत् अनशन कर के उसने सिद्धि पदको प्राप्त किया। (सूत्र १८)

सूचना:—स्वर्ण का मणिबाला अलंकार की तरह यह तपश्चर्या करने में आती है जिससे यह तप भी कनकावली नामक कहा जाता है इसकी स्थापना श्रुत १६३ में दी है, वहाँ से देखें।

कनकावली तप का यंत्र



एतत् कनकावली तप यंत्रं श्री गणेशाय नमः

मूल—एवं महाकाली वि, नवरं खुडागं सीहानिक्कीलियं तत्रोक्कम्मं उवसंपज्जिताणं विहरति तं जहा-
चउत्थं करोति, चउत्थं करित्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता चउत्थं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता छट्ठं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता अट्ठमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता हुवालसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता दसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता चारसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं
पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं
पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता तीसत्तिमं करोति, करेत्ता सब्बकाम-
गुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता तीसत्तिमं करोति, करेत्ता
सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करोति, करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसमं करोति,

करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं
करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता आरसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता
चोद्दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता आरगमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्टमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता अट्टमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता नउत्थं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
पारेत्ता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
अरेत्ता नत्तारि परिगट्ठिओ. एत्ताए परिवाडीए उम्मामा सत्त य दिवत्ता, चउण्हं दो उरिसा अट्ठावीसा य
दिग्गमा ज्ञाप सिद्धा । (सू० ११.).

अर्थ— इमी प्रकार महाकाली मायाया का भी वर्णन करना आरम्भ । विशेष यह है कि—ए ननु मित्रनि-
विशदित्व नामरूप वी अंगीकार क विचार करने लगी । यह ताप इस प्रकार हैः—पहले चतुर्थे स्ते, चतुर्थे स्तेके

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| २० | १५ | १० | ५ | ० | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | ५० | ५५ | ६० | ६५ | ७० | ७५ | ८० | ८५ | ९० | ९५ | १०० |
| २० | १५ | १० | ५ | ० | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३५ | ४० | ४५ | ५० | ५५ | ६० | ६५ | ७० | ७५ | ८० | ८५ | ९० | ९५ | १०० |

इस तपस्ये की रक्षा की ता ही नगर पहिली परिपाटी में सर्व कामयुगित पावणा करे, दूसरी परिपाटी में तैरतगि वस्तुओं से वाचना करे, तीसरी परिपाटी में विगये रहित पावणा करे और चौथी परिपाटी में आबिल से वाचना करने की सर्वादि है।

मूल— पूर्ण कण्ठ वि. नारं महालयं मीहणिलीयं तयो रुम्भं जहेव सुश्रांगं, नवरं चोसीसडमं ताव जेयन्ती चोरे उचारयन्तं, पृथग् चरितं छम्माना अद्वारत य दिवसा, चण्डं च चरिता दो मासा वास्त य अक्षोरजा. तेने जता कालीण जाव सिना (सू० २०)

अर्थ— इसो वस्तु कल्याणकी मावनी का की रानं कटना कायि। विशेष करे कि—उमने यत्रामिहं किल्लोत्तिय नामक कर किया। यह पर छोडा मिहनिक्कीदिय तप के जेमा की है। उस में विशेष यह है कि छोटे

सिंहनिष्कीर्णिक तप में नव उपवास तक करने के हैं और बड़े सिंहनिष्कीर्णिक तप में सोलह उपवास तक करने के हैं और उसी प्रकार पीछे छह कर दृसगी पंक्ति में छेदे का है। उसमें एक वर्ष, छः महीने और अठारह दिन लगते हैं तथा चांगों परिवाही भिन्ना कर छः वर्ष, दो महीने और बारह महोगात्र होते हैं। दोष सब अपेक्षार काही सापी की तरह रहना या कत्तु बह अनशनपर सिद्धि तह को प्राप्त हई। (गृ० २०)

इस प्रकार महा सिंहनिष्कीर्णिक तपधर्या को भी जानना चाहिये। विंजोर तह दे कि एक से सोलह वर्गज और सोलह से एक वर्गज तक व्यापन करने। फिर एकरी पंक्ति में दो से सोलह वर्गज व्यापन किये हुए वर्गज अंक के पीछे अनुक्रम से एक से पन्द्रह तक के अंक रगान और दूसरी पंक्ति में जो सोलह से एक तक के अंक हों हैं उसमें पन्द्रह से द्वा तक के वर्ग्येक अंक हैं, पूरे अनुक्रम में चौलह से एक वर्गज अंक रगाने। इस तप के दिन का प्रमाण इस प्रकार है:— एक में सोलह और सोलह में एक, ऐसे ही पंक्ति है। उस में एक से सोलह तक का जोड़ १३३ होने है। (दूसरी पंक्ति का भी १३३ होने है), एक से पंद्रह तक का जोड़ १२० होना है, एक में चौलह का जोड़ १०० होने है और पारने के दिन ३१ होने हैं ये सब मिल कर ३८८ दिन होना हैं। इसमें एक वर्ष, छः महीने और अठारह दिन होने हैं.



अर्थ—इसी प्रकार कृष्णा साध्वी का भी वर्णन करना। विशेष यह है कि सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार करके वह विहार करने लगी। उस में पहली सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा एक २ दत्ति आहार की और एक २ दत्ति पानी की ग्रहण करे। दूसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा दो दो दत्ति भोजन की और दो दो दत्ति पानी की ग्रहण करे। तीसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा भोजन की तीन २ दत्ति और पानी की तीन २ दत्ति ग्रहण करे, चौथी सप्तमिका में चार चार, पांचवीं में पांच पांच, छठी में छः और सातवीं सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा सात सात दत्ति भोजन की और सात सात दत्ति पानी की ग्रहण करे। इस प्रकार करने से यह सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को गुण पचास रात्रि-दिन और एकसौ छत्तुं दत्तियों से सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहाँ आर्य चंदन बाला साध्वी थी वहाँ आई, आकर आर्य चंदन बाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार कहा:— हे साध्वीजी ! आप की आज्ञा हो तो मैं अष्ट अष्टमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विचरने की इच्छा करती हूँ। तब साध्वी ने कहा कि:—हे देवानुप्रिया ! जिस में तुझे सुख उत्पन्न हो वह तप कार्य करने में विलंब मत कर।

मूल—तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपजित्ताणं विहरति, पढमे अट्ठए एक्कं भोगणस्स दत्तिं पडिग्गाहेति, एक्कं पाणयस्स जाव अट्ठमे

अदृष्टं भोग्यमस्व पङ्क्तिगोहनि, अष्ट पाण्यमस्व । एवं खलु एवं अदृष्टमियं भिस्व्युपडिमं चउसदीगं
 नतिःश्रिणुति त्रोटि न अदृष्टमिण्डिः भिस्व्यासाण्डिः अत्तासुतं जाव आगहिता नवनवमियं भिस्व्युपडिमं
 इत्यस्येतिनाण निरति । पडमे नराण एतेषुं भोग्यमस्व दति पङ्क्तिगोहनि एतेषुं पाण्यमस्व जाव नवमे
 नराण नरा दति भोग्यमस्व पङ्क्तिगोहनि, नरा नव पाण्यमस्व । एवं खलु नवनवमियं भिस्व्युपडिमं
 इत्यस्येतिनाणःश्रिणुति चउडिः पंचोत्तरेति भिस्व्यासाण्डिः अत्तासुता जाव आगहिता दसदसमियं भिस्व्युपडिमं
 इत्यस्येतिनाणं पित्तनि । इत्ये इत्येण एतेषुं भोग्यमस्व दति पङ्क्तिगोहनि एतेषुं पाण्यमस्व जाव दसमे
 इत्ये इत्ये भोग्यमस्व दति पङ्क्तिगोहनि दस दस पाण्यमस्व । एवं खलु एवं दसदसमियं भिस्व्युपडिमं
 एतेषुं इत्येतिनाणःश्रिणुति अदृष्टमिण्डिः भिस्व्यासाण्डिः अत्तासुतं जाव आगहिनि, आगहिना चदृष्टिं चउत्य जाव
 भिस्व्यासाण्डिःश्रिणुति अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः

यं—उत्तरं यत् एतं सुखं नान्यथा जायं चंजन पाण्य साध्या श्री आज्ञा इत्ये अदृष्टमिण्डिः
 अदृष्टमिण्डिःश्रिणुति अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः अदृष्टमिण्डिः

हिन्दी अर्थ
 गहिता.
 ८ गण

मूल—नपुं णं मुक्ताहा अज्ञा तेषं ओगलेणं जाव सिद्धा । निम्बेवो अज्जयणं । (सू० २१) ।
 अर्थ—उम के बाद यह मुक्ताहा साध्वी गैसी उदार तपस्वियों द्वारा यावत् अनशन कर अष्ट कर्मों का
 क्षय करने पितृ यज्ञ हो प्राप्त हुई । इस प्रकार उस अध्ययन का निक्षेप पानी व्याख्यान पूर्ण हुआ (सू० २१)
 मूल—...णं महाकथा नि, णारं खुगुणं सब्बओभइं पडिमं उवसंपिज्जिताणं विहरति, तं जहा—
 वड्यं हेति, वड्यं पत्तिता मन्तरासगुणियं पारेति, सब्बकासगुणियं पारेता छट्टं करेति, छट्टं करेता सब्बकास-
 गुणियं पारेति, मन्तरासगुणियं पारेता अट्टमं करेति, अट्टमं करेता मन्तरासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं
 पारेता इमं करेति, इमं करेता मन्तरासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता दुयालमं करेति, दुयालमं
 करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता अट्टमं करेति, अट्टमं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति,
 मन्त्रकासगुणियं पारेता इमं करेति, इमं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति मन्त्रकासगुणियं पारेता दुयालमं
 करेति, इयालमं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता वड्यं करेति, वड्यं करेता
 मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता छट्टं करेति, छट्टं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्र-
 कासगुणियं पारेता इयालमं करेति, इयालमं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता वड्यं
 करेति, वड्यं करेता मन्त्रकासगुणियं पारेति, मन्त्रकासगुणियं पारेता छट्टं करेति, छट्टं करेता मन्त्रकासगुणियं

पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति, सब्बकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करेति, अट्टमं करेत्ता सब्बकामगुणियं पारेति । एवं ग्वल्लु एवं खुद्दागसब्बतो भइसम तवोकम्मसम पडमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं द्वियसेहिं अट्ठासुत्तं जाव आराहेत्ता दोच्चाण परिवाडीण चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता विगड्वज्जं पारेति, विगड्वज्जं पारेत्ता जहा रयणावलीण तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ पारणा तहेव । चउण्हं कालो संबच्छरो मामो दम य द्विवसा, मेमं तहेव जाव सिद्धा, निम्वेयो अञ्जयणं (सू० २२) ॥

और पानी की एक = उक्ति गप्प रहे। इसी प्रकार एक = उक्ति बसने हुए पान् आर्यी अटमिका में
 एक दिन एक भोजन की आठ = उक्ति और पानी की आठ = उक्ति ग्रहण रहे। इस प्रकार निरूप्य हरेके यह अष्ट
 अटमिका नामक नियु प्रतिमा पीनर रात्रि दिन में और दो सो अष्टांज उक्तियों में सूत्र में हरे अनुसार
 आगान परे, न रात्रिका नामक नियु प्रतिमा को अंगीकार कर शिव करने लगी। इस में पहले नौ दिन
 एक भोजन की एक एक उक्ति और पानी की एक = उक्ति ग्रहण रहे। इसी प्रकार एक एक अटमिका में एक =
 उक्ति बसने हुए पान् नामक रात्रिका में नौ दिनों एक भोजन की नौ नौ उक्ति और पानी की नौ नौ उक्ति
 ग्रहण रहे। इस प्रकार निरूप्य हरेके यह नामक रात्रिका नामक नियु प्रतिमा को एकली रात्रि दिनों में और बार
 ही सो अष्टांजों में सूत्र में हरे अनुसार आगान परेके लिए दशम रात्रिका नामक नियु प्रतिमा को ग्रहण
 करने, विचार करने लगी। इन में पहले दश दिन तक भोजन की एक एक उक्ति और पानी की एक = उक्ति
 ग्रहण रहे, बारस दशम अटमिका में भोजन की दश दश उक्ति और पानी की दश दश उक्ति ग्रहण रहे। इस
 अष्टांजों में सूत्र में हरे अनुसार आगान परेके अनुसार प्रतिमा एकली रात्रि दिनों में और मां पांच सो (५५०)
 अटमिका के अष्टांजों के अनुसार आगान परेके अनुसार प्रतिमा एकली रात्रि दिनों में और मां पांच सो (५५०)
 अटमिका के अष्टांजों के अनुसार आगान परेके अनुसार प्रतिमा एकली रात्रि दिनों में और मां पांच सो (५५०)

विन्दी त्रयं
 गहिर,
 ८ सो

करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ करे, छठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ करे, छठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, इस प्रकार निश्चय करके इसी तरह छोटी सर्वतोभद्रा नामक तपश्चर्या की पहली परिपाटी तीन महीने और दश दिन की सूत्र में कह अनुसार यावत् आराधन की, आराधन करके दूसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके विर्गई को छोड़ कर पारना करे, विर्ग छोड़ कर पारना करने के बाद छठ वगैरह उपरोक्त तप करे, जैसा रत्नावली तपश्चर्या में कहा है, उसी प्रकार यहां भी चारों परिपाटी में पारना करने का जान लेना । चारों परिपाटी का काल एक वर्ष, एक महीना और दश दिन का होता है।

द्वारा अभिप्राय उगी प्रकार यानी काली माधवी के अनुसार वर्णन करना यावत् यह सिद्ध पद को प्राप्त हुई। इस प्रकार इस व्यवहान का विवरण पूर्ण हुआ (नु० २२)

विशेषार्थः—परी सर्वतोभद्रा प्रतिमा की अपेक्षा यह छोटी होने से लघु सर्वतोभद्रा कहलानी है। सर्व विद्या और विद्विज्ञा में भद्रा यानी मम संग्या वाली होने से सर्वतोभद्रा कहलानी है। यह इस प्रकार है—एक से पांच तक के एक बीजक होने से यह प्रतिमा के अन्तर चौराक पंद्रह २ का जोड़ आता है उसकी स्थापना करने का इस प्रकार है।

नूतना—मस पौरुष उः गः नानुन के चौराणे पांच २ गाने करने यानी एक सर्वतोभद्रा नामे बनाने, फिर पार्थी नानुन में एक से पाँच तक के अंक रखने। जो २ ३ ४ ५ के लिये पंच में पढ़िये मन्त्र यात्री के गानों में उमके पीछे २ ३ ४ ५ के अनुसार अनुमान में लिखने, ऐसा करने से छोटी सर्वतोभद्रा प्रतिमा होती है इस प्रतिमा में पार्थवी के दिन विचोत्तर (५०) योग है और पारने के दिन पार्थी (२५) योग है। मन्त्र लिखकर एक पत्तिका में सौ दिन और चारों पत्तिकाओं के लिये ५५ पार्थवी दिन योग है।

लघु सर्वतोभद्रा

| | | | | |
|---|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ |

मूल—एवं वीरकण्ठा वि, नवरं महालयं सवतोभङ्गं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा-
चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करोति, छट्ठं करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारित्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति,
सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवा-
लसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसं करेति, चउदसं
करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करेति, सोलसं करेत्ता सव्वकामगुणियं
पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता
पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता
चउदसं करेति, चउदसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करेति, सोलसं
करेत्ता सव्वकागुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं
पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता

नोदसमं करोता सव्वकामगुणियं पाणेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करोति, सोलसमं करोत्ता सव्वकाम-
गुणियं पारेति, मव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करोति, चउत्थं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं
पारेत्ता उट्टं करोति, उट्टं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्टमं करोति, अट्टमं करोत्ता
मव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करोति, दसमं करोत्ता सव्वकामगुणियं पारेति । एव्वेक्काए
अट्ट मासा पंन य दिवसा. चउण्हं दो मासा अट्ट मासा वीसं दिवसा । सेसं तहेव जाव सिद्धा । (सू० २३)

अर्थ:—पानी प्रकार श्रीगुरुणा माघी सा भी वर्णन करना चाहिये विशेष यह है कि यह साघी महा सर्वतोभद्रा
नामक तपश्चर्या को प्रथम करने विचार करने उगी । यह तपश्चर्या इस प्रकार है:—पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व
काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके उट्ट करे, उट्ट करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व
काम गुणित पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके
दशम करे. दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके
सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्विंश करे, चतुर्विंश करके सर्व काम गुणित पारना
करे. सर्व काम गुणित पारना करके पौष्टक करे, पौष्टक करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित

णित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम करे, अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, दशम प्रकार पुरु पपिपाटी में आठ महीने और पांच दिन लगते हैं, और चारों परिपाटियों में द्वा वर्ष, आठ महीने और बीस दिन लगने हैं। शेष सब वर्णन काली साध्वी की तरह याचव बहुत प्रकार का तप कर अनशन कर सर्वकर्मों को क्षय कर अंत में भिद्ध पद को प्राप्त हुई। (सू० २३)



सूचना:—घोड़ी सर्तों भद्रा ही तरह यह महा सर्वतो भद्राको भी जाननेवा लाली। इसमें विशेष यह कि इस नपथ्या में एक उपवास से आरंभ कर मान उपवास न कर पावे है। उसकी स्थापना करने की रीति इस प्रकार है—पहले गुरु गान अंश पौन पत्नी पंक्ति में लिखने। उसमें जो मध्य का पंक्ति हो वह दुर्गा पंक्ति में पन्ने लिखना और उसके बाद तप के अनुक्रम में शेष पंक्तियाँ लिखने। इस प्रकार महा सर्तों भद्रा होती है। यहाँ नपथ्या के दिन एक ही तरह (१९३) होते हैं और रात्रि के दिन गुनवास (४९) होते हैं। इस प्रकार एक पत्नी में कुल दो सौ और पंतालीस (२४५) दिन होते हैं। इस को चार युगा रात्रि में चार पत्नी की होती है। (कुल दिन की संख्या ९८०) महा सर्तों भद्रा की स्थापना का यंत्र यह है।

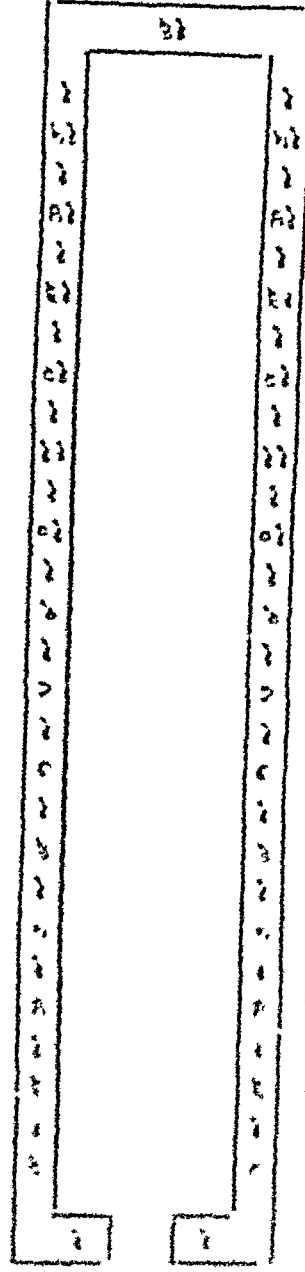
सूत्र—पौन रामरुद्रा नि, नारं भद्रोत्तरपदिमं उवसंपञ्चितानं विहति, तुवालसं रेत्ता मन्गरामगुणियं पागेति, मन्गरामगुणिय पागेत्ता चोदन्स करेति, चोदमसं रेत्ता मन्गरामगुणियं पागेति, मन्गरामगुणियं पागेत्ता मोलसं करेति, मोलसं करेत्ता नन्गरामगुणियं पागेति.

| | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ |

अथ वाचनान्तर में इन तीनों प्रतिमा के लक्षण की गाथाएँ इस प्रकार प्राप्त होती हैं। दो प्रतिमा के अन्दर अर्थात् छोटी सर्वतोभद्रा में और महा सर्वतोभद्रा में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करने का है तथा भद्रोत्तरा नामक तीसरी प्रतिमा में पहिले द्वादश (पाँच उपवास) करने के हैं। उसके बाद अनुक्रम से द्वादश (पाँच उपवास), षोडश (सात उपवास) और विंशति (नव उपवास), ये तीनों प्रतिमा की पहली पंक्ति के अन्तिमके तप हैं। शेष तपश्चर्या में अनुक्रम से अंक स्थापन करने ॥ १ ॥ अब दूसरी, तीसरी वगैरह पंक्ति की स्थापना के लिये कहते हैं:— पहली पंक्ति में जो तीसरा अंक है उसको दूसरी पंक्ति की रचना में पहले रखना। वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में तीन का है और भद्रोत्तरा में सात का है। इसके बाद अनुक्रम से आगे २ के अंक रखने वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में चार के बाद पाँच का है, और भद्रोत्तरा में आठ के बाद नव का अंक है। उसके बाद अन्तिम अंक के बाद जितने खाने रहे हों वे कोठे पहले के एक वगैरह अंकों से पूर्ण कर देने। इस प्रकार करने से सर्वतोभद्रा की दूसरी पंक्ति में अन्तिम पाँच के अंक के बाद एक और दो का अंक आता है, और दूसरी भद्रोत्तरा की दूसरी पंक्ति में पाँच और छ का अंक आता है। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति पूरी होती है। इसी प्रकार ऊपर की अपेक्षा नीचे की पंक्ति करना। ऐसी सब मिलाकर पाँच पंक्ति स्थापन करनी, यह रचना छोटी सर्वतोभद्रा और भद्रोत्तरा प्रतिमा के अन्दर जान लेना चाहिये। इस गाथा का अर्थ उपरोक्त कहे हुए

करेता सञ्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता छब्बीसइमं करेति, छब्बीसइमं करेता सब्जकाम-
 गुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं
 पारेता अट्टापीसं करेति, अट्टापीसं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति,
 चउत्थं करेता मन्वरकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता तीसइमं करेति, तीसइमं करेता सब्जकामगु-
 णियं पारेति, मन्वरकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं
 पारेता र्नीसइमं करेति, र्नीसइमं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति,
 चउत्थं करेता मन्वरकामगुणियं पारेति, सब्जकामगुणियं पारेता चोत्तीसइसं करेति, चोत्तीसइमं करेता सब्ज-
 कामगुणियं पारेति, मन्वरकामगुणियं पारेता चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं पारेति, सब्जका-
 मगुणियं पारेता र्नीसइमं करेति । एवं तहेन ओम्पारेति जाय चउत्थं करेति, चउत्थं करेता सब्जकामगुणियं
 पारेति । एषाण् सानो एषाण् नाला पनस्त य दिससा । चउत्थं निण्डि यरिसा दस य मामा । सेसं तहेव
 तस्य सिद्धि । (मन् ३५)

अर्थ:—इसी प्रकार पितृसेनकृष्णा साध्वी का वर्णन करना । विशेष यह है कि यह मुक्तावली नामक तपश्चर्या ग्रहण कर विहार करने लगी । यह मुक्तावली तपश्चर्या इस प्रकार है:—पहिले एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दो उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके तीन उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चार उपवास करे, चार उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके पाँच उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके छ उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके सात उपवास करे, सात उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके आठ उपवास



भूत-— एवं महानेणकण्ठा पि, नमरं आयंविलवद्दमाणं तवोकम्मं उवसंपञ्जिणाणं विहरति, ते ज्ञान-एव आयंथिलं करोति, एव आयंथिल करोता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता ये आयंथिलाइं करोति, ये आयंथि-
लाइं करोता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता निन्धि आयंथिलाइं करोति, निन्धि आयंथिलाइं करोता चउत्थं करोति,
चउत्थं करोता चनारि आयंथिलाइं करोति, चत्तारि आयंथिलाइं करोता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता पंच
भायंथिलाइं करोति, पच आयंथिलाइं करोता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता छ आयंथिलाइं करोति, छ आयं-
थिलाइं करोता चउत्थं करोति, चउत्थं करोता एवं एकोनगियाए, यद्दीण आयंथिलाइं वद्दंति चउत्थंतय्याइं

जाव आयंबिलसयं करोति, आयंबिलसयं करोत्ता चउत्थं करोति ।

अर्थः— इसी प्रकार महासेनकृष्णा साध्वी का धृतान्त कहना । विशेष यह है कि—आयंबिल वर्धमान नामक तपश्चर्या ग्रहण करके विहार करने लगी । वह इस प्रकार हैः—पहिले एक आयंबिल करे, एक आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके फिर दो आयंबिल करे, दो आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके तीन आयंबिल करे, तीन आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके चार आयंबिल करे, चार आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके पाँच आयंबिल करे, पाँच आयंबिल करके एक उपवास करके छ आयंबिल करे, छ आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके एक प्रकार एक एक उपवास के आंतरे से एक एक आयंबिल को बढ़ाते हुए यावत् सौ आयंबिल करे, सौ आयंबिल करके एक उपवास करे ।

मूल— तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्डमाणं तवोकम्मं चोद्दसेहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरेत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेति, जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरति ।

स्त्री:—उमके बाद उस महामेनहूणा माखी ने आंगविल वर्द्धमान नामक तपस्वी को बौद्ध रूप, तीन महिने और बीस अशोराशी से (आंगविल ६०५० और एक मी उपवास मिलाकर ५१५० दिन पंगत) सूत्र से कहे धनुसार गान्त मन्त्रक प्रकार में काया से यहण किये, गात् आराम कर जहाँ आयें गन्धन बाला माखी भी यहाँ आई। आहर आर्षे वंजनबाला माखी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर बहुत से उपवास गात् १४-संगम में अपनी आत्मा को भावनी हुई विहार करने लगी।

मूल—तए णं मा महानिणकण्हा अजा तेणं आरोलेणं जाव उवसेभेमाणी चिट्ठे । तए णं तीसे मयनिणकण्हाए अजाए अत्तया कयाडं पुच्चरत्तामत्तकाले चिंता जाहा मंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जे पुत्तइ जाव संलेहणा, कालं अणरकंसयमाणी विहरणि ।

स्त्री:—उमके बाद यह महामेनहूणा माखी उस प्रधान तपस्वी द्वारा यात् अतीव २ गोपित होकर रहने लगी। उमके बाद उस महामेनहूणा माखी को मंत्रक मुनि की तरह एक समय रुद्राचित् गत्री के पूर्वभाग और अन्धिम नाम के शीत गौलि मय रात्रिसे विहार उत्पन्न हुआ, यात् स्त्रीय वंदनबाला माखी से उमने पूजा, तए ४२ गात् संश्रयता कर मरने की राजा न करनी हुई रहने लगी।

मूल—तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुत्ताइं सत्तरस वासाइं सामन्नं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरईं जाव तमट्ठं आराहेति चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा ।

अर्थ:— उसके बाद उस महासेनकृष्णा साध्वी ने आर्य चन्दनबाला साध्वी के पास सामायिक वगैरह ग्यारह अंग पढकर सम्पूर्ण सत्तरह वर्ष का चारित्र पालन कर एक महीने की संलेखना कर शरीर को क्षीण किया, साठभक्त का (एक महीना) अनशन कर जिस के लिये चारित्र ग्रहण किया था, यावत् उस मोक्ष का आराधन किया, अन्तिम स्वाच्छोश्वास को पूर्ण कर सिद्ध हुई, बुद्ध हुई और मोक्ष को प्राप्त हुई ।

अब इस आठवें अन्तिम वर्ग में कही हुई काली वगैरह साध्वियों के दीक्षा पर्याय को प्रतिपादन करने के लिये सूत्र की गाथा कहते हैं ।

मूल— अट्ट य वासा आदी एकोत्तरीयाए जाव सत्तरस । एसो खलु परिआओ सेणियभज्जाणं णायव्वो ॥ १ ॥

अर्थः—पत्नीः काली नाथी का साठ वर्षे का चारित्र पर्याय था। उसके बाद एक एक वर्षे यशना यावत् सम्यक् भक्तिसङ्गता का सत्तर वर्षे का चारित्र पर्याय था। इस प्रकार श्रेणिक राजेन्द्र की दश स्त्रियांका दीक्षा पर्याय ज्ञानना।

मूलः—एवं गच्छुं संतु ! समणेणं भगवता महात्तरेणं आदिगरेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंगगच्छनाणं अयमट्ठे पत्तने । अंगं सम्मत्तं । (सू० २६)

अर्थः—इस प्रकार निवार करते दे जन्तु ! अमग भगवान् ज्ञाने तीर्थ की आदि करने वाले यावत् मोक्ष पर्याय पर्यन्त ही महात्तर नामी ने अन्तगच्छना नामक जाडेय अंग का यह अर्थ कहा है। यह आठवा अंग समाप्त हुआ (सू० २६)

मूलः—अंगगच्छनाणं अंगम्म एगो सुयत्तंथो अट्ट वग्गा अट्टसु चं व दिवसेसु उट्ठिमिज्जति, तस्य एत्थमिदियत्तमे इत्थं वन उट्ठेगगा, तडुयवग्गे नेग्ग उट्ठेसगा, चउत्थपंचसवग्गे वन वस उट्ठेसगा. उट्ठवग्गे एत्थं उट्ठेगगा, वल्लमग्गे नेग्ग उट्ठेगगा. गडुमग्गे वन उट्ठेसगा । नेत्ते जहा नायाथम्मकणाणं । (सू० २७)

अर्थ:—अन्तगडदशा नामके इस अंग में एक ही श्रुतस्कंध है। उसके आठ वर्ग हैं और आठ दिनों से कहने में आते हैं। इसमें पहिले और दूसरे वर्ग में दस दस अध्ययन हैं, तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन हैं, चौथे और पांचवें वर्ग में दस दस अध्ययन हैं और छठे वर्ग में सोलह अध्ययन हैं, सातवें वर्ग में तेरह अध्ययन हैं और आठवें वर्ग में दस अध्ययन हैं। शेष अधिकार ज्ञातार्थर्मकथा में कहे अनुसार जान लेना चाहिये। (सू० २७)

। इति अंतगडदशांगसुत्तमष्टमंगं संमत्तं ।

टीकार्थ— इसमें जिसका व्याख्यान विशेष नहीं किया गया हो वह ज्ञातार्थर्मकथा की टीका में से जान लेना चाहिये। इस प्रकार अंतगडदशा सूत्र की यह टीका समाप्त हुई। टीकाकार महाराज अन्त में कहते हैं कि:— अनन्तगमा और पर्याय वाले जिनेश्वर के कह हुए शासन में सिद्धान्तानुसार जो गमनिका (टीका) कहने में आई है। वह दूसरे गमा को प्राप्त होती है इसलिये इस कृति में जो अशुद्धियां रह गई हों वह सब सह्युष्यो को संशोधन करलेना चाहिये। इति शुभम् ।

॥ इति अंतगडदशा नामक आठवां अंग समाप्त ॥

